मौनभैरव

(व्यंग्य संग्रह)

फारू[illegible] [illegible]रीदी

विवेक पब्लिशिंग हाउस
जयपुर

मीनमेख फारूक आफरीदी

प्रथम सस्करण 1998



(राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के
आर्थिक सन्योग से प्रकाशित)

प्रकाशक नरेन्द्र बाहरी
विवेक पब्लिशिग हाऊस,
धामाणी मार्केट, चौडा रास्ता, जयपुर-302 003

शब्द सयोजन टेक्नोक्रेट ऑफसेटर्स
2215, मानकायस्थ का चाक
चादपोल बाजार, जयपुर-302 001 फोन 313652

मूल्य 100 रुपय मात्र

मुद्रक
शीतल प्रिन्टर्स जयपुर

MEENMEKH (Satires in Hindi) FAROOQ AFRIDY

मरहूम वालदैन मोहम्मद अहसान
और फखरुन निसा को
अकीदत के साथ

सृजन के क्षितिज पर

हिन्दी व्यग्य लेखन का इतिहास पुराना है और उसकी तासीर अलग-अलग हैं। यदि किसी व्यग्यकार की तासीर अलग नहीं है तो वह पाठको को प्रभावित नहीं कर पायेगा। एक बात सफल व्यग्यकार में विशेष रूप से होनी चाहिए कि उसका कैनवास व्यापक हो। फारूक आफरीदी राजस्थान के उन व्यग्यकारों में हैं जो थोडे समय म ही साहित्य सृजन के क्षितिज पर अपनी रोशनी फैलाने लगे हैं।

अपने व्यग्यों मे फारूक आफरीदी ने आज की समग्र स्थितियो चाहे वह सामाजिक हो या सास्कृतिक, आर्थिक हो या सरकारी तत्र की, व्यक्ति की हो या समष्टि की अपने हिसाब से उकेरने की चेष्टा की है जो कहीं-कहीं मन को गुदगुदाती है और वैचारिक दृष्टि भी देती है। इनके अधिकतर व्यग्य समकालीन घटनाओ पर हैं, यह उनकी सजगता है। परिवेश को गहनता से प्रस्तुत करते हुए अपने रग के छींटे जरूर मारते हैं जो रूचिकर लगते हैं।

व्यग्यों मे आज की व्यवस्था के प्रति उनमे भयकर आक्रोश है और आक्रोश है उन खोखले व्यक्तियो के प्रति जो मुखौटे लगाये हुए 'महान' बने फिरते हैं। यह कितना अच्छा है कि आज का सृजनकार अपने चर्तुर्दिक यथार्थ के आन्तरिक यथार्थ से परिचित है और उसे लिखते हुए वह अपनी अभिव्यक्ति के तीक्ष्ण प्रहार करता है। फारूक ने अपने को उन सभी स्थितिया मे तादातम्य किया है। अनेक स्थलों मे उनका अनुभव प्रखर लगता है।

भाषा के मामले मे फारूक बहुत सहज हैं। उर्दू और राजस्थानी के शब्दा के प्रयाग ने भाषा को रवानगी दी है पर सवादों में तीखापन लाने के लिए उन्हें और सतर्क होना जरूरी है।

लेखन की सबसे दुरूह विधा की दृष्टि से यह उनका पहला सग्रह है। सृजन तप है और तप एक दीर्घकाल मागता है। फिर भी मैं व्यक्तिगत रूप से आश्वस्त हू कि फारूक मे सृजन के कई द्वीप हैं जो इस पुस्तक म जगह-जगह दृष्टिगत हुए हैं। इस पुस्तक का सम्पूर्ण प्रभाव मुझ पर यही पडा है-

ये गुलाब है होशियार रहना

इनकी पखुरिया मे काटे भी छुपे हैं

बीकानेर

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

अपनी बात

'एक साहित्यिक की डायरी' मे गजानन्द माधव मुक्तिबोध के इस कथन का मैं अपने अनुकूल पाता हू- 'मेरा स्वभाव या सिद्धान्त या प्रवृत्ति कुछ ऐसी है (मेरे ख्याल से जो शायद सही भी है) कि जो व्यक्ति साहित्यिक दुनिया से जितना दूर रहेगा, उसम अच्छा साहित्यिक बनने की सभावना उतनी ही ज्यादा बढ जायेगी। साहित्य के लिए साहित्य से निर्वासन आवश्यक है।' अपन आपको मुक्तिबोध की इसी पगडण्डी का राही मानता हू। और इसलिये मेरे अधिकाश व्यग्य साहित्य की दुनिया से दूर मेरे आस-पास की दुनिया के अधिक निकट हैं।

डॉ शेरजग गर्ग ठीक ही कहते हैं कि सच्चा व्यग्यकार समाज की कुरीतिया को देखता और व्यग्य बाणा से बींधता है। इस प्रकार वह दोष सुधार और सामाजिक चरित्र का परिष्कार करता है। विख्यात व्यग्यकार हरिशकर परसाई के अनुसार व्यग्य का उद्देश्य जीवन से साक्षात्कार करना, जीवन की आलोचना करना, फालतू की बातो और पाखण्डो का पर्दाफाश करना है। एक मत यह भी है कि व्यग्य सम-सामयिकता से जुडा होने के कारण ज्यादा कारगर है। साहित्य का मूल सच सत्यम शिवम् सुन्दरम् है। सर्वकालिकता की नींव मे उसकी देन को कम करके नहीं आका जा सकता। आज व्यग्य विधा अपनी एक स्वतत्र पहचान बना चुकी है। यही कारण है कि लगभग हर पत्र-पत्रिका म व्यग्य रचना क लिए प्रतिष्ठित स्थान है।

ऐसा भी माना जाता है कि जो स्वय पर जितना कसकर व्यग्य कर सके और अपने-आपको माफ न कर सके वह सफल व्यग्यकार है। मैं दावे के साथ यह नहीं कह सकता कि इतनी कुशलता या कुशाग्रता मेरे भीतर मौजूद है। अलबत्ता मैं इस विचार का पक्षधर हू और इसके लिए एक ईमानदार प्रयास के साथ छटपटाहट जरूर रखता हू। व्यग्य लिखते समय मेरे अन्त स्थल में यह बात सदैव उपस्थित रहती है। जब-तब कोई विचार, घटना या परिस्थिति आदमी को असामान्य आचरण के लिए उद्वेलित करती है तो उसकी छटपटाहट और परेशानी भीतर स जरूर झकझारती है।

समाज, धर्म, राजनीति की उदात्त अवधारणाए संस्कृति को समृद्ध बनाती हैं लेकिन इस समृद्धि पर जब कोई चोट होती है तो उस चोट को मैं भी अन्तर्मन में महसूस करता हू। यह वह क्षण होता है जब कलम अनायास चलने लगती है। कलम तब कहती सी प्रतीत होती है कि लिख, समय का साक्ष्य बन और सच को रच। अपराध बोध की बोझिलता से बच। यह कहना बडा मुश्किल है कि उस उद्वेलित क्षण का हर मनचाहा उद्घाटित हो पाया है।

अस्सी के दशक मे देश के ख्यातनाम व्यग्यकार शरद जोशी के साथ जोधपुर सूचना केन्द्र मे मैंने अपने साहित्यिक मित्रो की एक गोष्ठी का आयोजन किया था। शरद जोशी ने तब कहा था-'भाई, व्यग्य लिखा नहीं जाता यह तो भीतर से उपजता है। सवेदना जितनी गहरी होगी, रचना ऊची फसल की भाति लहलहाएगी।' व्यग्य के इस शिखर पुरुष ने कहा था- 'फारूक भाई, तुम कवल लिखते जाओ। उस किसान को देखो जो खेत म उग आई सुनहरी बालियो को अपने हाथो मे सहलाते हुए प्रफुल्लित होता रहता है लेकिन उसे पता नहीं होता कि वह उसमे से कितने दाने पायेगा अथवा पायेगा भी कि नहीं। जब यह किसान वाला भाव तुम्हारे भीतर जाग जायेगा तो भीतर की पीडा से मुक्त हो जाओगे और लिखने का आनद उठाओगे। प्यार और पीडा दोनो का पर्याय बनकर लिखते रहो- लिखते रहो। दुनिया के लिए लिखो। यह मत सोचो कि दुनिया क्या सोचेगी। लोग तो कहेगे ही कुछ भी, कैसा भी।'

व्यग्य शिल्पी लतीफ घोंघी से जब एक साक्षात्कार में पूछा गया कि व्यग्य रचना का क्या औचित्य है तो उनका जवाब था-'व्यग्य-लेखन एक उद्देश्य परक लेखन है। यह विसगतियो, अनाचार, दुराचार, बेईमानी, भ्रष्टाचार, स्वार्थ सिद्धि पाखण्ड आदि के विरुद्ध आम आदमी के मन म अरुचि पैदा कर स्वस्थ मानसिकता के निर्माण के लिए ही लिखा जाता है। व्यग्य लेखक को ईमानदारी से अपने व्यग्य धर्म का पालन करते हुए सतत लेखन बनाए रखना जरूरी है तथा अपने लेखन में सत्कर्म की आस्था रखने के उद्देश्य से ही व्यग्य रचना प्रक्रिया को जारी रखना है। जब तक समाज मे विसगतिया हैं, व्यग्य लेखन की माग बनी रहेगी और व्यग्यकार को अपना व्यग्य धर्म और सामाजिक जिम्मेदारी मे अपनी भागीदारी बनाए रखनी पडेगी।' व्यग्य से मेरा भी यही सरोकार है और इसके औचित्य को लेकर सवाल खडा करने का कोई औचित्य नहीं है।

विचारो के इसी परिदृश्य मे मेरी यह पहली पोथी 'मीनमेख' पाठको को समर्पित है। मुझे तब एक उत्सव जैसी अनुभूति होगी जब सुधि पाठक इसे पढकर अपनी सम्मति से अवगत कराने का किचित कष्ट करेगे। पत्रकारिता के दौर मे दैनिक 'जलते दीप' के कॉलम 'मामूलीराम की डायरी' से व्यग्य यात्रा प्रारभ कर लगभग

दो दशक बाद 'मीनमेख' प्रस्तुत करने का साहस जुटा पाया हू। इस साहस म आदरणीय अक्षय गोजा, हबीब कैफी, शीन काफ निजाम, पूरन सरमा और भाई डॉ यश गोयल का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष योगदान रहा है। अपनी मान्यता के अनुरूप मैं पाता हू कि कोई भी लेखक सघ किसी को लेखक नहीं बनाता बल्कि स्वस्फूर्त गुण ही लेखन के प्रवाह को तीव्र बनाते हैं। इसके बावजूद लेखक मच, प्रगतिशील लेखक सघ, 'रचाव', 'चर्चा', 'शेष' और 'कथा' जैसे मचों ने मेरे भीतर एक साहित्यिक सचेतना जगाने के साथ ही लेखन के प्रति समर्पित भाव का रचाव किया है। मुझे यह भी अहसास है कि व्यग्य का रास्ता चुनने और गहराई तक गोता लगाने की दृष्टि विकसित कर लेने का काम कठिनाइयो से भरा है।

यशस्वी उपन्यासकार, कथा शिल्पी एव व्यग्यकार श्रद्धेय यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने मुझ अकिञ्चन की इस पाण्डुलिपी को अपने दृष्टिपथ से निकाला है। यह मेरे लिए गौरव की बात है। 'मीनमेख' के लिए उनकी अक्षर कृपा मेरे लिए अमूल्य थाती है।

मैं उन सभी सहृदयो का आभारी भी हू जिन्होने समय-समय पर प्रकाशित मेरी विभिन्न व्यग्य रचनाओ को पसद किया और प्रोत्साहित करने के द्वार खुले रखे।

फारूक आफरीदी

42/27/3, स्वर्ण पथ
मानसरोवर, जयपुर-302 020

अनुक्रम

मुकुट नहीं मान का भूखा है यह	1
नौकरी नेकीराम की	4
अपनी छवि सुधारिये जनाब	6
सुपारी से दूर ही रहिए भइया	8
बाबा! फिर लो एक अवतार	10
उखड़ा उखड़ा मुखड़ा	14
रात अभी बाकी है बात अभी बाकी है	17
एक रथ यात्रा और हो जाए	19
एक सूत्रीय कार्यक्रम	21
चल पड़ो चुपचाप	23
कथा सेवा और सुधार की	26
एक और विज्ञान - चम्पोलोजी	28
मान न मान मैं तेरा मेहमान	30
बुद्धू बक्से से बोधिसत्व	34
मेडम राजनीति का जादू टोना	37
बजर बट्टू का अभिनंदन	40
फाइलों की शवयात्रा	44
अतिथि दानवो भव	50
तरकीब सिंह का साहित्य सृजन	53
अभी आप इंतजार कीजिए	57
शंभूजी की सालगिरह	61

राग मुख्यधारा 65
नौ मन तेल कहा से आए 69
अपराध नहीं अपवाद का मामला है 71
अस्थिरता का आनद 73
गालिया घी की नालिया 75
वाह विकास कहिए जनाब 77
खूटी ताण प्रजाति के पुरुष 80
मैं भी दावेदार हू 83
क्या आप सूली पर चढेगे 86
पत्र युद्ध के साक्षी 89
शातता नेताजी निद्रालीन आहे 92
अभिनव कम्पनी 95
दल के अरमा आसुओ मे बह गये 98

मुकुट नहीं मान का भूखा है वह

असली नाम तो उनका सोहनलाल सहीवाला है, लेकिन वे हैं हमारे समाज-शिरामणि। शहर की हर छोटी-मोटी समस्या के प्रति चिंतित होना उनके स्वभाव मे है। उनके अपने शब्दो मे कहें तो 'सोहनलाल सहीवाला जनता और सरकार क बीच का एक सशक्त सेतु है।' यानी नागरिको की समस्याओ को सरकार तक पहुचाने और सरकार द्वारा जनहित में की जाने वाली घोषणाओ को जनता तक पहुचाने मे वे कारगर भूमिका निभाते हैं। बकौल सोहनलाल सहीवाला समाज की सेवा के बिना जीवन निरर्थक है। मनुष्य सृष्टि का श्रेष्ठ प्राणी है। जो मनुष्य अपने लिए जीता है वह निरा पशु है। मनुष्य को अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज, प्रान्त और देश की सेवा करनी चाहिए तभी जीवन की सार्थकता है। यह समाज का उत्तरदायित्व है कि ऐसे नि स्वार्थ समाजसेवी का सम्मान किया जाये ताकि और लोगो को भी प्रेरणा मिले तथा वे समाज सेवा के क्षेत्र में आगे आए। जो समाज प्रतिभाओ का सम्मान करना नहीं जानता, वह समाज मिट जाता है।

गौरतलब यह है कि सोहनलाल की पीडा को अब तक किसी ने नहीं पहचाना। समाज की सेवा म उन्होने अपने जीवन के साठ बसन्त होम कर दिए, लेकिन उनकी सेवाओ का समाज कभी उचित सम्मान नहीं कर पाया। वे कहते हैं कि जिस समाज को दीर्घकालीन सेवाए दे रहे हैं उसने हमारे पौराणिक और परम पूज्य पात्रो से भी सबक नहीं सीखा। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को भी चौदह वर्ष का वनवास ही सही लेकिन बाद मे तो राजपाट मिल गया था। आज ही की बात कर तो पाएगे कि जिन लोगों की टागें कब्र म टग रही थीं,उन्हे राजनीति म चास मिलते ही मुरझाये चेहरे गुलाब के फूल की तरह खिल उठे, गर्दन हिलनी बद हो गई, गाल टमाटर की तरह लाल हो गए। ऐसे लोगो को युवजन बूढे-खूसट कहते थकते नहीं किन्तु सम्मानजनक स्थान पाने के बाद कितने अकड-अकड कर चलने लगते हैं।

बैसाखिया भी बेचारी उनके इतजार म किसी कोने म पडी-पडी सडने लगती हैं। सम्मान की अपनी महिमा होती है, मुरझाया व्यक्तित्व भी दमकने लगता है,

मरियल-सी सूरत मुस्कराने लगती है, मिमियाता-सा मुख मण्डल प्रदीप्त हो उठता है। सम्मान ऐसी चीज है कि मरघट जाने वाली मिट्टी म प्राण फूक दता है। एक बार किसी को सम्मान देकर देखो तो फिर पता चले कि सम्मान पाने वाला व्यक्ति क्या से क्या हो जाता है। सम्मान के मारे गेहू से घुन की तरह चिपकने वाला मनुष्य खुशी के मारे आटे से दुश्मनी करना छोड मदमाता-सा चलता है। उसका चिडचिडापन खिलखिलाहट मे बदल जाता है। गुस्सा काफूर हो जाता है। सच तो यह है कि समाज अगर सोहनलाल सहीवाला को एक बार भी उचित सम्मान दे तो वह अपनी आने वाली सात पीढियो तक को समाज सेवा मे खप जाने का पट्टा लिख कर दे सकता है। लेकिन, समाज उनकी सेवाओ को फूटी आख नहीं देखता तो वह अन्तर्वेदना से न भरे तो और क्या करे।

सोहनलाल सहीवाला की अखबारा के सम्पादको से भी गभीर नाराजगी है। वह उनके समाज सेवा के अभियान म साथ देने की बजाय बाधक बनते जा रह हैं। सोहनलाल को शिकायत है कि वह उनका वक्तव्य बहुत छोटा करके छापते हैं। अखबार भले ही किसी भी मालिक का हो लेकिन उस पर समाज का हक है क्योंकि समाज ही उसका अखबार खरीदता है, समाज की ही उसम खबरे होती हैं, अखबार भी एक सेवा का उपक्रम है और उसम प्रकाशन के लिए दी जाने वाली हर खबर को छापना सपादक की नैतिक जिम्मेदारी है। अखबार मे जब चुने हुए नेताओ विपक्ष के नेताओ, बडे-बडे सेमिनार-सगोष्ठिया म बक-बक करने वाले बयानबाजो के बयान छापे जाते हैं तो सहीवाला की स्याही से उन्हे भला क्या बैर है। सपादकजी को प्रतिदिन सलाम ठोकने, खींसें निपोर कर अभिनन्दन करने के बावजूद उनके वक्तव्य सक्षिप्त समाचार के कॉलम म छपते हैं, जिसको तलाशने के लिए सबेरे माइक्रोस्कोप लेकर बैठना पडता है। क्या सोहनलाल ऐसी गयी गुजरी हस्ती है क्या उनके काम की यही कद्र है, क्या उन्ह वर्षों स प्रतिदिन समाचार लिखने के बाद भी समाचार लिखकर देना नहीं आया ? आखिर क्या बात है कि वे समाचार प त्र म उस यथोचित स्थान नहीं देते। सोहनलाल शहर की गभीर समस्याओ पर कई बार प्रधानमत्री, केन्द्रीय मत्री मुख्यमत्री, गृह मत्री और शासन सचिव, कमिश्नर कलक्टर आदि को ज्ञापन देते रहे हैं। समाज सेवा की खातिर साइकिल पर भरी दुपहरी वे मारे-मारे फिरते हैं और 'प्रेस काफ्रन्स' बुलाकर ब्रीफ करते हैं सारी रामायण सलीके से 'न्यूज फॉम' म टाइप करवाकर उपलब्ध कराते हैं। इसम भी एक-दो समाचार पत्रा के पत्रकारा के अलावा शेष अपनी अनुपस्थिति दर्शाकर उनकी जन सेवा की उपक्षा करते हैं। कई बार ता आलीशान होटल भी बुक किया। लच फिक्स किया माइक लगवाया फोटोग्राफर और टी वी कमरामैन तक को बुलाया लेकिन कोई पत्रकार नहीं

आया। इतनी सारी व्यवस्थाओ के बिल चुकाए और खून का घूट पीकर सोहनलाल सहीवाला चुप रहे। अव जब सबके पास वे पुन सम्पर्क करने गये तो उन्होने खीँसें निपोर दीं और सभी कमावेश यही कहने लगे – 'सहीवालाजी आपने ख्वामखाह इतना कष्ट उठाया, हम तो वसे ही आपका वक्तव्य रोज छापते हैं, लाईय। अब द दीजिये हम देख लगे।' दूसरे दिन अखबार देखा तो वही ढाक के तीन पात। निगोडा न समाचार को नींबू की तरह निचाडकर 'संक्षिप्त समाचार' कॉलम म ही छापा।

खैर छोडो, सोहनलाल के स्वास्थ्य पर इसका क्या प्रभाव पडने वाला ह। सोहनलाल का ता समाज सेवा मे लगे रह ता है। गली मे कुत्ता मर जाये ता नगरपालिका को उसे हटाने के लिए अर्जी दे आए, कहीं पाइप लाइन टूट जाये सार्वजनिक हैण्डपम्प खराब हो जाये, कोई टोंटी गायब हा जाये तो जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग के अभियता को ज्ञापन पकडा आए, कोइ अफसर टू-टा करे तो बडे अफसरा से शिकायत कर आये। एम एल ए, एम पी को तो हर रोज अखबार म भेज जाने वाले वक्तव्य की प्रतिलिपि विला नागा पोस्ट करते हैं। इनम से अधिकाश का 'ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद' की पक्ति वाला तोता रट्टू उत्तर आता है, लेकिन साहनलाल सहीवाला अपना काम जारी रखे हुए है। गभीर समस्या पर तो वे भूख हडताल, धरना आमरण अनशन तक की धमकी दे देते हैं लेकिन जब उन्ह लाग समझाते ह तो वे आदोलन मुल्तवी कर दते हैं। आखिर मनुहार के वे कच्चे जो ठहरे। उनका मानना है कि यह प्रचार-प्रसार का युग है। सरकार की बात जनता और जनता की बात सरकार तक पहुचाने के लिए वक्तव्य ही ब्रह्मास्त्र हे। वक्तव्य देते हैं तो अखबार वाले उन्हे 'पेपर टाइगर' कहते हैं। अब बताइये इसमे पेपर टाइगर वाली क्या बात है। सिर्फ टाइगर ही कह दते तो उनका क्या बिगड जाता।

साहनलाल सहीवाला को समाज से अब यह आशा नहीं कि वह उसका सम्मान करगा लेकिन ज्योति की एक किरण अभी भी उन्ह दिखाई देती ह। यह किरण है सरकार यानी किसी सरकारी अफसर या मत्री को ढोक देकर समाज सवा का सम्मान तो प्राप्त किया ही जा सकता हे। सहीवाला ने इस दिशा मे अब प्रयास तेज करने की ठान ली है। किसी ने कहा भी है – 'किनारे पर बैठे हैं, कभी तो लहर आएगी।' साठोत्तरा पर सम्मान लेकर ही रहेगे। आदमी सम्मान का ही ता भूखा है। सोहनलाल सहीवाला को किसी मुकुट, स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल या प्रशस्ति-पत्र की तलब नही बल्कि वह तो अखबार म सम्मानित होने का समाचार ही छप जाए तो सम्मान मान लग। 'आइ मीन' अखबार म सम्मान दर्ज हो गया ता समझो इतिहास म दर्ज हो गया। 'सासा जब तक आशा'– बस यही अवधारणा इस समाज शिरोमणि को स्फूर्ति दे रही है। ❑

बज जाते हैं। यह चाय पीने का स्टण्डर्ड टाइम है। यह आदत उन्होने राजा-रईसो से सीखी है। चाय पीते-पीते ही देश, समाज और दफ्तर के ऊच-नीच की बात होती है। एक अच्छे शहरी के नाते इन सबकी चिन्ता करना भी तो जरूरी है। इसके बिना तो देश रसातल मे चला जायेगा। इस गभीर चर्चा क चलते पाच बजे का टकारा बजने लगता है। चौकीदार चिल्लाने लगता है- बाबा उठो! कमरे का ताला लगाना है। बस पकडनी है वरना रात बीवी-बच्चों स दूर यहीं पडे-पड तपस्या करनी पडेगी।

इस दफ्तर म नेकीराम अर्दली बनकर आय थे और तरक्की के कई पायदानो पर चढकर आज अफसर के ओहदे तक पहुच गये हैं। नकीराम को याद नहीं कि उन्होने किसी का भला किया हो। कभी किसी का बुरा भी नहीं किया। जब फाइल पर कोई चिडिया ही नहीं बिठाई तो किसी का बुरा कैसे होता! यही उनके लिये सुख की पूजी है। भले और भोले नेकीराम ने वेतन बिल और उपस्थिति पजिका को छोडकर अन्यत्र कहीं भी हस्ताक्षर नहीं किये। नेकीराम न पैंतीस साल पहले जो पैन खरीदा था उसकी स्याही आज भी नहीं सूखी और निब भी नया अटग है। है न नकीराम एक कामयाब नौकरशाह- प्रेरणा लेने लायक। 

अपनी छवि सुधारिये जनाब

मेहता मखतूरमल मेरे मुहल्ले की शाला के मास्टर और मोतबिर आदमी हैं। बदले हुए युग म भी लोग उन्ह बडी इज्जत देते हैं वरना बेचारे मास्टरजी की तो मखौल ही उडाई जाती है आजकल। यही मास्टरजी आज सवेरे-सवेरे मेरी चौखट पर दस्तक देने आये। बडे हताश ओर निराश। ऐसी अवस्था म मैंने उन्हे पहली बार देखा। मुझसे कहने लगे- भइया जी, आप राइटर लोग हो सोसायटी की क्रीम हो और सारी ऊच-नीच समझते हो। जरा यह तो बताओ कि मेरी छवि खराब है क्या? यह सुनकर हसने को जी चाहता था लेकिन मास्टरजी को गभीर पाया तो मुझे तरस आया। मैंने कहा- शक्ल सूरत से तो छवि अच्छी लगती है फिर किसने आपकी छवि पर ग्रहण लगा दिया?

वो स्साला अफसर आज शाला निरीक्षण पर आया था। मुझसे बोला- 'मेहता, अपनी छवि सुधारो।' अफसर की बातचीत से फ्री होकर मैं सीधा बाथरूम भागा। चेहरे को आइने के सामने रखकर पूरा मुआयना किया। बालो को सजा-सवरा पाया। चमेली के तेल की खुशबू आ रही थी। कपडे भी लाड्डी से धुले हाने के कारण चमक रहे थे। मन मे सोचा कि इतना भर होने के बावजूद छवि कैसे खराब हा गयी।

मेहता को मैंने समझाया- मास्टर जी यह तो इस सदी का मुहावरा है। मास्टर जी होकर भी नहीं समझे तो बच्चो को क्या खाक पढाते हो। पहले मेरे दो प्रश्नो का उत्तर दो। ट्यूशन के क्या हाल हैं? मास्टरजी बोले-सुसरे स्कूल मे जितने छोकरे पढने आते हैं उससे कहीं ज्यादा तो मेरे घर पढने आते हैं। मैंने दूसरा प्रश्न किया- इतनी कमाई करते हो तो ऊपर वालो को खुश भी रखते हो कि नहीं? मेहता के मुख का जुगराफिया एकदम बिगड गया और बोला- नहीं, यह ता मैंने कभी सोचा ही नहीं।

मैने भाप लिया कि मेहता की छवि यहीं से खराब हुई। तुरन्त समझाया- बधु, समझदारी से काम लो। अपने अफसर की मुट्ठी गरम करो और देखो कि तुम्हारी छवि निखरती है कि नहीं। मास्टर हो तो दीन-दुनिया की खबर रखा करो भाई। मुट्ठी गरम करने के भी दो तरीके हैं- कैश ओर काइड। जो जचे वो करो। मास्टरजी का

माथा शायद कुछ ज्यादा ही खाली था। मास्टर बिना उदाहरणों के मानने-समझने वाला प्राणी नहीं था।

मैंने उदाहरणों का बस्ता खोला। देखो मेहताजी, पिछले बीस साल से साहित्य अकादमी वाले मुझसे कह रहे हैं कि लिक्खाड़ लट्ठ मत मार बल्कि अपनी छवि सुधार। मैं अगर अपनी छवि सुधार लेता तो चार किताब अब तक छप जातीं, उन पर पुरस्कार मिल जाता और साहित्य शिरोमणि का सम्मान पाता। बस यह छवि ही नहीं सुधार पाया। अब दूसरा उदाहरण ले। अपने मौनी बाबा ने पार्टी और खुद की छवि सुधारने का जोरदार अभियान चलाया था। एक झटके में दिग्गजों को उखाड़कर दरिया में फेंक दिया। मौनी बाबा के ऐसे दुर्दिन आये कि खुद उनकी छवि बिगड़ गई और जिनकी बिगड़ी हुई थी, केसर-पिस्ते का दूध पीकर उन्होंने अपनी छवि सुधार ली। छवि सुधार तो ताकत की खीर है। भुजबल हो या मुट्ठी बल। दोनों हों तो सोने में सुहागा।

अपने विधायक भगदौड़ीलाल को ही देखो। उन्हें छवि सुधारने के लिये डांट पिलाई गई थी। भगदौड़ीलाल ने हाईकमान को एक पेटी पहुंचाई तो उनकी छवि सुधर गई। इधर उनकी छवि सुधरी और उधर काबीना मंत्री की कुर्सी मिली। पासा ऐसा पलटा कि उलटा हाईकमान मुख्यमंत्री को कह रहा है कि अपनी छवि सुधार लो वरना हमारे पास तुम्हारा रिप्लेसमेंट तैयार है। एक उदाहरण और लो। पिछले दिनों अफसर-ए-आला ने हमारे हैड साहब को बुलाकर फटकारा। उसका लब्बो-लुबाब भी यही था कि मिस्टर अपनी छवि सुधारो वरना ऐसी जगह पटक दिये जाओगे कि लोग कहेंगे इस सड़ान्ध से दूर रहो।

हमने कहा- मेहताजी सुनो, कल को तुम्हारा कहीं ट्रांसफर हो गया तो यार लोग यही कहेंगे न कि उसकी तो छवि ही खराब थी। मास्टरजी ने मेरे उदाहरणों को गीता के प्रवचन की तरह सुना और नमस्ते करके चला गया। बाद में पता चला कि उनकी छवि सुधर गई। उसके अफसर ने निरीक्षण प्रतिवेदन में लिखा- 'मिस्टर मेहता इज एन इंटलिजेंट एण्ड आनेस्ट टीचर ऑफ दी सोसायटी।' ☐

सुपारी से दूर ही रहिये भइया

आजकल सुपारी के व्यापारी परेशान हाल हैं। उनकी सुपारी का धधा चौपट हो रहा है। लोग वार-त्यौहार उनके यहा से पहले इतनी सुपारी खरीदते थे कि सुपारी के भाव आसमान छूने लगे थे लेकिन अब पता नहीं सुपारी को किसकी नजर लगी कि सुपारी गोदाम म पडी सड रही है और कोई आये भाव भी खरीदने नहीं आता। हमने अपने पडोसी सेठ सतूमल को एक दिन यू ही चलते-चलत पूछ लिया कि भई, चिकनी सुपारी है क्या? वह गरीब सकपकाया। बोला—भाई साहब, क्या मजाक करते हो! हम बोले—नहीं भाई, हम क्यो मजाक करने लगे। हम सचमुच चिकनी सुपारी चाहिये। हमारी बेगम इसकी बडी शौकीन है। वह तो फुरसत मिलते ही सुपारी चबाने लगती है।

सेठ सतूमल ने अपनी व्यथा कथा सुनाते हुए कहा—भाई साहब, आजकल लोग सुपारी चबाने नहीं किसी को 'उडाने' के लिये लेते हैं। इसलिये हमने तो इसका व्यापार करना ही छोड दिया है। अब गुटखा खैनी और लौंग का धधा शुरू कर दिया है। वह हमें सलाह देने लगा कि आप भी सुपारी का इस्तेमाल करना छोड दे वरना कभी लेने के देने पड जायगे। घर मे सुपारी रखना छोड दे अन्यथा कोई सिरफिरा आपसे सुपारी लेकर आपकी ही जान के पीछे पड जायेगा। आपके घर मे बहू-बेटिया हैं तो जवाई भाई भी हागे, कभी जवाई ने आपकी बेटी को मौत के घाट उतारने की सुपारी ले ली तो बेटी से हाथ धो बैठोगे और जिन्दगी पर रोते-रींकते रहोगे।

हमारे मन म भी खटका हुआ। आये दिन अखबारा मे भी ऐसी खबरे छपती रहती हैं। दाऊद के आदमिया ने मुम्बई को उडाने की सुपारी ली थी। मानव बम बनी एक देवी ने राजीव गाधी को उडाने की सुपारी ली थी। इदिराजी को भी सुपारी लेकर गोलियो से भूना गया था। कभी खैरनार को उडाने की सुपारी लेने वाला चर्चा में रहता है। यह सुपारी क्या हुई किसी की मौत का परवाना हो गया। अमीर लोग आये दिन सुपारी देकर कभी अपने करोडपति ससुर को तो कभी अपनी बीवी की सम्पत्ति हडपने

क लिय किसी का सुपारी देते हैं। कभी कोई नेता अपने हाईकमान का धराशायी करने के लिये सुपारी देता है तो कभी काई अभिनेता अपने विराधी का मुह हमेशा के लिये बद करने के लिये किसी को सुपारी दता है।

भई, हम ता अपने घर आये मेहमानो की सवा चाकरी के बाद उन्हे विदाई देते समय इलायची-सुपारी ऑफर करते हैं। एक दिन बेगम की एक सहेली ने भी हमे याद दिलाया था कि यह इलायची-सुपारी ऑफर करना बद करो। कहीं किसी ने आपको उडाने की सुपारी ले ली तो भरी जवानी मे उसकी एक सहेली विधवा हो जायेगी। पहले तो हमे यह सब एक मजाक लगा लेकिन मतूमल से बात करने के बाद अब वास्तव मे डर लगने लगा है। भाड म जाय यह सुपारी। अब हम भूलकर भी इसे घर मे नहीं रखेगे। मान लो हमने भी कभी गलती से सुपारी ले ली तो सिर पर खून सवार हो जायेगा। कहते हैं जो सुपारी ले लेता है वह खून करने के बाद ही राहत की सास लेता है। हमने तो पान भी अब बिना सुपारी का खाना शुरू कर दिया है।

नौकरी करने से पहले हमने सोचा था कि कोई धधा नहीं मिला ता सुपारी ही बेच लेगे। सुपारी की शौकीन खूबसूरत महिलाओ के चेहरे तो रोजाना देखने को मिलेंगे लेकिन अब तो सुपारी का नाम सुनते ही जिस्म मे कपकपी छूट जाती है। काइ अजनबी आदमी मिलता है तो यही लगता है कि कहीं वह हमे उडाने की सुपारी लेकर तो नहीं आया है! सेठ सतूमल और उसके जैसे दूसरे व्यापारी रोते हैं तो गलत नहीं है। आप भी डर गये न सुपारी से। हा, भई! दूर ही रहिये इस सुपारी से और सुपारी लेने वालो से। इसी में अपुन का भला है। 

बाबा! फिर लो एक अवतार

महात्मा गाधी की जय! बच्चे समवेत स्वर मे बोल उठे—'*महात्मा गाधी की जय!*' मुसद्दीलाल उधर से ही गुजर रहे थे। गाधीजी की जय-जयकार सुनकर वे ठिठक गये। एक बार वही स्वर फिर गूजा। जयघोष से मुसद्दीलाल भावुक हो गये। मुसद्दीलाल स्वतत्रता सेनानी थे। आजादी की जग मे इकलाबी तेवर दिखाने वाले मुसद्दीलाल 50 वर्ष पहले एक अदद साइकिल के भी मालिक नहीं थे लेकिन आज उनके बेटे-पाते समृद्धि के शिखर पर हैं। मारुती वन थाउजेड कार में घूमते हैं मुसद्दी के त्याग और बलिदान की बदोलत। त्याग ही समझो क्याकि बलिदान ही दिया होता तो मुसद्दी आज घूमता-फिरता कैसे नजर आता।

मुसद्दीलाल को सवेरे-सवेरे पैदल सैर करने की आदत हे। अपनी सेहत का वे खूब ख्याल रखते हैं। लोग तो यही कहते हैं कि अपनी अच्छी सेहत स ही उन्हाने अपन परिवार की आर्थिक सेहत को सुदृढ आधार प्रदान किया। अपनी सोच को जमाने के हिसाब से ढाला और समृद्धि की दहलीज पर कदम बढाकर परिवार को पाला। सवेरे-सवेरे सैर करने की मेरी भी आदत है। यह आदत कब पडी इसकी तो बस एक धुधली-सी याद हे। बरसो पहले जब मैं एक प्राइवेट फेक्टरी मे मजदूर था तब सेठ को क्षय रोग न घेर लिया था। घर-परिवार के सारे लोग उनसे कन्नी काटते थे। किसी डाक्टर ने उन्हे सलाह दी थी कि दवा खाओ लेकिन सुबह-सुबह थोडी सैर कर आओ तो तबियत जल्दी काबू आ जायगी। सेठ ने तागे का इतजाम किया और मुझे बुलाकर हुक्म दिया—'*मियाजी, तुम मुझे सवेरे-सवेरे जरा सेर करा दिया करो।*' मैं ठहरा उनका ताबेदार। इकार करने की जुर्रत तो कर ही नहीं सकता था। बस ऐसे ही यह बदा भी सैर करने का आदी हो गया। मुसद्दीलाल से मेरी जान पहचान इतनी ही है कि हम दोनो सैरिये हैं। मुझे मुसद्दीलाल इसलिये भी अच्छे लगते है कि उन्होंने स्वतत्रता का इतिहास जीया है। आजादी की त्रासदी का बखान वे रोचक और रोमाचक ढग से करते हैं और यह मेरी दिलचस्पी का विषय है।

सैर क दौरान आते देख मुसद्दीलाल न हाथ हिलाकर मेरा अभिवादन किया।

प्रत्युत्तर मे मैंने भी हाथ हिलाया और हम साथ-साथ सैर करने लगे। वैसे वे बहुत बातूनी है लेकिन आज उनके श्रीमुख से कोई बोल नहीं फूट रहे थे। मैंने कुरेदा—'मुसद्दीलाल जी, आज सवेरे-सवेरे किस सोच म डूबे हो?' इतना सुनते ही वे फूट पडे—'बधु, मैं क्यो डूबने लगा, डूबेगा तो यह देश । मासूम बच्चा को गाधी जयन्ती पर भूखा-प्यासा गली-मौहल्ला मे दोडाया जायेगा। क्या खाकर दौडगे बच्चे। गाधीजी के नारे लगाते-लगात कुछ हाफ जायगे, कुछ विलखगे तो कुछ मरणासन्न हो जायेगे। यह सरासर अन्याय है यार। गाधीजी से इतना ही प्यार है तो अध्यापका की ही रैली निकलवा दो। ये मास्टर खा-खा कर मोटे हो रहे हैं। नेतागिरी कर रहे हैं। किसी भी नेता की पुण्य तिथि हो या जयन्ती लेकिन कहर बच्चा पर ही बरपा होता है।'

'ऐसी बात नहीं है मुसद्दीलाल जी, राष्ट्रपिता का स्मरण और उनके प्रति बच्चो मे सम्मान की भावना जगाना इस तरह क आयोजनो का मकसद होता है। आप तो आजादी के दीवाने रहे हैं। आप जरा नजरिया बदलकर सोचेगे तो मेरी बात स सहमत होगे।' मैंने समझाने के अदाज मे कहा।

मुसद्दीलाल जी आसानी से सहमत होने वाले नहीं थे। वे अध्यापक भी रह चुके हैं। हो गये शुरू कहने लगे—'बधु, भूल जाओ गाधी को। आजकल अपने दूसरे गाल पर कौन चाटा खाता है। अहिसा की बात करो तो लोग लाठी, तलवार और पिस्तौल से वार करते हैं। गाधी को अपना आदर्श बनाने वाले भूखो मरते हैं कोने म अकेले पडे गुमनामी की जिन्दगी जीने को विवश किये जाते हे। पिछडे कहलाते हैं। दुनिया चन्द्रमा पर पहुच गयी है और हमारी मानसिकता अभी भी दकियानूसी हे। छोडा पुरानी बात और जमाने के साथ चलो।'

मैं उनकी बात सुनकर दग रह गया। फिर विचार आया कि यह मुसद्दीलाल सन् 42 के आदोलन का योद्धा नहीं बल्कि नये युग का गोधा है। उनके अनमोल वचन सुनकर इच्छा जाग्रत हुई कि वे कुछ और खुलासा कर। मेरी भावना को भापते हुए वे बोलने लग—'मेरे बच्चो को देखो, वे आज करोडों म खल रहे हैं। पक्के किराड हो गये हे। गैस एजेन्सी पेट्रोल पम्प सिनेमाघर शो-रूम, कपडा मिले और न जाने कितने धधे हैं उनके पास। मैं कुटीर उद्योग की बात करता हू तो हू-हू करते हैं। मेरे पीठ पीछे मुझे सठियाया हुआ करार देते हैं। मे कहता हू भ्रष्टाचार की नींव पर खडी इमारते ढह जायगी तो कहते हैं कि आजकल भ्रष्टाचार का नाम ही नहीं। जिसे आप भ्रष्टाचार कहते हैं उसका नाम तो शिष्टाचार हो गया है। कोई धधा करना है तो मुनाफा भी देखना पडता है। गैस की टकिया ब्लैक म बेचना पेट्रोल मे मिट्टी का तेल मिलाना, सिनेमा क टिकटो का ब्लैक और कपडे की क्वालिटी में थोडी बहुत ऊच नीच तो चलेगी

ही। बच्चा के रहने के लिये कोठिया और चलाने के लिये गाडियो की व्यवस्था की जाती है तो इसम गुनाह थोडे ही है। स्टेटस के लिये कुछ तो करना ही पडता है।

गुड होगा तो चींटिया आयेगी। बच्चा के पास पैसा है तो दान-दक्षिणा करेगे ही। सन्त से सन्तरी तक चौखट पर आते हैं। जन साधारण की दशा तो किसी भी युग म नहा सुधरी। यह सुधरी है न सुधरगी। मर बच्चा न अपन पुरुपाथ स सब कुछ किया है। जन साधारण को कोई रोकता तो नहीं है। कर पुरुपार्थ और कमायें धन, कौन हाथ बाधता है। जन साधारण हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे तो कोई क्या कर सकता है। हाथ हिलाये तो उसका धन भी स्विस बैंक मे जमा हो सकता है। इसमे गाधी बाबा क्या करेगा।

मुसद्दीलाल क उच्च विचार सुनकर हम अपने सादगी भर जीवन से एक बारगी घृणा होने लगी लेकिन हमने अपने आपको सभाला। बोला—'मुसद्दीलाल जी आपका फर्ज बनता है कि अपने बच्चो को गाधीजी का जीवन दर्शन अपनाने के लिए प्रेरित करे। ऐसा नहीं किया गया तो हम अपनी जडे खुद ही खोद लेंगे। आज तो पाश्चात्य सस्कृति अपनाने वाले लोग भी गाधीजी के जीवन दर्शन को अगीकार करने लगे हैं।'

वे पलटकर बोले—'यह अच्छी बात है कि विदेशी लोग गाधी सस्कृति अपनाये और हम पाश्चात्य सस्कृति। इसी से विश्व बधुत्व बढेगा। आप जरा इधर नजर दौडाइये कि हमारे यहा गाधीजी की बुनियादी तालीम की तरफ कितना अधिक ध्यान दिया जा रहा है। देश को सम्पूर्ण साक्षर करने का सकल्प लिया जा चुका है। सब निरक्षर अगूठो मे कलम थमा दी जायेंगी। इससे एक बडा फायदा तो यह होगा कि साक्षरता का ढोल हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पीट सकगे। फिर लोगो मे इतनी तमीज तो आयेगी ही कि वे रेल या बस का टिकट खरीदने से लेकर उसम सफर करने तक की प्रक्रिया म सलीके से 'क्यू' मे खडे होना सीख सकेगे। इसके अलावा राशन की लाइन, बिजली-पानी के बिल जमा कराने की लाइन म शातिपूर्वक खडे होना तो सीख लेगे। बुनियादी तालीम के अभाव मे मूर्खों की भीड ख्वामखाह अफरा-तफरी मचाती है।'

'तो यह भी बता दीजिये कि जन कल्याण की दृष्टि से गाधीजी के विचारो को हम किस सीमा तक अगीकार कर ?' मैंने प्रश्न किया।

मुसद्दीलाल ने विचारक मुद्रा म कहना शुरू किया—'गाधीजी कुटीर उद्योग के पक्षधर थे। आज घर-घर शराब की कच्ची भट्टिया कच्ची बस्तियो मे मौजूद हैं। इसने कुटीर उद्योग का रूप ले रखा है। चुनाव के दौरान अग्रेजी शराब की बोतल बाटने की बजाय नोटो की गड्डी पकडा दो। शराब अपन आप जरुरतमदो तक पहुच जाती है और उसका नशा मतपत्र पर मुहर लगाने तक बना रहता है। गाधीजी क प्रदेश मे

अगर शराब नहीं बिकती तो क्या हुआ, अन्य जगहो पर तो खुले आम देशी और अग्रेजी शराब के ठेके नीलाम हो रहे हैं। दिन दूनी और रात चौगुनी चादी कूटी जा रही है। सरकार का भी क्या कसूर है! गाधीजी के सारे विचार मानने लगे तो विकास के लिये धन कहा से आये। विकास और विचार दोना मे से किसे प्राथमिकता दे—ये तो सोचना ही पडेगा वरना देश चलेगा कैसे।

अब रही बात गरीबी दूर करने की तो गरीबी तो गरीबी बल्कि गरीबो तक को मिटाने के लिये कमर कस रखी है। महगाई इतनी बढा दी गई है कि गरीब का जीना मुहाल हो गया है। मजबूत रीढ का गरीब ही जिन्दा रहेगा। जो बच जायेगे उनके लिये कल्याणकारी योजनाए बनी हुई हैं। कर्ज लो और आत्मनिर्भर बनो। अब कर्ज लेकर घी पी जाओगे, दूसरी दुल्हन ले आओगे या माता-पिता का श्राद्ध करोगे तो उसमे किसी का क्या दोष! कर्ज से गरीब अपनी गरीबी दूर कर ले या खुद को मिटा ले। यह सोचना गरीब का काम है—गाधीजी उन्हे बताने के लिये परलोक से तो आने से रहे।

मुसद्दी ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा—'गाधीजी कहते थे कि मितव्ययी बनो। मूर्ख जनता बचत तो करती नहीं और चिल्ल-पौं मचाती है। गाधीजी को अपना आदर्श बना ले तो सुख की नींद सो सकती है। माना कि जनता गाधीजी की तरह नगे बदन नहीं रह सकती लेकिन रेडीमेड गारमेट की सुविधा तो ले सकती है। इससे न कपडा खरीदने का झझट न दर्जी के आगे मिमियाने की जरूरत। गाव-गाव अब सिले-सिलाये वस्त्रो के ठेले लगते हैं। सब्जी के भाव कपडे बिकते हैं। गरीब का तो उद्धार ही कर दिया गया है लेकिन गरीब है कि भाग की टेर मे रहता है। अब अगर कोई गरीब यह सोच रहा है कि कोई दूसरा गाधी आयेगा या अवतार लेगा तो करो इतजार।'

गाधीजी के जीवन दर्शन की ऐसी व्याख्या सुनकर मैं मन ही मन मुसद्दीलाल का मुरीद बनने की सोचने लगा। इसी बीच कोई फटेहाल बदा मेरे पास आया और कान मे कहने लगा—'बाबा फिर लेगा अवतार।' ❑

उखड़ा-उखड़ा मुखड़ा

बाबू इतवारीलाल का मुखडा आज उखडा-उखडा दिखा। अपने सहकर्मियों को खुश कर देने की कला मे माहिर इतवारी आज जब से दफ्तर आया है तब से उसने न किसी फाइल पर चिडिया बिठाई और न ही उसकी रजी तक झाडी। बस बीडी पर बीडी फूके जा रहा था। एक घण्टे में उसने तारा नाखूनी बीडी का आधा बडल फूक डाला। इसके धुए से सारे दफ्तर मे गध फैल गयी। हमें महसूस हुआ कि बाबू इतवारीलाल आज किसी मुसीबत मे है। उसका दुखडा जान लेने की गरज से हम अपनी सीट से उठकर ठीक उसके सामने पडी कुर्सी पर जा बैठे।

कुर्सी के चरमराने के साथ ही इतवारी बडबडाने लगा—'यार, आखिर यह कब तक चलेगा कि इधर एक कर्मचारी जिसके सिर पर छ -छ बच्चे, पिता का श्राद्ध का कर्ज, मकान किराया, बिजली-पानी के बिल बच्चों के स्कूल की भारी फीसें चींचडे की तरह चिपकी हों और ऊपर से हर साल एक वेतन आयकर के बट्टे खाते में कहा से डाल दे! यार यह तो सरासर जुर्म है हम पर। गरीब की जोरू आखिर कब तक सबकी भाभी बनी रहेगी!'

इतवारी की बात मे कडवाहट भरी थी। उसके तमतमाते चेहरे की रगत से अनुमान लगाया जा सकता था कि वह कभी मनमोहिनी तो कभी चिदम्बरी नक्षत्र की वक्री छाया पर प्रहार करना चाहता था। उसने मुट्ठिया भींच लीं। यह हालत देखकर हमारे मन में उसका दुख बाटने की इच्छा जाग्रत हुई।

हमने कहा—'भई इतवारी, तुम्हे तो इस बात पर फख्र होना चाहिय कि तुम आयकर दाता हो गये। 'दाता' तो विशिष्ट श्रेणी में आते हैं। इस देश मे जहा करोडों लोग गरीबी की सीमा रेखा के नीचे जीवन यापन करते हो वहा तुम देखते ही देखते एक बडे बाबू होते हुए बडे रईसो की श्रेणी में खडे हो गये।

हमारी बात सुनकर इतवारी को जहा खुश होना चाहिये था वह उल्टा आग बबूला हो गया। बीडी को जोर से अपनी मेज पर बुझाते हुए जोर से चिल्लाया—'यार, इधर

तो सारी अर्थव्यवस्था चौपट हो रही है और तुम मेरी मजाक के गुब्बारे उडा रहे हो। तुम्हे शर्म आनी चाहिये। तुम लोग मेरी मदद नहीं कर सकते तो कम से कम अपनी बत्तीसी पर एक बडा ताला अवश्य लगा सकते हो।'

हमने इतवारी से कहा कि ख्वामखाह चीखो मत। हम तो तुम्हारी मदद करना चाहते हैं। हमारे इतना कहने पर इतवारी थोडा ढीला पडा। अब हम अकड गये। हम उठ खडे हुए तो उसने हाथ पकडकर बिठाने की कोशिश की। अब हम अकड कर अमचूर हो गये। इतवारी ने लाख मित्रतें कीं लेकिन हम नहीं बैठे। हमारी अकड बिल्कुल वैसी ही थी जैसे कोई निर्दलीय प्रत्याशी अधिकृत उम्मीदवार की मुद्रा मे राक्षस बनकर बैठ जाये और 'रिटायर' होने से भी इन्कार कर दे।

सारा दफ्तर जानता है कि हम फार्मूलेबाज हैं। हमारे यहा भी किसी ज्योतिपी से कम भीड नहीं लगती।

'भाई लोगो। क्यों दोनो सूखे तने की तरह तन रहे हो? नौकरीदार आदमी की पीठ मे रीढ की हड्डी नहीं होती। हम लोग दफ्तर में 'योर फैदफुली' या 'योर सिंसियरली' और घर में 'शेख चिल्ली' होते हैं। दिन भर हुकम अदूली मे खडे रहते-रहते हमारी प्रतिष्ठा घास चरने चली जाती है। हम किस बूते पर अपनी मूछो को ताव देते हैं जी।' रमेश बाबू और जमादार रामदीन एक साथ बरसे।

इतवारी तो पहले ही आत्मसमर्पण कर चुका था। बेचारगी से बोला—'भई मैं अपनी जगह बैठा अपना कलेजा फूकते सोच रहा था कि मार्च का महीना सिर पर आ गया है। आयकर से निपटने के लिये कुछ जुगत बिठानी पडेगी। मेरे सारे कैल्कुलेशन्स फैल हो रहे हैं। दस हजार रुपये की बचत करो या दो हजार रुपये वेतन कर राक्षस को चटाओ। इधर कट-कटा कर तीन हजार रुपल्ली तो कुल मिलती है। वेतन की इस तग चादर को ओढो तो कभी पैर नगे और कभी मुह खुला। किराने वाले का कोडा और मकान मालिक का मुक्का हर माह चेहरा बिगाड देता है। ऊपर से बीवी की कान खिचाई। यह सब तो तब है जब छह बच्चे हो जाने के बावजूद बीवी को शादी की हर सालगिरह पर चक्कर घिन्नी बनाये हुए हू। सैर-सपाटे के नाम पर तो ऐसी बिजली गिरी है कि सब्जी मडी का सफर ही 'अराउण्ड द वर्ल्ड' लगता है। एक बार भागवान ने हवाई जहाज मे सफर करने की फरमाइश कर दी थी तो हमने ऐसे हवाई किले बनाये कि आज तक उसकी उडान भर-भरकर मुझे धिकार रही है। करू भी क्या, अगर झासा पट्टी नहीं दू तो घर की गाडी पींदे बैठ जाये। इधर यह आयकर हर साल छाती छीलने चला आता है।

रगलाल को रहम आ गया। बोला—'इतवारी हम तेरी मुसीबत को जड से काट देगे लेकिन पहले कुछ गरमा-गरम हो जाये। अपुन के यहा तेईस आदमियो का स्टाफ

है। बॉस और चपरासियों को छाट दो तो बचे चीस। हम तुम्हे सौ-सौ रुपये उधार दे देते हैं। दो हजार रुपये आयकर में जमा करा दो। घर पर वेतन पूरा ले जाओ। तुम भी खुश और बीवी-बच्चे भी खुश। हर महीने लॉटरी निकाल लेंगे और जिसके नाम से पर्ची निकलेगी उसे सौ रुपये देते जाओ। ये तो सारे मुल्क की समस्या है। जिनावर जूण मे जन्म लेते तो इससे जरूर बच जाते। अब तो बस, घर जाओ और सोने से पहले चिदम्बरी नक्षत्र का तावीज सामने रखकर उसकी पूजा करो ताकि कटक मिटे। वेतन आयोग ने आयकर में छूट की सिफारिश की है। सिफारिश पर ही आस टिकी है। कहा भी गया है कि आशा अमर धन है।

रंगलाल की बात सुनकर इतवारी का चेहरा खुशी के मारे खिल उठा। आव देखा न ताव बीडी का बण्डल उठाया और अपने पैरो तले रौंद दिया जैसे कोई गढ जीत लिया हो। इतने में राधे की होटल से रामदीन कॉफी, समोसे और स्वीट पीस ले आया। सभी ने लुत्फ लेकर माल उडाया। इतवारी को ढाई सौ रुपये का बिल थमाया तो बेचारे का सिर चकराया पर मरता क्या नहीं करता! मित्रो पर भरोसा जमाया। उसके मन मे धुकधुकी होने लगी कि कहीं भरोसे की भैंस पानी मे न बैठ जाये। आखे मिच गई जैसे कबूतर के सामने बिल्ली आ गई हो। □

रात अभी बाकी है–बात अभी बाकी है

एक पुरानी कहावत है– 'सूर्य अस्त और मजदूर मस्त।' यह कहावत भारत जैसे महान देश के लिये ही लागू हो सकती है क्योकि यहा सूर्योदय और सूर्यास्त दोनो होते हैं। कई देशो में यह कहावत इसलिये अप्रासगिक या बेमानी है कि वहा सूरज कभी नहीं डूबता। और हा वहा आदमी का वजूद भी जिदा रहता है। वहा का इसान आजादी और गुलामी दोनो मे फर्क करना भी खूब जानता है बल्कि दुनिया के लोगो के लिये वह इसकी अलग–अलग परिभाषाए गढता है।

यूरोपीय मुल्कों मे लोग अपने कर्णधार को तख्त और ताज अपनी मर्जी से देते हैं और नाराज हो जाये तो छीन भी लेते हैं। वहा कर्णधारो के कान जनमत पर लगे रहते हैं और हमारे कर्णधार चुने जाने के बाद अपने कान तिजोरी मे कैद करके सुख की नींद सोते हैं। उन्हे फिर कुछ भी सुनाई नहीं देता। यहा सभी मस्त रहते हैं। मजदूर हो या किसान, कर्णधार को कुर्सी सौंपकर उसे मस्त रहने की छूट देने के साथ खुद भी मस्त हो पडे रहते हैं। यहा मजदूर सुबह जब रोजी–रोटी की तलाश मे निकलता है और शाम तक कोई जुगाड कर लेता है तो दुनिया का बेताज बादशाह बन जाता है। हमारा कर्णधार एक बार कुर्सी से चिपक जाये तो सात पीढियो का जुगाड बिठा कर ही सतोष की सास लेता है, वरना भूखे भेडिये की तरह बिलखता–बिलबिलाता दिखाई पडता है। हमारा कर्णधार अपनी जनता को सुख के सुरगी सपने दिखाता हैऔर खुद पीढी–दर–पीढी अपने उत्तराधिकारियो के राज्याभिषेक के लिये मुफ्त का चदन घिसता रहता है।

धृतराष्ट्र और कुम्भकरण से हमारा पुराना नाता है। सत्ता मे बैठे लोग हो या सत्ता सौंपने वाले लोग, दोनो मे इनके चरित्र मुखरित होते हैं। फर्क सिर्फ इतना ही है कि सत्ता मे बैठे लोग कुर्सी पर बैठते ही दिमाग की खिडकियों का रुख मोड लेते हैं और सत्ता सौंपने वाले लोग लाचारगी और लापरवाही की चादर लपेटकर सोये रहते हैं। कर्णधारो को अपनी आखों पर पट्टी बाधकर देश की दुर्दशा पर आसू ढलकाना और जन भावनाओं का सैलाब उमडाकर अपना उल्लू सीधा करना खूब आता है। वे बाकायदा

इसकी रिहर्सल करके सत्ता बाजार में आते हैं। अपनी आखों पर पट्टी बाधकर भावना में बहते रहना, बार-बार धोखा खाते रहना, माफियाओं के हत्थे चढना, फौरी लाभ के लिये दलालों को सत्ता सौंप देना या गफलत में रहना यहा की जनता की पुरानी आदत है। *प्रजा चाहे राम राज्य की हो या आज की वेशभूषा के अलावा कुछ भी नहीं बदला है।*

कभी मदिर-मस्जिद, कभी मडल-कमडल तो कभी गैट-सेट, कभी तोप-तमचा तो कभी हवाला-प्रतिभूति घोटाला की प्रत्यचा चढाकर मुल्क को खेल का मैदान बना देने के बावजूद भला आदमी चुप है। खिलाडियों ने भी अन्तर्राष्ट्रीय मच पर कभी नाम नहीं कमाया तो देश के कर्णधार क्या नाम रोशन करेंगे इस मुल्क का। कुर्सी मिलने के बाद ये कुर्सी के पाये इतने ऊचे कर लते हैं कि शोषित-पीडित जनता की आवाज ऊची सुनाई देती है बल्कि अधिकाश बार तो बिल्कुल सुनाई नहीं देती।

मुल्क के कर्णधारो ने पिछले पाच दशकों मे भ्रष्टाचार का लबादा ओढ लिया है ताकि नैतिकता को शर्म महसूस न हो। *सिर तो हमारा शर्म से तब भी नहीं झुकता* जब हम रोज सवेरे माताओ और बहनो के साथ बलात्कार की खबरे पढते हैं, भूख, गरीबी और तिरस्कार के बावजूद इलेक्ट्रोनिक मीडिया हमारे मायूस चेहरो को रग-बिरगी मुस्कान से भरने के लिये अर्द्धनग्न नारियो से साक्षात्कार कराता हुआ हमारी सस्कृति की धूल-ध्वजा उडाता है। यह सब हमारे कर्णधारो की देन है जो गरीब मुल्क पर अमीरी की चकाचौंध चस्पा करने की बेइन्तहा मेहरबानिया कर रहा है। इस पर भी हम हैं कि पागलो की तरह सस्कति को अक्षुण्ण बनाये रखने की रट लगाये रहते हैं।

यह फख्र की बात है कि अभी हालात इस कद्र बेकाबू नहीं हुए हैं कि अपने आपसे सवाल पूछने की हमारी हिम्मत चुक जाये। अभी मजबूरियो और मुसीबतों का भाडा इतना भरा नहीं कि चौराहे पर फूट सके। बहुत कुछ बाकी है अभी। अभी तो सत्ता ने सेवा का त्याग किया है, आखो ने शर्म करना छोडा है, खून ने खून से बगावत करना सीखा है, बेटो ने मा के सीने मे गोली दागना सीखा है। अभी तो बहुत कुछ बाकी है। कुछ बीसवीं सदी की पूछ पर बैठकर देखना है तो कुछ इक्कीसवीं सदी के मुहाने पर खडे हो कर ज्वालामुखी मे *झुलसते हुए देखना है।*

किसी ने ठीक ही तो कहा है –

रात अभी बाकी है,
बात अभी बाकी है।



एक रथ यात्रा और हो जाये

अपुन भी देशव्यापी रथ यात्रा पर जाने का एक प्लान बना रह हैं। रथ यात्रा देश की एकता और अखण्डता के लिये निहायत जरूरी है। रथ यात्रा से देश की भोली- भाली जनता थोडा चतुराई सीखती है, उसकी अक्ल में इजाफा होता है, उसकी चेतना जागती है और नींद में सोई आखें खुलती हैं। कुल मिलाकर रथ यात्रा को जन कल्याण की दिशा में समझदार लोगों का एक सार्थक प्रयास माना जा सकता है। कहने की जरूरत नहीं कि जनता इस परम्परा से हमेशा जुडी रही है। जगन्नाथजी की यात्रा हो या महावीरजी की गणेशजी की हो या गणपति की रामजी की हो या कृष्णजी की सारी की सारी रथ यात्राए हमारे जन-जीवन का अभिन्न अग रही हैं। रथ यात्राओं का महत्व हम भली-भाति स्वीकार कर चुके हैं।

चुनाव के लिये जब दुदुभि बजती है तब उससे पहले भी रथ यात्रा निकलती है। एक-दूसरे दल की छीछालेदार स लेकर अपने-अपने दल की उपलब्धियो के ढोल पीटे जाते हैं। आश्वासनो की फसल लहलहाने लगती है। यही वह स्वर्ण अवसर है जब आप हथेली पर सरसों उगते देख सकते हैं। रथ यात्रा निकलते ही अधेरे में सोये हुए लोग उजाले मे आ जाते हैं। रथ यात्रा तब एक साधारण यात्रा न होकर सूर्योदय का आभास कराने लगती है। रथ यात्रा लोगो मे एक नशा भर देती है। ऐसा नशा कि हथेली पर जर्दा-चूना रगडकर खैनी खाने वाले, गजेडी भगेडी और दूसरा नशा करने वाले नशेडी भी अपना नशा इस रथ यात्रा के आगे फीका मानने लगते हैं।

इसलिये मित्रो! अपुन की खोपडी मे भी यह बात फिट बैठ गई है कि अगर कुछ कर गुजरना है तो रथ यात्रा निकालो। इस पार या फिर उस पार। आर-पार के बिना यह जो बीच की जिन्दगी जी रहे हैं, इसमे कुछ होने-जाने वाला नहीं। कल फूक निकल जायेगी और इतिहास में नाम भी दर्ज नहीं होगा। जब किसी काबिल ही नहीं तो इतिहास में क्या खाक दर्ज होगा। आज तक न तो कोई घोटाला किया न तस्करी, चोरी को न हेराफेरी अथवा सीना जोरी तक नहीं की तो बताइये कर गुजरने लायक क्या उपलब्धि मानी जा सकती है। दुनिया इतनी लम्बी चौडी, दुनिया के रग-ढग निराले और दुनिया इतनी रग-बिरगी लेकिन इधर हम हैं कि कहीं कोई जिक्र करने वाला तक नहीं। किसी

काबिल नहीं, एक दम गाफिल। किसी महफिल के लायक भी नहीं।

मजे की बात तो यह है कि घर वाली भी हमें किसी काबिल नहीं समझती। कभी-कभी देवी से कहते हैं कि जब हम इतने कागज बिगाड रहे हैं और पाण्डुलिपियों पर पाण्डुलिपिया तैयार कर रहे हैं तो इनकी ठीक से रखवाली करो। एक दिन छपेगी तो दुनिया भर म अपुन का नाम होगा। देवी साफ-साफ कहती है कि तुममें ऐसा क्या है जो तुम्हारी या पाण्डुलिपियो की रखवाली करु! चोर-उचक्का तक तो इस घर में मुह मारता नहीं और मान लो जो कभी भूल कर बैठा तो अपना सिर दीवार से फोड लेगा। ऐसे कागजों के बण्डल देखकर रद्दी खरीदने वाला भी मुह फेर ले। मित्रियों का वो जो लीपने का न पोतने का। इससे तो बेचारी और बेजुबान दीमक ही दोस्ती कर सकती है।

यारो! हमने फैसला कर लिया है कि अपना लिखा सारा मसाला लेकर हम अब रथ यात्रा पर निकलेंगे। गाव-गाव, शहर-शहर, नगर-महानगर सब जगह जायेगे और प्रकाशको-सपादको को जगायेगे। भाई जागो, हमारी रचनाए छापो। जनता को बतायेंगे कि साहित्य समाज का दर्पण है और इसे धुधला करने की साजिश करने वालों के सामने ताल ठोक कर खडे हो जाओ। साजिश का पदाफाश करने में हमारा साथ दो। जनता को पढने की आदत डालने की पुरजोर शब्दों में अपील की जायेगी। दूरदर्शन और दूसरे चैनलों पर आखे गडाकर अपनी आखें फाडन क लिय किये जा रहे षडयत्र से जनता को सावचेत किया जायेगा। देश की ग्रामीण जनता अभी भी टी वी की टी बी से दूर है इसलिये हमें भरोसा है कि वह हमारे चक्कर म जरूर आ जायेगी और इस 'नेशनल मूवमेंट' में कधे से कधा मिलाकर साथ देगी। एक बडा वर्ग हमसे जुड गया तो हम भी नेता बन जायेंगे। हम भी आश्वासनों की फसल बोयेंग और ज्याही वह हरियाने लगेगी कि हम 'तुरन्ता भोजन' (यानी फास्ट फूड) की तरह चट कर जायेंगे। जनता का काम है झासे में आना और हमारा काम । इतिहास में नाम दर्ज हो जाने लायक हस्ती बन जाने के लिये हम रथ यात्रा निकालेंगे और जरूर निकालेंगे। हम भी देश भक्ति, राष्ट्र के पुनर्निर्माण, राष्ट्रीय परम्परा सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय चेतना के लिये अपना सर्वस्त्र बलिदान करने का भरोसा दिलायेंगे। भरोसे की भैंस पाडा ले आय तो हमारा क्या कसूर! आगे-आगे यही हुआ है तो पीछे-पीछे भी यही होगा। होई वहि सा राम रचि राखा। आप को हमारा न्यौता है कि हमारी रथ यात्रा को सफल बनायें और अपनी ओर से तन मन, धन से सहयोग करें। हमारी मनोकामना है कि हमारी यह रथ यात्रा गाधीजी की डाडी यात्रा जैसी अमरता प्राप्त करले। आजादी की पचासवीं वर्ष गाठ के मौके पर हम भी कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखते हैं। आपका कुछ बिगडता नहीं और हमारा काम और नाम हो जायेगा। आप हमारी रथ यात्रा में शामिल होकर हमारा मनोबल बढाइये। हम आपका मनोरथ सिद्ध करेंगे। सिद्ध और साधक की जोडी खूब जमेगी। □

एक सूत्रीय कार्यक्रम

कोई कहता है देश खतरे में है, कोई कहता है बाघ खतरे मे है तो कोई गोडावन को खतरे मे बता रहा है। मैं कहता हू ईमान खतरे म है तो लोग कहते हैं मैं पागल हो गया हू। ईमान और ईमानदारी की आज किसे दरकार है। देश का नाम भ्रष्ट देशो की श्रेणी मे आ गया है तो गर्व किया जाता है। बदनाम हुए तो क्या हुआ नाम तो हुआ। आज विश्व मे ईमानदार देशो की कहीं कोई गणना या चर्चा होती है क्या।

धर्म खतरे मे पडता है तो देश भर मे बचेला मच जाता है। किसी की जमा पूजी डूबती है तो तूफान उठ खडा होता है। शेयर गिर जाते हैं तो लोगो को साप सूघ जाता है। सरकार गिरती है तो राजनीतिज्ञो के मुह लटक जाते हैं। व्यापारी आशका के कोहरे मे डूबने लगते हैं लेकिन ईमानदारी लुप्त होने पर किसी को कोई खतरा नहीं लगता। आज ईमान का एक टका नहीं बटता।

आज हमे इस बात की चिन्ता ज्यादा सताती है कि ईमानदार आदमी अभी तक जीवित क्यो है बल्कि उसे तो राष्ट्रहित मे अभी तक कब्र मे दफन हो जाना चाहिये था। ईमान आज जलालत झेल रहा है फिर भी जिन्दा है। कठोर वज्र और कठोर छाती का यह जीव इस ससार से विदा क्यो नहीं हो जाता ताकि लोग सुख की सास ले सके। ये ईमानदार न तो खाता है न किसी को खाने देता है। सचमुच यह कठोर और निर्दयी है।

पिछले चालीस-पचास बरसो मे ईमानदार पर प्राणघातक हमले हुए लेकिन फिर भी यह जिन्दा है। इसकी नस्ल को लुप्त प्राय बनाने के लिये सारे ससार मे योजनाबद्ध प्रयास हो रहे हैं। यह सतोष का विषय है कि अब इस अभियान मे 90 प्रतिशत तक सफलता प्राप्त करली गई है। अब तो बाकायदा एक 'टास्क फोर्स' ईमानदारी को समाप्त करने के लिये काम कर रही है। ईमानदारी पर चौतरफा हमला किया जा रहा है। यह जरूरी भी है क्योकि जब तक एक प्रतिशत ईमानदारी भी मौजूद रहेगी तब तक दाल गलाने वाले के गले में खतरे की घण्टी बजती रहेगी।

ईमानदार आदमी सारा माहौल खराब करता है। कहते हैं न कि एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है। यही स्थिति ईमानदार की है। यह जहा भी रहेगा अपने ईमान पर अडिग रहेगा, अकडता रहेगा, अपने आप पर इतरायेगा, गर्व से फूला रहेगा। इसके विपरीत आज माहौल दूसरा है। सारे कुए में भाग पडी है लेकिन ईमानदार आदमी भाग भरा लोटा नहीं पीएगा वह अपनी ऐडी मारकर कुआ खोदेगा और अपनी महनत से खोदे हुए कुए का पानी पीएगा। ईमानदार आदमी इतना जिद्दी क्यो होता है।

आप खुद देख रहे हैं कि हमारे देश के नेता, अभिनेता, व्यापारी, अफसर और कर्मचारी मजे से खा पी रहे हैं लेकिन यह ईमानदार आदमी अपनी झोपड-पट्टी मे भूखा-प्यासा सबसे अलग रहकर भी बहुमत से जग लड रहा है। मुट्ठी भर ईमानदार लोग भी लाखो खाते-पीते लोगो पर भारी पड रहे हैं। ईमानदारी एक जुनून है और आज इस जुनून का मिटाने की सख्त जरूरत है अन्यथा यह बहुमत वालों को न चैन से जीने देगा न मरने देगा।

देश को ईमानदार जीवों से बचाना होगा। अगर हमें घोटालों में कीर्तिमान स्थापित करना है, हेराफेरी में नम्बर वन बनना है, ऊच-नीच का फर्क बनाये रखना है, अन्याय को न्याय पर विजय प्राप्त करनी है और भाई-भतीजावाद का झण्डा बुलन्द करना है, किसी को पटखनी देनी है, बडबोलापन कायम रखना है, गरीब-अमीर की खाई को चौडा करना है, लोगो को जाति, धर्म, सम्प्रदाय और वर्गों में बाट कर रखना है ता ईमानदार आदमी को मिटाना होगा। यह राह का सबसे बडा रोडा है भले ही वह दिखने में थोडा है। ईमान और ईमानदारी का जो खतरा हमारे सिर पर मडरा रहा है उस मिटाना ही हमारा ध्येय होना चाहिये। इसी एक सूत्री कार्यक्रम पर आज अमल करने के लिये साम-दाम और दण्ड-भेद से काम करने की जरूरत है। बहुमत से तो राज बदल जाते हैं फिर ईमान और ईमानदार की तो बिसात ही क्या है। आखिर क्या खाकर वह मुकाबला करेगा। सकल्प लो और इसकी हस्ती को मिटा दो। ❑

चल पडो चुपचाप

हम भी गजब के भाग्यशाली हैं। कलियुग मे रहते हुए कई युगो बल्कि नये युगो में प्रवेश करते हैं। नये युगो मे ये प्रवेश हमे हमारे प्रिय नेता कराते हैं। इसके लिये हमे उनका जीवनभर ऋणी होना चाहिये। मैं तो हू भाई, आप हैं कि नहीं, यह आप जाने।

मैं जब भी अपने किसी प्रिय नेता के श्रीमुख से यह सुनता हू कि हम रामराज्य के नये युग में प्रवेश कर रहे हैं तो दिल गदगद हो जाता है। अपनी बगले बजाने और बल्लियो उछलने को जी चाहता है। चिंतन-मनन की स्थिति में आने पर मन रामराज्य का इतिहास जान लेने को उतावला होने लगता है। फिर जब कोई रामायण थमा देता है तो पढने से जी उकताने लगता है और रामायण सीरियल के चामत्कारिक दृश्य मानस पटल पर उतर आते हैं। इससे रामराज्य का रामराज्य जानने का अवसर मिल जाता है और इलेक्ट्रोनिक क्राति का लुत्फ मुफ्त में मिल जाता है। पुरातन युग से नये युग तक की सुदीर्घ यात्रा का परम आनद एक साथ उठा लेने मे हर्ज क्या है।

एक दिन रामलीला मैदान में जुटी भारी भीड देखकर मेरी उत्सुकता बढ जाती है। वहा पहुचने पर पता चलता है कि एक प्रिय नेता उद्घोष करने आ रहे हैं। सोचता हू कि जब आ ही गया हू तो भाषण का भक्षण करके ही चलू। मन है कि मानता ही नहीं। नेताजी के भाषण का सार समझने लगता हू। देश शाति और सह-अस्तित्व के एक नये युग में प्रवेश कर रहा है। दिल कहता है कि अभी पिछले दिनों तो रामराज्य के नये युग में प्रवेश किया था। क्या युग इतना जल्दी बदल गया? दिल कोई जवाब नहीं देता तो मान बैठता हू कि शायद उसे नींद आ गयी है। मन है, मन का क्या! गरीब मजदूर थके किसान, पिटे हुए छात्र और बेरोजगार नौजवान की तरह हार कर सो गया होगा। दिल ही तो है और वह भी अपना। दिल को सोया हुआ छोडकर मैं शाति और सह-अस्तित्व के नये युग में प्रवेश कर जाता हू।

एक दिन अचानक हगामी 'डिबेट' पर आखे टिक जाती हैं। वित्त मत्रीजी की लुभावनी बातो से इतना 'इम्प्रेस' हो जाता हू कि सारी दुनिया एक तरफ और । मैं भी भाषण की रो मे बहने लगता हू। आकडो के मायाजाल के बावजूद मैं बोर नहीं होता। वहा होने वाला शोर भी गौर करने लायक नहीं रह जाता। आप पूछेगे क्यो? आखिर ऐसी क्या बात हुई कि मैं सम्मोहित हो गया? आपको बताते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है और इसे मैं आपके साथ बाटना भी चाहूगा। हुआ यह कि हम अर्थव्यवस्था के नये युग मे प्रवेश कर गये थे। यह नये युग का तीसरा दरवाजा था। तीसरी दुनिया के लोग अगर तीसरे युग में प्रवेश करे तो हिन्दी के विद्वान इसे अलकार की सज्ञा देते हैं। हम अलकृत हो रहे थे। इस अलकार के आगे पद्मश्री पद्मभूषण, पद्म विभूषण, भारत रत्न जैसे सम्मान फीके लगते हैं। इन गिने गिनाये अलकारा से कोई नये युग मे प्रवेश थोडे ही कर सकता है। हम थे कि नये अर्थात् अर्थव्यवस्था के नये युग मे प्रवेश कर रहे थे। मेरे पास एक पुराना परिचित खडा था। उसने मुझे टोका और रोका। कहने लगा- रुकिये जनाब कहा जा रहे हो। हमने कहा- भइया, हमे काहे को रोक रहे हो। हम नये युग मे प्रवेश कर रहे हैं। उसने तर्क दिया कि लाला, यह नये युग मे प्रवेश नहीं बल्कि यू कहो 'आ बैल मुझे मार'।' हमने तर्क दिया कि अब न तो ढग के बैल मिलते हैं न बैल हाकने वाले किसान। बैलो की जोडी तो बरसो पहले बिछुड गयी। गाय और बछडे के बीच भी शायद कोई बैर उत्पन्न हो गया। नागौरी बैलो की नस्ल तो वैसे ही सकट म पडी है। अब ऐसा बैल है ही कहा जो किसी से भिड सके। हमारे तर्क से उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी लेकिन उसके चेहरे पर तनाव आ गया। तनाव म सूखा तना बन जाने वाले इस साथी के प्रति हमारी हमदर्दी उमड आयी। हमने 'रिलेक्स' कहा तब जाकर उसका चेहरा थोडा ढीला पडा।

कुछ दिन गुजरे कि हम एक सास्कृतिक कार्यक्रम देखने चले गये। कार्यक्रम पूरा देखा। तबियत हरी हो गयी। हम हरियाये हुए अपने घर लौटने के लिये उठ रहे थे कि उद्घोषणा हुई- 'प्रिय श्रोताआ। सस्कृति मत्री आपके सम्मुख अपने अमूल्य विचार व्यक्त करने के लिये मौजूद हैं। आप मौन धारण कर मजेदार भाषण सुनिये।' हमने मौन धारण कर लिया। बनी-बनाई खैनी हथेली से एक ओर कोने म उछाल दी।

नेताजी का मनमोहक उद्बोधन शुरू हुआ- 'मित्रो हम सास्कृतिक चेतना के नये युग में प्रवेश कर रहे हैं।' हमारा माथा ठनका। यह क्या, अभी तो अर्थव्यवस्था के नये युग में प्रवेश किया ही था कि इतना जल्दी हम एक और नये युग में प्रवेश करने को मजबूर कर दिये गये। यह युग है कि यम्दूत। मेरी पत्नी भी साथ थी। उसने कहा कि, बाबा,

चलो न। आगे ही तो बढ रहे हैं, पीछे तो नहीं लौट रहे। मन ने कहा कि अर्द्धांगिनी ठीक ही कर रही है। हमने औरों के साथ सास्कृतिक चेतना के नये युग मे प्रवेश किया। वहा यात्री का कार्यक्रम चल रहा था। उधर दलेर मेहन्दी और गुरुदास मान अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर घर लौट रहे थे। आयोजक घोषणा कर रहे थे कि अगला कार्यक्रम माइकल जैक्सन प्रस्तुत करेंगे। मैंने सोचा- यार, यह तो मजे हो गये। हो सकता है कि आगे 'ए' ग्रेड की फिल्मे देखने को मिलें। हुसैन की सारी कन्ट्रोवर्सियल पेंटिंग्स भी शायद यहा देख पायेंगे। किसी का कोई डर नहीं, इससे अच्छा कोई युग नहीं। मन ही मन ऊपर वाले से प्रार्थना की- हे भगवन! हमारी सुन। इस युग को इतना लम्बा कर दे जितना समय जय किशन से जैक्सन बनने मे लगा हो। बॉलीवुड वाले जिस तरह दर्शकों को फसाकर तीन घंटे की कैद देते हैं वैसी ही हमें एक दीर्घकालीन कैद दे ताकि कुछ चुनिंदा फिल्में देख सकें, पेंटिंग्स देख सकें और पुरानी आर्ट का आनद उठा सके। कुछ ऐसा कर कि यह जीवन सार्थक हो जाये। अब हमें अन्य किसी नये युग मे प्रवेश की चाह नहीं रही।

सस्कृति के नये युग में प्रवेश करते हुए हमे जिस आनद की प्राप्ति हुई उसे अगर परमानन्द कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। कुल मिलाकर हम नये युग में प्रवेश कर गये। यह प्रवेश हमें भीतर तक प्रभावित कर गया। नये युग मे प्रवेश करने के लिये ज्यादा प्रतीक्षा नहीं करनी पडी। अगला युग मानवता की सेवा का नया युग था। मैंने एक जासूस छोडा और उससे कहा कि यार, जरा पता लगा कि आगे और कितने युग हैं। वह बहुत शरीफ आदमी था। उसने मुझे बताया कि अभी तो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का नया युग, अन्तरिक्ष में एक और लम्बी छलाग का नया युग, गरीबी उन्मूलन का नया युग, रक्षा मामलों में आत्मनिर्भरता का नया युग, स्वास्थ्य सेवाओ के क्षेत्र में नया युग, विज्ञान एव तकनीकी के क्षेत्र मे नया युग और अन्तर्राष्ट्रीय समझौतो के क्षेत्र में नया युग आने वाला है। थक-हार कर हम वहीं बैठ गये।

नये युग मे प्रवेश करने का मन तो बहुत करता था लेकिन प्रवेश की गति जेट और जगुआर की गति को पछाड रही थी। हम बुरी तरह थकता गये। हमने तय किया कि थोडी 'रेस्ट' मिल जाये तो आगे बढने में कुछ सुविधा रहेगी। यह सोचकर हम सास्कृतिक चेतना युग के प्लेटफार्म पर लमलेट हो गये। अब किसी को हमें नये युगों में ले जाना है तो वह चिन्ता करे। हम सोचने लगे कि ज्यादा सोचने से कोई लाभ नहीं है। इतनी देर मे किसी ने लात मार कर उठाया- 'चलो यहा से नया युग आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। हम कराहने लगे तो फिर किसी ने घुडकी दी- 'चल पडो चुपचाप।'

❑

कथा सेवा और सुधार की

प्रिय मित्रो! आज मैं आपको सेवा और सुधार की कथा सुनाता हू। मुझे विश्वास है आप इसे सत्यनारायण की कथा या कमलेश्वर की कथा के समान ही धैर्य की घूट पीकर सुनने की कृपा करेगे।

सन् 1947 मे 'सेवा' बहन और 'सुधार' भाई मेरे पडोसी थे। दोनों के ही एक साथ रहने के सकल्प लेने के कारण वे विवाह में नहीं बधे। उन्होंने शायद यही सोच रखा था कि जिन्दगी ऐसे ही कट जायेगी। देश स्वतत्र हुआ तो दोनों बहन-भाई राष्ट्र के कर्णधारो की गोद चले गये। मेरे पडोस वाला घर सूना हो गया। कर्णधारो ने बडे प्यार से इन्हे पाला।

कर्णधार देश के किसी भी कोने में जाते तो सेवा और सुधार साथ-साथ जाते। जन सभाओ से लेकर घर-घर तक इनकी अमर कीर्तिपताका फहराने लगी। सारा देश इनके वशीभूत हो गया। जहा देखो वहीं इनकी धूम मची होती। लोग इन्हे पलको पर बिठाते और फूल बरसाते। पडोसी होने के नाते मैं भी गर्व से फूला न समाता।

देखते ही देखते सेवा और सुधार देश की राजनीति के पर्याय बन गये। इनके रचयिता तक का सम्मान होने लगा और वे देवी-देवता की तरह पूजे जाने लगे। स्वतत्रता प्राप्ति के समय देश मे मात्र एक-दो ही राजनैतिक कम्पनिया थी लेकिन शनै शनै इन कम्पनियो मे फूट पडती गई और कई नई कम्पनिया बन गईं। आज तो इनकी सख्या कुकुरमुत्ते और खरपतवार की तरह बढ गई है।

सेवा और सुधार तो दो ही थे। वे भला कैसे बटते! हर कम्पनी यही चाहती थी कि ये दोनो उनके पास रहे। कम्पनियो ने इनका अपहरण करना शुरू कर दिया। सेवा और सुधार जिस कम्पनी के पास होते उस कम्पनी के शेयर ऊची कीमत पर बिकने लगते। एक तरह से सेवा और सुधार खरीद-फरोख्त की चीज बन गये।

सेवा और सुधार कहा तो लोगों की आखों के तारे थे लेकिन कर्णधारो ने इनका बेजा इस्तेमाल करके इनकी साख धूल में मिला दी। इन दोनों बहन-भाई की ऐसी दुर्गति हुई कि वे अपना वजूद खोकर शब्दकोश के कठघरे में खडे हो गये। गश खाकर गिरने लगे।

सेवा बहन और सुधार भाई आजकल अंधेरी कोठरी में पड़े अपनी दशा पर रो रहे हैं। उन्हें इस बात का गम सता रहा है कि कहां तो उनको अपनाकर कर्णधारों ने देश के विकास तीर्थों का निर्माण किया और सारी दुनिया में शोहरत पायी और कहां आज के कर्णधारों ने उनके नाम पर अपने कुनबे के लिये करोड़ों डालर और अरबों का सोना इकट्ठा किया। यही नहीं देश-विदेश में बड़े-बड़े कफरोट के जंगल खरीदे।

पता ही नहीं चल पाया कि कब खलनायकों और छलनायकों ने कर्णधारों का चोला पहन लिया। सेवा और सुधार को गहरा धक्का लगा। दोनों बहन-भाई ने घोषणा कर दी है कि जो घपलेबाज कर्णधार उनके कॉपीराइट का इस्तेमाल करेंगे उन्हें न्यायालय के कठघरे में खड़ा कर दिया जायेगा। यही नहीं उनके नाम पर अब कोई व्रत भी नहीं रख सकेगा। दोनों आजकल कष्ट भरा जीवन जी रहे हैं।

अथ कथा इति



एक और विज्ञान- चम्पोलोजी

आपने बायलोजी, जिओलोजी, सोशियोलोजी, साइकोलोजी आदि का नाम तो सुन रखा होगा। इनका हिन्दी अर्थ भी जान लीजिए। इनका अर्थ है जीव विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, समाज विज्ञान और मनोविज्ञान। इसके अलावा एक और विज्ञान प्रचलन मे है जिसे लोग आम भाषा मे चम्पोलोजी कहते हैं। इसकी दिक्कत यह है कि चम्पो शब्द चमचागिरी से बना है और इसका उद्गम हिन्दी क्षेत्र मे हुआ जबकि लोजी शब्द अंग्रेजी शब्दकोश से लिया गया है। इस तरह यह सकर प्रजनन है। इसी कारण यह आज बलिष्ठ होकर हमारे समाज मे चारो और धूम मचा रहा है। अंग्रेजी-हिन्दी के मिक्सचर के कारण इसे विज्ञान का दर्जा नहीं मिल पा रहा है।

चम्पोलोजी मे विज्ञान के सारे तत्व मौजूद हैं और इसके बडे-बडे गुण हैं। इसको जीवन में जिसने भी उतारा वह भवसागर को पार कर गया। ताश की बाजी पर बजबजाने वाला टटपूजिया देखते ही देखते मुख्यमत्री बन गया। सतरी भी मत्री बन गया। पिछले दिनों एक सेठ की हम्माली करने वाला नौकर ससद मे पहुचकर मत्री बन गया। पार्टी ने कहा कि प्यारेलाल जरा नीचे देख तो उसकी आख ही नहीं खुली। नींद में ही बुदबुदाया कि मेरे आराम मे खलल नहीं डालो वरना जागते ही आपको खत्म कर दूगा। पार्टी रो पीटकर चुप हो गई। कुछ आगे चीं-चपट करने की हिम्मत ही नहीं पडी। चप्पल चटखाते फिरते लोगों को इसी विज्ञान की बदौलत कोठियों का मालिक बनते हमने देखा है। आप भी नजर अपने इर्द-गिर्द दौडाइये और फिर देखिये कि मेरी बात में वजन है कि नहीं।

आज जो लोग करोडों-अरबा रुपये का खेल खेल रहे हैं उनके जीवन चक्र का सर्वेक्षण करके देखिये। आप पायेंगे कि जो खुद कभी फुटबाल बने हुए लोगों के खेल का आकर्षण बने हुए थे आज ऊच ओहदेदार और शोहरत के शहशाह बन गये! यकीन कीजिये यह चम्पोलोजी को अपनाने का ही चमत्कार है।

प्राइवेट सेक्टर हो या पब्लिक सेक्टर, जिसने भी चम्पोलोजी को धैर्यपूर्वक धारण

किया वह धन्य हो गया। चम्पोलोजी मे भैया ऐसी शक्ति है कि काम करने वाले कर्मशील व्यक्ति को आप दो कौडी का आदमी साबित कर सकते हो। इसके उपासक को काम करने की बजाय कान भरने की जरूरत है। आजमाकर देखिये तो आप भी ऊचाइयो के शिखर पर पहुच जायेगे। आपके अफसर आपके तलुए चाटते फिरगे। काम चोर और निठल्ले भाइयों के लिये तो यह रामबाण है। इसे अपनाइये और चिंता मुक्त हो जाइये।

चम्पोलोजी से आपका चिपका चेहरा खिल उठेगा, मुर्दा जिस्म जी उठेगा आपका हर सौदा पटेगा और दुश्मन सिर पीटकर घर बैठा दिखाई देगा। यह विज्ञान आज तक पुस्तक रूप मे सामने नहीं आया। इसका कारण मैं आपको बता देता हू। अगर इसके उद्भव, विकास और वर्तमान पर कोई पुस्तक छप गई तो उन लोगो का भविष्य खतरे मे पड जायेगा जो इसके सबसे ऊचे पायदान पर चढे बैठे हैं। फिर तो हर कोई पौ-बारह पच्चीस हो जायेगा। इसलिए इसे गोपनीय रखते हुए अपने जीवन मे उतार लो। इस पचडे में न पडो कि इसे विज्ञान का दर्जा मिलता है या नहीं। आप तो इसे अपनाइये और अपना भविष्य निखारिये। जय चम्पोलोजी की। ❑

मान न मान मै तेरा मेहमान

भगवान ने इस धरती पर भात-भात के इसान बनाये हैं। इसीलिए तो यह धरती कहीं रगीन और कहीं गमगीन है। हमे भला गमगीन दुनिया से क्या लेना। लोग रगीन हा, नजारे और सितारे रगीन हो तो दुनिया अपने आप रगीन हो जाती है। इसी दुनिया मे कुछ लोग खाने, पीने और मौज-मस्ती छानने क लिए ही अवतार लेते हैं। शायद *इसीलिए अनुभवी लोगो के मुखारबिन्द से यह वाणी फूटी कि जीना यहा मक्कर से* रोटी खाना घी शक्कर से।

प्रभात भाई ऐसी ही एक अजीम हस्ती और कद्दावर शख्सियत हैं जिन्हे हम भुलाये नहीं भूलते। अपने किस्म के ये अकेले और निराले जीव है। प्रभात भाई कब जन्मे, किस जाति-बिरादरी के हैं और कहा से आये हैं-इन सवालो का हमारे पास कोई ठोस जवाब नहीं है। हम तो बस यही मालूम है कि जब से हमने होश सभाला तब से प्रभात भाई को अपने इर्द-गिर्द पाया। हमने इन्हे न कभी काम-धाम पर जाते देखा और न रोटी बनाते। यह बदा डेयरी के बूथ पर न तो कभी दूध की थैली बटोरने वालो की लाइन मे दिखा न कभी राशन झपटने वालो की क्यू मे खडा पाया गया। हा, कई बार मोहल्ले मे सिर-फुटोवल के अखाडे मे रेफरी बना जरूर दिखाई देता है। ऐसे मामला मे वह दूध का दूध और पानी का पानी जरूर कर देता है।

एक दिन हमने गजब की गलती की और उनमे पूछ लिया- प्रभात भाई, अपने गुजारे के लिए क्या करते हो? हमारे इस सवाल ने उनके लिये बिच्छू के डक का काम किया। उनका रौनक भरा चेहरा रक्तिम हो गया। हमे डर लगा कि कहीं वे डस न ले, लेकिन वे बोले-अव्वल तो *तुम यह सवाल पूछने के हकदार नहीं, फिर भी बच्चू,* जब चपर-चपर कर रहे हो तो कान खोलकर सुन लो। नीली छतरी वाले ने हमको चोच दी है तो चुग्गे की भी फुल गारटी ली है। खाओ पीओ, टहलो और खूटी तानकर सो लो। यही वरदान है हमे। इसके बाद प्रभात भाई को कुछ और खोदकर पूछन की हमरी हिम्मत ही नहीं हुई। मैं उन्ह पूछता भी कैसे? प्रभात भाई न तो हमारे रिश्तेदार और न लगोटिये यार फिर क्यो करता मैं झक-झक बेकार।

प्रभात भाई का जीवन हमे आदर्श और प्रेरणादायक लगा। ऐसा लगा कि प्रभात भाई कोई इसान नहीं देवता हैं। साधु-सत हैं। ऐसे ही लोगो की समाज पूजा करता है। हमारे हाथ प्रभात भाई के चरणा की तरफ बढने को थे कि मन ने कहा- नादान, अभी ठहर। प्रभात भाई ने कहीं ठोकर मार दी तो तुड्डी हाथ में लिये डोलते फिरेगा। हम ने मन ही मन उनकी पूजा का व्रत लिया और परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना की कि हे भगवन्, अगले जन्म हमे भी ऐसा चोला पहनाना और ऐसा ही सुख देना। न बीवी-बच्चो की किचकिच न कमाने की झिकझिक। न चूल्हे-चक्की का झझट न किसी से खिटपिट। दुनिया कमाये और हम खाये।

इस ससार मे भारतीय समाज का भी कोई मुकाबला नहीं। यहा ईश्वर सबको भूखे पेट उठाता है लेकिन पेट भरने के बाद सुलाता है। आस्थाए, परम्पराए एव मान्यताए किसी को भूखा सोने की इजाजत नही देती। भात-भात की भाषाए, वेशभूषाए, अनगिनत जात-बिरादरिया और रीति-रिवाजो के बावजूद भारत भोजन प्रधान देश है। पडोसी भी भूखा रह जाये तो पाप लगता है। इसके उपरात जन्म से मृत्यु के बीच के पचासो सस्कार भोजन भट्टो के लिए लॉटरी का टिकट है। यह लॉटरी शर्तिया खुलती है। नौकरी लगे तो भोजन और रिटायर हो तो भोजन। फिर भला प्रभात भाई क्यो भाड झौंकने लगे। क्यो बेवजह अपनी रसोई काली करे कि रग-रोगन कराने की मुसीबत गले बाधनी पडे।

प्रभात भाई कभी स्कूल नही गये लेकिन साक्षर होने का उन्हे फख्र है। वे इतना तो पढ ही लेते हैं कि कहा-कहा भोजन का जुगाड बैठ सकता है। शादी-सगपण कोई मुहूर्त कार्यक्रम सभा-सगठनो की गोठ भजन-सत्सग उनके परमानेट ठीये हैं। यही तो रोजमर्रा की जिन्दगी है। बात निकलेगी तो दूर तलक जायेगी तो फिर प्रभात भाई जब फेरी पर निकलेगे तो यह भी पता चल जायेगा कि किस घर से बारात निकलेगी और किस घर जायेगी। प्रभात भाई की सेहत के लिए इतनी जानकारी काफी है। इससे ज्यादा जानकारी रखने से उन्हे उबकाई आने लगती है।

सवेरे-सवेरे सूर्य नमस्कार के बाद प्रभात भाई सबसे पहले अपनी वेशभूषा को निहारते हैं। वेशभूपा टनाटन तो आधा काम सम्पन्न। अन्यथा भिगोया धोया सुखाया और प्रेस कर उसे चमकाया। बस फार्मूला फिट। आजकल आदमी नहीं आदमी के वस्त्र देखे जाते हैं। फैशन की इस दुनिया मे आदमी गुणो से नहीं गणवेश से पहचाना जाता है। कपडे अगर टिप-टॉप हो तो चाहे भीड को चीरते हुए लोगो की जेब ही चीरते जाओ। कोई रोकने-टोकने वाला नहीं। प्रभात भाई बेचारा क्यू जेब काटने लगा। वह तो पेट को भाडा चुकाकर मस्त हो लेता है।

वैवाहिक प्रीति-भोज प्रभात भाई को सबसे अच्छे लगते हैं। अव्वल तो उन्ह यहा

कोई रोकता-टोकता नहीं। वर और वधु के अलग-अलग पक्षो के लोग एक साथ जुडते हैं तो वे प्रभात भाई को लेकर 'कन्फ्यूज' रहते हैं। यह प्रभात भाई के लिए सबसे ज्यादा फायदे का सौदा रहता है। कभी खुदा न ख्वास्ता किसी ने पूछ लिया कि भई, आपको पहचाना नहीं तो रेडिमेड जवाब जबान पर बैठा है- 'हमे नहीं पहचाना। अजी साहब, कमाल करते हैं, अपने रिश्तेदारा से यही सलूक करते हैं आप।' प्रभात भाई यह जवाब इतना कॉन्फीडेस से देगे कि पूछने वाला तो बेचारा पानी-पानी हो जायेगा। इसके आगे पूछने का गुर्दा वह कहा से लायेगा। फर्ज करो कि इससे पीछा नहीं छूटा और कोई चिपक चट्टू ही हो गया तो प्रभात भाई पानी की एक भरी हुई गिलास हाथ में लेकर एक-एक घूट इतना धीरे-धीरे पीने लगेगे कि पूछने वाला वहा से कृष्ण मुख कर कहीं दूसरे काम मे जा जुटेगा। इस बीच प्रभात भाई थाली को हाई-स्पीड से फिनिश कर खिसक लगे।

विवाह समारोहो मे लोगा को वैसे भी ज्यादा मीनमेख निकालने के लिए फुरसत नहीं होती। दूल्हा तो दुल्हन ओर जानी जीमने मे मगन रहते हैं। बाय द वे किसी खुच्चड से पाला पड गया तो प्रभात भाई यह कहकर वहा से खिसक लेंगे कि जरा ठहरो तो, हम अपना व्हीकल लॉक करके आते हैं। जगह जब 'डाउट फुल' बन जाये तो 'डाइट' को गोली मारो और दूसरा कोई सुरक्षित ठिकाना तलाशो। पेट पूजा की बजाय कहीं कोई दूसरी पूजा न हो जाये। ऐसी जगह क्यो प्रभात भाई अपनी मिट्टी खराब कराने लगे।

प्रभात भाई को पूरे ठसके और शान से आना-जाना ही पसन्द है। वह जमकर जीमते हैं और उसके बाद पान का एक बीडा मुह मे और दूसरा हाथ में लिये अपने गरीबखाने तक का सफर तय करते हैं। इस ठसके और शान को बनाये रखने मे बजरग बली की भी महती भूमिका रहती है। प्रभात भाई हनुमान चालीसा का गुटका हर वक्त अपने सीने से लगाये रखते हैं। हनुमान चालीसा पढा कि सारे खतरे पार। कोई फालतू की झकाळ करे तो वहीं धैं चित्त और पाचो अगुलिया घी मे।

जिन दिनो शादी-सगाई का मौसम नहीं रहता उन दिनों सत्सग ही प्रभात भाई का सहारा है। सत्सग के बाद प्रसाद तो बटता ही है। बस, झोले मे बटोरते जाओ। शहर मे इतने मदिर हैं कि गिनती करना मुश्किल है। हनुमानजी के मदिर से गणेश जी के मदिर तक, गोविन्ददेवजी के मदिर से सतोषी माता के मदिर तक प्रसाद ही प्रसाद है। श्रद्धालु प्रसाद का ढेर लिये खडे रहते हैं। जितना बाटो उतना ही पुण्य तो फिर प्रभात भाई क्यों चूके।

प्रभात भाई को सबसे ज्यादा मजा तो शिवजी की बूटी में आता है। भग पीओ कम्पीटीशन भी लाजवाब होते हैं। घोटो और पीओ ऊपर से लड्डू-पेडे-रसगुल्ले जमकर खाओ। कम्पीटीशन जीतो तो रोकडा गाठ बाधकर लाओ। भरपेट मिठाई खाने

का मसूबा ऐसे ही मौको पर पूरा होता है। प्रभात भाई की जुबान वर्षों तक इस मिठाई के स्वाद से मीठी रहती है।

मित्रो, यह न कहना कि प्रभात भाई 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' है। आप तो यह मानें कि ये जिन्दगी के मेले कभी कम न होगे, अफसोस हम न होगे। अपने इर्द-गिर्द कभी प्रभात भाई नजर आये तो बेहतर है आप उनकी नजरो से दूर हो जाये। ईश्वर से प्रार्थना करे कि उनकी गाडी यू ही गुडकती रहे। हो सकता है ईश्वर आपकी प्रार्थना से खुश हो जायें और अगले जन्म मे आपको भी यह सुख मिल जाये। ❑

बुद्धू बक्से से बोधिसत्व

अगर हम दुर्घटना के शिकार हाकर एक पखवाड तक पलग न पकडते तो जीवन के इस सत्य से वचित रह जाते। इन पन्द्रह दिनो मे हमे बोधिसत्व प्राप्त हो गया। इसके लिये हम तथाकथित बुद्धू बक्सा यानी बकौल आपके 'इडियट बॉक्स' को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते। अव्वल तो आप जिसे इडियट बॉक्स या बुद्धू बक्सा कहते हैं उस पर हमे घोर आपत्ति है। क्यो जी, आप इसे बुद्धू क्यो मानते हैं? इसके पीछे हमे तो कोई ठोस तर्क नजर नहीं आता। मैं अच्छी तरह से जानता हू कि आपको ईर्ष्या है इससे। बस, यही कारण है कि इसे आपने बुद्धू ठहरा दिया और खुद बुद्धिमान बन बैठे।

हमने तो इसके सामने बैठकर बहुत कुछ सीखा और जो सीखा है वह शायद जीवन पर्यन्त काम आये। हमारी तो आख खुल गई भाई, वरना अब तक हम न जाने कहा-कहा अधेरे मे भटक रहे थे। आपका यह जो बुद्धू बक्सा है ना, हमारे लिये बडे काम की चीज है। एकदम मस्त-मस्त। पहला तो यह कि इससे कोई टक्कर नहीं ले सकता। चौबीसों घण्टे जागता है और हम शाम हुई कि मखमली रजाई या चादर की ऊष्मा मे दुबके खर्राटे भरने लगते हैं। यह बुद्धू बक्सा बेचारा चौबीसों घण्टे जागता आपकी चौकसी करता रहता है। मेरा दावा है कि आपका पाला हुआ पिल्ला भी ऐसी सेवा नहीं कर सकता। बस, बिजली का बिल भरने का दम चाहिये आप म। बिल भरने का भी इतजाम कर देगा यह बुद्धू बक्सा बशर्ते आपको इसके साथ जीने-मरने का सलीका आ जाये।

आप ही बताइये कि आखिर आदमी की कुल जरूरतें क्या हैं? यही ना कि अपना घर हो, घूमने के लिये कार हो, टी वी , वी सी आर , फ्रिज, कूलर, वाशिंग मशीन, फर्नीचर पहनने को बढिया-बढिया परिधान बच्चों के लिये खिलौने, म्यूजिक सिस्टम वगैरह-वगैरह हों। इसीलिये तो हाड-तोड मेहनत-मशक्कत करके कमाने जाते हैं आप। वरना आपका भी जी घर बैठे रगीन कार्यक्रम देखने और मौज-मस्ती करने को चाहता है। बुद्धू बक्सा अगर आपको घर बैठे यह सारी सुविधाए मुहैया करवा दे तो

भी आप इसे बुद्दू बक्सा ही कहेगे नहीं ना। बस, यही बात हम आपको समझाना चाहते हैं। आप हैं कि घर बैठी गगा मे हाथ धोने से कतरा रहे हैं।

यह जो हमारा बुद्दू बक्सा है ना, इसमे अधिकाश कार्यक्रम प्रायोजित होते हैं। इतना तो आपको मालूम ही है। चलो हम आगे की बात बताते हैं। प्रायोजको ने लगभग हर प्रोग्राम का समय खरीद रखा है और वे उस समय के मालिक हैं। अब जब समय उनकी मिल्कियत है तो वे चाहे जो दिखाये, चाहे जो बकवास करे और चाहे तो नगा नाच करके आपका-हमारा मन बहलाय, अपुन को इससे क्या फर्क पडता है। वन-वे ट्रेफिक है तो होने दीजिये। अपुन को आम खाने से मतलब, गुठलिया गिनने का क्या काम। आपको आम का रस चूसना है तो हमारी बात ध्यान से सुनिये और छुट्टी लेकर प्रयोग के तौर पर पूरे दिन बुद्दू बक्से के सामने दही की तरह जम जाइय। दातुन-कुल्ला करते, खाते-पीते, उठते-बैठते, बीडी-सिगरेट का सुट्टा खींचते चने-चबाते यानी हर समय कागज कलम लेकर बैठे रहिये।

वन्दे मातरम के बाद मातम मनाने की कतई जरूरत नहीं। विभिन्न धारावाहिको के विज्ञापन आयेगे और उनका समय बताया जायेगा। आप उन्ह धैर्यपूर्वक नोट करते चले जाइये। वैसे तो इसकी भी जरूरत नहीं क्योकि अखबार वाले अपने पाठको की यह सेवा नि शुल्क कर रहे हैं। इन कार्यक्रमो के विवरण अखबार मे जितनी जगह घेरते हैं अगर उनकी जगह आप कोई विज्ञापन देना चाहे तो यही अखबार वाले रोकडा धरवा लेगे। खैर, यह इनका लुक आउट है, अपुन को इस लफडे मे नहीं पडना।

हा, तो आप बुद्दू बक्से पर सारे धारावाहिक, फिल्मे और दूसरे प्रोग्राम फोकट मे देखते रहिये। हर प्रोग्राम मे सवाल पूछे जाते हैं। सवाला के उत्तर दो रुपये वाले पोस्टकार्ड पर माडते जाइये और पोस्ट करते रहिये। कोई फिल्मी गीतो का कार्यक्रम होगा तो उसमे गीतो का क्रम पूछा जायेगा। यह क्रम अगर कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता के क्रम से मेल खा गया तो आपकी चादी ही चादी। आप नम्बर वन हों या थ्री, कुछ न कुछ तो ले पडेगे। क्विज या प्रश्नोत्तरी से लेकर बच्चो तक के कार्यक्रमो मे सवाल पूछे जाते हैं। जवाब देते जाइये और माल बटोरते जाइये।

आप बेशक समझदार आदमी हैं। भगवान ने आपको बुद्धि दी है। अक्ल-होशियारी मे आप दूसरे को जब उल्लू समझते हैं तो बुद्दू बक्से पर पूछे जाने वाले सवाल आपके सामने कहा टिक पायेगे। सही-सही उत्तर दागते रहिये और फिर देखिये कि डाकिया आपके लिये क्या सौगात लेकर आता है। कभी कार तो कभी फ्लेट का पट्टा, कभी कलर टी वी तो कभी साडियो का पैकेट कभी चैक तो कभी कैश कभी फर्नीचर तो कभी बच्चो के खिलौने कभी एम्पोरियम के गिफ्ट आइटम तो कभी फाइव स्टार होटल मे पति-पत्नी के एक साथ दो दिन ठहरने का न्यौता कभी भ्रमण के लिये

फर्स्ट क्लास की दो टिकटे तो कभी विदेश यात्रा की हवाई टिकट। आप देखते ही देखते मालोमाल हो जायेगे। पडोसी आपकी तरक्की पर ईर्ष्या करने लगगे। जिन्दगी ऐशो-आराम से कटने लगेगी। फिर तो आप बुद्धू बक्से की खिल्ली नहीं उडायेगे ना। सचमुच आप देवता की भाति इसकी पूजा करने लगेंगे।

भई हमने तो अब नौकरी-चोकरी की जिल्लत से छुटकारा पाने और बुद्धू बक्से की शरण मे बैठने की ठान ली है। जब बुद्धू बक्सा हो सामने तो मिया क्यो जायें कमाने। ❑

मेडम राजनीति का जादू टोना

छोकरे के दूध के दात टूटे नहीं, अक्ल डाड निकली नहीं और न ही दुनिया की ऊच-नीच समझ आयी कि लगा इससे पहले ही जिद करने। मा से कहने लगा कि राजनीति से विवाह रचाऊगा। मा बेचारी क्या समझे कि राजनीति नाम की छिनाल छोकरी ने उसके भोले-भाले और मासूम बेटे पर डोरे डालने शुरू कर दिये हैं। उसे तो बस इतना मालूम है कि छोकरी कोई जात-बिरादरी की, अच्छे खाते-पीते खानदान की हो और कुलछनी न हो तो हाथ पीले कर देने मे कोई हर्ज नहीं। मा ठहरी एकदम ग्रामीण भारत की आदर्श नारी।

पति जब दफ्तर जाने की तैयारी मे जुटे तो उसने अपना कलेजा कडा करके कहा—ऐ जी, आपका सपूत कहीं बिगडकर 'धूल' न हो जाये, उसे सभालो, नहीं तो जग हसाई करायेगा। बाप ने पूरी बात सुनी तो माथा चकरा गया। दफ्तर से लौटते ही बेटे को अपने पास बुलाया और दुलार से समझाया कि बेटा दुनिया की किसी भी छोकरी से प्यार कर ले, हम धूम-धडाके से तेरा ब्याह रचायेगे लेकिन राजनीति से दूर रह। यह तुझे घर का रखेगी न घाट का। यह घाट-घाट का पानी पीती ह।

छोकरा कहा मानने वाला था। वह तो सात घोडो पर सवार था। एक बार अडा तो अडा ही रहा। बोला—बापू, हमारी जान चली जाये पर हम राजनीति से बाज न आये। पक्की ठान ली है तो पीछे हटने का कोई सवाल ही नहीं। राजनीति ही मेरा ईमान और मेरी जिन्दगी है। सरकार ने अठारह साल की उम्र मे वोट का अधिकार कोई वैसे ही नहीं दिया है। मैं तो इक्कीस का हू। आपको मेरा निर्णय बदलने का कोई अधिकार नहीं। आप माने तो अपना भला वरना मैं तो इससे कोर्ट मैरिज कर लूगा।

बाप-बेटे मे जबरदस्त तकरार हुई। बस यह समझा कि थापा-मुक्की ही नहीं हुई। बाप ढीला पड गया और उसने एक शर्त रखी कि अगर वह तर्क-वितर्क मे उसे हरा दे तो बेशक राजनीति को अपना ले। अन्यथा बेटा कभी उस घर की तरफ मुह करके भी नहीं सोयेगा। बेटा तो राजनीति क घोड पर ही सवार था सो हर शर्त मानने को तैयार हो गया। उसने मुकाबले के लिये हा भर ली।

बाप ने तर्क दिया—राजनीति को लोग पहले सेवा के लिये अपनाते थे और आज वह सडान्ध मार रही है। बेटे ने पलटकर कहा—राजनीति पहले खद्दरधारी बूढे-खूसटा के साथ बधी थी, अब शूट-बूट वालो के साथ आने के लिये तडफे तोड रही है। पहले राजनीति से वे लोग जुडते थे जिनके पास रहने को छप्पर भी नहीं था। भूखे-नगे क्या तो नहाते और क्या निचोडते। अब देखो, राजनीति ने लोगो को निहाल कर दिया है। जिसने भी राजनीति को अपनाया उनके पास बडी-बडी कोठिया, पेट्रोल पम्प, गैस एजेन्सिया, विदेशी बैंको मे खाते, भारतीय बैंक लॉकरो मे सोना, चादी, हीरे, जवाहरात, डालर, पिस्तोले और कम्प्यूटर, सेल्यूलर फोन, एयर कडीशड विलायती कारे, विमानो मे नि शुल्क उडने के पट्टे, वोट बटोरने के लिये आधुनिक हथियारो से लैस अखाडे के पट्ठे और न जाने क्या-क्या चीजे हैं।

बेटे को शालीनता से समझाने की मुद्रा मे बाप ने कहा—भारतीय सस्कृति हमे अनैतिकता की इजाजत नहीं देती। तुम जो कह रहे हो वह सब अनैतिक है। आज राजनीति के महल मे रहने वाले लोगो को भले लोग अच्छी आख से नहीं देखते। लोग उन पर थू-थू करते हैं। बाप का यह तर्क बेटे के गले नहीं उतरा। बेटा तडक कर बोला—आप जिन्ह भला मानुस कहते हैं, राजनीति उन्हीं के बल पर जिन्दा है और रहेगी। इनका तो जीना यहा मरना यहा इसके सिवा जाना कहा। आम आदमी तो 'पोलिग' के दिन वी आई पी बनता है लेकिन वोट पाने वाला पाच बरस तक वी आई पी बन जाता है। आज राजनीति न होती तो दिल्ली वीरान हो गई होती। ताज और तख्त है तो दिल्ली भी है। यह ताज और तख्त राजनीति दिलाती है। राजनीति नहीं तो कुछ नहीं। राजनीति नहीं तो आपकी तरह भुक्खड बने रहो। राजनीति सम्मान स जीना और मरना सिखाती है। राजनीति के द्वार पर खडे आदमी की अतिम यात्रा का सफेद कफन भी तिरगा हो जाता है।

तर्क-वितर्क के इस वाक युद्ध मे बेटा बाप से भारी पड रहा था लेकिन बाप ने हिम्मत नहीं हारी। वह बोला—बेटा मेरी बात मान। राजनीति को मत अपना वरना तेरा हश्र भी तान्त्रिका-मान्त्रिका और उनके चेले-चाटों जैसा होगा। लोग टोपी उछालगे। जेल की हवा खानी पडेगी। सारा वैभव कहर बन जायेगा। बेटे ने धावी पछाड दी—राजनीति की रगीनिया क्या होती हैं, यह आप जिन्दगी भर नहीं समझ सकते। देश की तरह आप भी उदार बनिये। अपने दकियानूसी विचार त्याग द। आने वाल वर्षों मे यहां अरबो रुपये लागत के विदेशी उद्योग स्थापित होंगे नई टेक्नोलोजी आयगी, विज्ञान का चमत्कार होगा कोई नया अवतार जन्म लेगा, अन्तरिक्ष में ताक-झाक होगी। इतना धन बरसेगा कि हम बटोरते-बटोरते थक जायगे। हर बेहाल तब निहाल हो जायेगा। आप जो हर दीवाली को लक्ष्मी मेडम के आगे गिडगिडाते हैं

उसकी कोई जरूरत नहीं पडेगी। लक्ष्मी मेडम तो आजकल राजनीति के चरणा की दासी बनी हुई है। इधर आप जेल का डर दिखा रह हैं। क्या बिगाड लेगी जेल। पैमा आयगा तो जेलो को भी एयर कडीशड कर दिया जायगा। वहा भी सारी सुविधाए हो जायगी। मानवाधिकार भी कोई चीज हे कि नहीं। जेल तो सुख-शाति का घर है। वैसे अभी भी वहा किस बात की कमी है। जेल स क्या डरना। भगवान श्रीकृष्ण तो जन्मे ही जेल में थे। श्रीकृष्ण हमारे आदर्श हैं तो जेल आदर्श स्थल हुआ कि नहीं। वैसे भी हम अभी खुली जेल मे ही तो जी रहे हैं।

बेटे ने बाप को धिक्कार भरी नजरा से देखा और अपनी बात आग बढाते हुए बोला- आप रात-दिन खटते हैं फिर भी दो जून की रोटी मुश्किल मे जुटा पाते हैं। हमें एक बार राजनीति को अपनाने दो, फिर देखना कि क्या कमाल्न दिखाते हैं। ऐसा धमाल करगे कि सात पीढिया सोते-सोते खायेंगी। गेहू, चीनी, केरोसीन, जनता कपडा लेने के लिए लाइन म खडा होना भूल जायेंगे। आप जो भीड में रोज सिर फुडवाकर आते हैं वहा सिर ताज-तख्त के मालिक के पिता का सिर कहलायेगा। लोग झुक-झुक कर सलाम करगे। महगाई की मार कैसी होती है, उसका दर्द कभी नहीं सतायेगा।

बाप था कि इन तर्कों को कुतर्क करार दे रहा था और उधर सपूत किसी चीज को समझने को तैयार नहीं था। राजनीति की आच में वह अधा हो गया था। थका-हारा बाप क्या कहता। बेटे को हाथ से जाते देखा तो यही कहा—बेटा, जैसी तेरी मरजी। बेटे ने घर वालों से विदा लेते हुए एक ही बात कही—आप मुझे क्षमा करे। क्षमा वीरस्य भूषणम्। उसन माता-पिता के पैर छुए और राजनीति से सात फेरे लेने चल पडा। मजबूर पिता ने आसू बहाते हुए प्रार्थना की—प्रभु, इस क्षमा करना। यह नहीं जानता कि यह क्या करने जा रहा है। राजनीति ने इस पर जादू टोना कर दिया है। ❑

बजरबट्टू का अभिनदन

भूरेलाल 'बजरबट्टू' हमारे शहर के नामी-गिरामी साहित्यकार हैं। साहित्य साधना की स्वर्णजयन्ती पर मित्रो ने उनके अभिनदन का बीडा उठाया। बाकायदा एक अभिनदन समिति गठित की गई। सुन्दरलाल 'मुखफटिया' को इसका अध्यक्ष बनाया गया। समिति ने बजरबट्टू को अभिनन्दन समारोह मे 51 हजार रुपये की थैली भेट करने का सकल्प लिया। थैली भेंट करने की रस्म राजनीति से उधार ली हुई है। इसके बिना अभिनन्दन समारोह फीका-फीका सा लगता है। इसके पीछे एक 'लॉजिक' यह भी काम करती है कि सरस्वती उपासक के पास रुपया-टका नहीं होता बल्कि वह लक्ष्मी का दुश्मन होता है। इस प्रकार अभिनन्दन के बहाने सरस्वती और लक्ष्मी का मिलाप हा जाता है और साहित्यकार का अनर्गल प्रलाप भी खत्म हो जाता है।

समिति ने सरकारी बागवान को फूल मालाए लाने के लिए पटा लिया हाउसिग बोर्ड के भूखण्डा की नीलामी करने क लिये नियुक्त माइक वाले को मस्का लगाकर दो घण्टे के वास्ते माइक, बैटरी और भापू लान क लिये तैयार कर लिया, स्कूल के चौकीदार को दरिया उठाकर लाने के लिये राजी कर लिया टट वाले ने दो सौ कुर्सियो का कबाडा भेजने की भी हा भर ली लेकिन थैली भरने के लिए 51 हजार का रोकडा कहा से आये।

सारी माथा-पच्ची हो ली लेकिन कोई जुगाड बैठता नजर नहीं आया। समिति के सामने प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया। मगोडीलाल 'पकौडीवाला' ने अपना दिमाग दौडाया। सकटमोचन के लिये अभिनन्दन समिति की पहली बैठक मे बजरबट्टू के ज्येष्ठ पुत्र बागडबिल्ला को बुलाया गया। मगोडीलाल ने धासू भाषण दिया। यहा उसके भाषण के सपादित अश दिये जा रहे हैं—'बजरबट्टू जी का अभिनदन करने का विचार ही हमारे शहर के लिय गौरव की बात है। लानत है साहित्य अकादमी पर जिसने शहर की इस अजीम हस्ती को कश्ती को कभी किनारे नहीं लगने दिया और कीचड म फसाये रखा। अकादमी ने उन्ह आज तक सम्मानित नहीं किया। अकादमी हमेशा पक्षपात करती है। प्रतिभाओ का दमन करती है उनका मान-मर्दन करती है और

साहित्यकारों के अधिकारों का हनन करती है। हम अकादमी को बता देना चाहते हैं कि जनता का साहित्यकार किसी अकादमी-वकादमी के सम्मान का मोहताज नहीं होता। जनता उसे जो सम्मान देती है वही उसका असली सम्मान है।'

इतना धासू भाषण सुनकर लल्लू 'चुगलिया' भला कैसे चुप रहता। उसने दहाडते हुए कहा—मित्रो! बजरबट्टू हमारे आदर्श हैं। इनके सम्मान में किसी ने रोडा अटकाया तो हम सारी रोड्स ब्लॉक कर देंगे। ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। मूल मुद्दे पर आते हुए चुगलिया ने चीखते हुए कहा—थैली भेंट करने के लिए धन की कमी नहीं आयेगी। हम टेढी अगुली से धन उगलवा लेंगे। शहर मे काला बाजारिये जमाखोर, रिश्वतखोर दलाल और ठेकेदार मर नहीं गये हैं। इनकी नस्ल अभी लुप्त नहीं हुई है। इनका टेटुआ दबाने की देर है। फिर तो भला हर महीने अभिनंदन समारोह का आयोजन करो।

तेरसिंह 'तिलचट्टू' ने चुगलिया की बात का समर्थन करते हुए अभिनन्दन समिति के पाँच साहित्यकार सदस्यों की एक उपसमिति बनाने का सुझाव दिया। उन्होंने इसे 'चंदा उगाओ समिति' का जामा पहनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि इस समिति को इसी वक्त एक बडा झोला टागकर अभियान पर निकल पडना चाहिये क्योंकि जो जोश अभी है उसमे ढील दी गई तो फिर वह ठंडा पड जायेगा। यह सुझाव कहीं 'मसानिया बैराग' साबित न हो, इसका भय तेरसिंह को भीतर ही भीतर कचोटने लगा।

बजरबट्टू का ज्येष्ठ पुत्र बागडबिल्ला जो अब तक कान लगाये सारी रामायण सुन रहा था चंदे के नाम पर चौंक पडा। उसने अध्यक्षजी से बोलने की आज्ञा मागी। सब एक स्वर मे बोले—हा, हा जरूर बोलो जी। हमने तो बुलाया ही इसलिये है कि आप अपने विचारों से हमे लाभान्वित करें। बागडबिल्ला बोलने खडा हुआ और कहने लगा—आप लोगो का जोश देखकर मैं कहीं अपना होश न खो दू। आपकी भावनाए बडी उच्च और महानता को छूने वाली हैं फिर भी मैं आश्वस्त करना चाहूगा कि परम पूजनीय पिताश्री बजरबट्टूजी को थैली भेंट करने के लिये आप परेशान न हो। पिताश्री का साहित्य साक्षी है कि उन्होने आज तक समाज के उपेक्षित वर्ग की सेवा की है। उन्होने हमेशा रक्त पिपासुओ, धर्म के पाखंडियो, जमाखोरो तस्करों, लठैतों, सटोरिया सूदखोरों, शोषको आदि को समाज मे उचित सम्मान दिलवाया। उन्होने इन वर्गों को श्रेष्ठ दानवीर धर्मवीर महावीर जैसा सम्मान दिलाने के लिये रात-दिन साहित्य साधना करके अभिनन्दन ग्रथो की रचना की। ये सभी अभिनन्दन ग्रथ आज देश के कर्णधारो के ड्राइग रूम से लेकर सार्वजनिक पुस्तकालयो तक की आलमारियों की शोभा बढा रहे हैं। इससे पिताश्री की शोभा में भी श्रीवृद्धि हुई है। वे जब भी इन वर्गों के प्रतिनिधियो से मिलते हैं तो उन्हे 'फाइव स्टार ट्रीटमेंट' मिलता है। हर

अभिनन्दन ग्रथ पर उन्हे इक्यावन हजार का लिफाफा भेट स्वरूप प्राप्त हुआ है। उसी का पुण्य प्रताप हे कि उनकी गूगी-बहरी-लगडी सतान भी आज करोडों मे खेलती है। हमारे दादा तो कौडी-कौडी के लिये तरसते थे लेकिन पिताश्री के इशारे पर करोडा रुपये बरसते हैं। पिताश्री का पैसा ब्याज से दोगुना-चौगुना-सौगुना हो रहा है। आप तो इस महान विभूति का अभिनदन करने की तैयारी करो। रुपये-पैसे की चिंता से मुक्त हो जाओ। चादी का कार्ड छपाओ। शहर भर म बाटो। ऐसा अभिनन्दन हो कि इतिहास मे लिखा जावे—'न भूतो न भविष्यति।'

बागडबिल्ला के भाषण के बाद सभी ने राहत की सास ली। समिति के सदस्यो को ऐसा लगा जैसे उन्होने कोई गढ जीत लिया हो। बजरबट्टू को दिये जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का प्रारूप तैयार करने का गुरुतर दायित्व बीरबल 'बेकारी' को सौंपा गया। बागडबिल्ला अपने पिताश्री का बायोडाटा साथ ही लेकर आया था सो 'बेकारी' को हाथा-हाथ थमा दिया। निमत्रण-पत्र का प्रारूप इसी बैठक मे फाइनल हो गया। सेठ घसीटाराम को अभिनन्दन समारोह का मुख्य अतिथि और अकादमी के अध्यक्ष साहिबराम के प्रखर विद्रोही साहित्यकार शतरजी बाबू को इस मौके पर अध्यक्षता के लिये आमन्त्रित करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। बागडबिल्ला ने इस मौके पर 'मीडिया पर्सन्स' को अविस्मरणीय गिफ्ट आइटम देने के बारे मे प्रचार सचिव पूगीलाल 'परवाना' को जिम्मेदारी सौंपी।

अन्तत वह स्वर्णिम अवसर आ गया जिसका बजरबट्टू और उनके मित्रो को इतजार था। टाउन हॉल रग-बिरगी फरियो और रोशनी से दुल्हन की तरह सजा हुआ था। अतिथि एव अन्य आगतुक महानुभाव पहुचने लगे। थोडी ही देर मे समारोह स्थल पूरा भर गया। इसी बीच शहनाई वादन और बाकिया वादन सुनाई दिया। यह बजरबट्टू जी के समारोह स्थल पर पहुचने का सकेत था। हॉल म प्रवेश करते ही करतल ध्वनि से उनका स्वागत हुआ। आयाजको को भरोसा न था कि समारोह म इतन लाग आयगे इसलिये उन्हाने तालिया की 'प्रि-रिकॉर्ड' कैसेट का भी इतजाम कर रखा था। गनीमत थी कि इसकी जरूरत नहीं पडी।

समारोह के सारे औपचारिक भाषण हो गये तो भूरेलाल 'बजरबट्टू' को अपने साहित्यिक जीवन के अनुभव सुनाने के लिये माइक्रोफोन पर आमत्रित किया गया। अपना नाम पुकारने के साथ ही वे अपनी सीट से उठे तो फिर तालिया बजीं। इस बार प्रि-रिकॉर्ड तालिया की कैसेट ने सोने म सुहागे का काम किया।

बजरबट्टूजी गद्‌गद्‌ थे। कहन लगे – मित्रो! आज मेरी जिन्दगी का सबस अधिक खुशी का दिन है। मैं फूला नहीं समा रहा। साहित्यकार के लिये, खासकर मुझ जैस के लिये जीते जी सम्मान पा लेना किसी स्वर्ग म स्थान पा लेने से कम कल्पना

नहीं है। मैंने अब तक देखा है कि कलम घिस्सुओ की मौत घिसटते-घिसटते ही हो जाती है। आज ऐसा अनुभव हो रहा है कि मैंने तीन धाम और सप्तपुरी की यात्रा पूरी कर ली हो। अब मैं चैन की नींद सो सकूगा।

आपने मेरी रचना प्रक्रिया के बारे मे पूछा। मुझे महापुरुषा की जीवनिया पढने का शुरू से ही चाव था। पिताश्री ने बही-खाते पकडा दिये और ताकीद की कि जो कुछ भी दुनिया का सार है वह इनमे है। बडा हुआ और हाश सभाला तो दुनिया बदली-बदली दिखी। महान आदर्श पुस्तक-पोथियो तक सीमित नजर आये। समाज को दो भागा मे बटा हुआ देखा। एक शोषक और दूसरा शोषित वर्ग। शोषित गरीब होते हुए भी इज्जत का हकदार और शोषक के पास सब कुछ होते हुए दुत्कार। मुझे दुत्कार पाने वाले वर्ग से हमदर्दी हो गई। मैंने कलम उठाई और महापुरुषा के सारे गुण और विशेषण दुत्कार पाने वाला के लिए प्रयोग करने शुरू कर दिये। दुत्कारे जाने वाले वर्ग को मैंने सम्मान दिलाने का बीडा उठाया और उनके लिये अनेक अभिनदन ग्रथ लिखे।

अपना उद्बोधन जारी रखते हुए बजरबट्टूजी ने बताया—मैंने टैगोर, पत निराला शरत महादेवी दिनकर, अज्ञेय का नाम खूब सुना। मने इनका साहित्य कभी पढा हो, यह मुझे याद नहीं लेकिन मैंने सुना कि प्रेमचद की आर्थिक दशा खराब थी। मिर्जा गालिब भूखा मरे। निराला प्रेमचद और मुक्तिबोध भी शायद हालात के शिकार रहे। उन्हाने आम आदमी का साहित्य लिखा जो पहले ही भूखा-नगा था। वह भला एक साहित्यकार को क्या देता। मैंने अपना रुख उधर मोडा जिनको समाज म सम्मान नहीं मिलता। मैंने उन्हे सम्मान दिलाया। इस तरह मैंने निर्बल को बलवान बनाया। इससे मैं भी बलवान और धनवान बना। बताइये क्या गुनाह किया? आज आदमी के पास दौलत नहीं हो ता टके की इज्जत नहीं होती। यही मेरी रचनाधर्मिता है।

कहानी, कविता, व्यग्य सस्मरण आलोचना तो आज का चलता छोकरा ही लिख लेता है लेकिन समाज के सबसे गलीच नीच गिरे हुए, उठाईगीरो गुर्गों और खुर्राट लोगों के लिये कौन अभिनदन और प्रशस्ति ग्रथ लिख सकता है? यह श्रम साध्य काम मैंने पूरी साधना और मनोयोग से किया। मुझे खुशी है कि कुछ नौजवान साहित्यकारा ने मेर काम और मेरे जीवन पर शोध कार्य करने का निश्चय किया है। मैं उन्हे तन मन और धन तीनो से सहयोग करूगा।

बजरबट्टू जी का भाषण लोगो ने पूरी तन्मयता से सुना तो आयोजको ने घोषणा की कि समारोह की समाप्ति पर वे मुख्य द्वार के पास हमारे कार्यकर्ता से देशी घी के लड्डुओ का एक-एक पैकेट लेते जाय। इस घोषणा पर फिर जोर-शोर से तालिया बजीं। मुख्य अतिथि ने बजरबट्टू जी को स्वर्णनिर्मित श्रीफल एक शॉल और एक लाख एक हजार एक सौ एक रुपये की थैली भेंट की। चम्पू चौरसिया ने आभार व्यक्त किया। ❑

फाइलो की शव यात्रा

देशभर म आजकल यत्र-तत्र-सर्वत्र फाइला की शव यात्राए निकल रही हैं। जानते हैं क्या? इसलिये कि जब से यह मुआ कम्प्यूटर युग शुरू हुआ है तब से फाइला के नष्टीकरण का अभियान चलाया जा रहा है। जहा देखो बस वहीं फाइला को स्वाहा किया जा रहा है। देखते ही देखते कागजी कायवाही युग का अत आ गया है। यहा जो जन्मा है उसका अत तो एक दिन निश्चित हे। हर चीज नश्वर है लेकिन इतना दुखद अत होगा, यह देखकर फाइले शाकाकुल हैं।

आज जब एक बडे दफ्तर की सैकडा फाइलो को बडे बाबू ने नाकारा घोपित कर उन्हे माचिस दिखाने के लिये चार अफसरा की कमेटी को बाहर खुले प्रागण मे बुलाया तो शेप फाइलों को यह दफ्तर श्मशान घाट सा लगा। उन्होने अपनी बरसो पुरानी फाइल बहना की चिता को अग्नि देने से पूर्व भावभीनी अतिम विदाई देने के लिये शोकसभा का आयोजन किया। आखिर वे इतने वर्षों तक इनके सुख-दु ख म साथ रही हैं ता उनका भी तो कुछ फर्ज बनता है ना। श्रद्धाञ्जलि सभा के बहाने शेप रही फाइला ने अपने अस्तित्व की लडाई की भावी रणनीति बनाने का भी निश्चय किया।

नया मुल्ला कुछ ऊची आवाज मे ही बाग देता है ना। एक नई नवेली फाइल गुस्से म तमतमाते हुए बोली—अगर हमने समय रहते कोई ठोस निर्णय नहीं लिया तो हमारा भी एक दिन यही हश्र होगा। हम भी इसी चौगान में उसी तरह स्वाहा कर दिया जायेगा जैसे कि दुर्घटनाग्रस्त विमान परखचो के साथ धरती पर धडाम से गिरकर मय यात्रिया के धू-धू कर नष्ट होता है। हमारा दाह सस्कार विधि-विधान के साथ आज तक नहीं हुआ। न कोई मत्रोच्चार न कपाल क्रिया। हमारी आत्माए हमेशा भटकती रहगी। शोक मे डूबी सभी फाइले खामोश थीं। एक तो उन्हे अपनी साथिनों की बेहूदगी के साथ अन्त्येष्टि होने का गम था तो दूसरी तरफ उन्हे अपने ऊपर भावी खतरा के मण्डराने का भय था। खतरे की कनफोड़ु घण्टी जोर-शोर से बज रही थी। नई नवेली फाइल की बातें सबको गौरतलब लगीं।

एक अनुभव भरी फाइल बोली—फाइल हमेशा स्त्रीलिंग होती है, हालांकि इसय दुर्गा जैसी शक्ति होती है लेकिन नारी जाति पर युगो-युगो से अत्याचार होते आये हैं। रामायण साक्षी है कि सीता को अग्नि परीक्षा से गुजरना पडा और महाभारत की द्रौपदी का चीर हरण हुआ। सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने अपने ही पुत्र का दाह सस्कार करने के लिये अपनी रानी को तडफाया। भण्डारनायके, गोल्डामायर बेनजीर और इन्दिरा गाधी जैसी राष्ट्रनायका के पथ मे हमेशा काटे बाय जाते रहे। इन्हें सिहासन पर कभी चैन से बैठने नहीं दिया गया। जयललिता के तो हाथ धोकर पीछे पड गये क्योकि उसने अपनी एक सहेली की थोडी सी मदद कर दी। नारी तो उत्पीडन के लिये ही बनी है शायद। फाइल जात की तो औकात क्या है। यह न किसी से बोल सकती है ना अपना घूघट खोलकर किसी के आगे अपना दुखडा रो सकती है। हम तो ऐसी जमीन हैं कि जिस पर जो भी आया अपने हल की लकीर खींच गया। हमारा कोई एक धणी-धोरी तो है नहीं। पचास खसम हैं हमारे।

बाई, यह शोक सभा है। कोई फिल्म की शूटिंग नहीं हो रही कि तुम कादर खा, राही मासूम रजा, दादा कोडके या कमलेश्वर के डायलॉग सुनाकर वाहवाही लूटती रहो। आज का मुद्दा अपने पक्ष म हवा बनाने का है। इक्कीसवीं सदी की चुनौतिया का मुकाबला करने और अपनी अस्मिता के सकट स उबरने का है। मझली फाइल ने बीच म टोकते हुए अनुभवी फाइल से मुद्दे पर अपना बयान देने की गुहार की।

विज्ञान एव टेक्नोलॉजी विभाग से हाल ही ट्रासफर हाकर आयी एक फाइल बीच में उछली जा अब तक दार्शनिक मुद्रा म सब कुछ हदयगम कर रही थी। वह बाली—हमे इस सच्चाई को तो स्वीकार करना पडगा कि फाइला का अस्तित्व मिटने वाला है। वह दिन तो लद गये जब आप किसी टेबल पर पडी खिलखिला उठती थीं, आपस मे किचर-किचर कर बोर या शोर किया करती थी और एक दूसरे की निंदा करते हुए अपने को विश्व सुन्दरी, राज्य सुन्दरी या जिला सुन्दरी समझते हुए अपने यौवन पर इठलाती थी। किसी बाबू या अफसर की वर्षों तक कोई चिडी न बैठने का यह अर्थ लगाती थी कि हम सबसे अलग काई बेगम या महारानी हैं। अब तो सबको एक हा भट्टी म जलकर भस्म होना है।

फाइल ने अपना बयान जारी रखत हुए कहा—अब चपरासी और बाबू सवर्ग की नई भर्ती पर रोक लग चुकी है। अब तो हम फ्लॉपी के पिटारे मे बद हो जायेंगी। इसकी चाबा अफसर क पास होगी। अब हमे 'कोड' का काढ होने वाला है। यह इसलिये होने वाला है कि हर कोई लल्लू-चप्पू हमे हाथ नहीं लगाये। वैसे हकीकत भी यही है कि इन चपरासी-बाबू जात के कुछ लोगो ने हमारी अस्मत का सौदा बहुत किया। पच्चीस-पचास रुपल्ली के लिये अपना ईमान खराब किया और हमारी इज्जत

दाव पर लगा दी। जो फाइल अपनी अहमियत पर इठलाती थी उनकी भी सरे आम इज्जत नीलाम हुई, यह किसी से छुपा नहीं। इन फाइला के कारण तो ऐसे-ऐसे दगल हुए कि कइयो का अमगल हो गया। इन फाइलो के कारण सम्बन्धा के कनेक्शन कट गये। दोस्त, दोस्त न रहा, भाई, भाई के खून का प्यासा हो गया, अफसर और मातहत मे तनातनी हो गई। हम फाइले क्या हुई झगडे की जड बन गई। अब हमारी हस्ती मिटने वाली है। आग का दरिया है और डूब के जाना है।

फाइल का बयान पूरा हो गया। वह चुप हो गई लेकिन माहौल को सच से साक्षात्कार करवाकर सबको उदास कर गई। वस्तुत यह सभा शोकाञ्जली के लिये बुलाई गई थी, इसलिये कोई एजन्डा तो था नहीं। कोई भी फाइल अपना मत रख सकती थी। इस अवसर का लाभ उठाने के लिये कम्प्यूटर विभाग की फाइल ने जब पख फडफडाये तो सारी फाइलो की नजर उसकी तरफ उठ गई। वह कहने लगी—बहनो। आपको अगर इक्कीसवीं सदी मे सही-सलामत पहुचना है तो मेरी कडवी बात सुननी होगी। हम सामती और ठाकुर सुहाती बातो से ऊपर उठना होगा। हमे अपना खोल बदलने के लिये तैयार रहना होगा। इसकी शुरुआत हो चुकी है। नया युग रगीनियो से भरा है।

ओ मेरी लाडो, इतनी भूमिका क्या बाध रही है, सीधे-सीधे पोइन्ट पर आ ना। हमें उत्तेजित क्यो कर रही है? हम तो तडफ रही हैं ओर तुम पानी की एक-एक बून्द टपका रही हो। एक उतावली फाइल ने बीच मे ही टोका।

यह टोकाटोकी एक बुजुर्ग फाइल को बहुत नागवार लगी तो उसने बीच म टोकने वाली फाइल को फटकारते हुए कहा—अबे ओ छिनाल! चुप कर। इसकी पूरी बात सुन। धीरज नहीं है तो अपने बॉस की रेक मे जाकर पडी रह। बडी आई पोइन्ट पर लाने वाली। अनुशासन नाम की कोई चीज बची ही नहीं। बुजुर्ग फाइल ने कम्प्यूटर विभाग की फाइल का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि बेटा अपना उद्‌बोधन जारी रख।

कम्प्यूटर विभाग की फाइल का मन खट्टा हो गया लेकिन उसने उस बुजुर्ग फाइल का मान रखते हुए अपने बयान का टूटा तार फिर जोडते हुए आगे कहना शुरू किया—*अब पछताए होत क्या जब चिडिया चुग गई खेत।* खैर, अब भी वक्त है कि हम सम्भल जाये। मेरे पास एक मसौदा है। आप सभी सहमत हो तो इसे अतिम रूप दिया जा सकता है। वैसे मैं विभिन्न मत्रालयो कार्यालया और विश्व बैंक तक घूम आई हू। मेरे जिगर पर न जाने कितने बडे-बडे महानुभावो ने अपनी चिडियाए बिठाई हैं। इसके बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुची हू कि हमारा मिट जाना राष्ट्रहित म है। हमारे कारण कई लोग आज दर-बदर भटक रहे हैं। कुछ कुर्सिया पर बैठ गये तो कुछ वहा

से धकिया दिये गये और कुछ जेलो मे धूनी ताप रहे हैं। आम आदमी भी दु खी है क्या कि हम सामने पडी होते हुए कुछ बोल नहीं सकतीं। घूसखोरिये अपना उल्लू सीधा करने के लिये हमारे फरियादी को कई तरह से तग करते हैं। कोई हमे कूडे का ढेर होने की सज़ा देता है तो कोई हमे खुर्द-बुर्द कर देता है। कोई हमारा महत्वपूर्ण दस्तावेज फाडकर दुश्मन को थमा देता है तो कोई लाइटर की लौ से जीते जी जला देता है। दु खा का पहाड हम पर टूट पडता है और हम अपने आसू रोती हैं। भगवान ने हमे चलने के लिये न पैर दिये हैं और न उडने के लिये पख। लाचार और विकलाग होकर अपनी किस्मत पर खून के आसू बहाती हैं हम।

उतावली फाइल ने एक बार फिर डिस्टर्ब किया। वह कहने लगी कि यार यह तो हम सब जानते हैं। आगे का रास्ता दिखाने की बात करो। कम्प्यूटर विभाग की फाइल इस बार निराश नहीं हुई। उसने हाथ से अपने लाल फीते हिलाते हुए उसे बैठ जाने का इशारा किया। कहने लगी—बहनो। आज जो अतीत है वह कभी वर्तमान था। आज जो वर्तमान है उसे अतीत होना है। आगे और पीछे की यही प्रक्रिया हमारे भविष्य का पाथेय है। 'पीछे देख-आगे बढ' यही तो हमारा मूलमत्र है। इस सिद्धात से हट जाने के कारण ही आज यह नौबत आयी। आगे काटो भरा रास्ता है और कीचड से भी सना है। हमें उस कीचड मे कमल की तरह खिलना है। विद्युत वेग के झटके सहने हैं।

उसने आगे कहा—तनिक धैर्य से सुनोगी तो इस सक्रमण काल मे भी अमृतपान का मजा आयेगा। जीवन और मरण के मार्ग म यह तो बसत पर्व है। आज हम फाइलो की जो दुर्दशा है उस पर रोना आता है। कभी-कभी हमारे कवर रूपी बाहरी परिधान कमीशनबाजो के शिकार हो जाते हैं। दो-चार बार हम इधर-उधर घूमकर आई नहीं कि नगी हो जाती हैं। किसी निकम्मे बाबू के हाथ पड गई तो वह हमे बिखेरकर रख देता है। हमारा हाथ कहीं तो पैर कहीं, मुह कहीं तो नाक कहीं। सारा हुलिया बिगाडकर रख देते हैं यह लोग। कोई बदतमीज चपरासी हमारे सीने पर पानी का झूठा गिलास उडेल देता है तो कोई चाय-कॉफी गिराकर हमारा जिस्म झुलसा देता है। फर्ज करो कि अगर कोई प्रोजेक्ट है तो उसके पूरा होते ही हम नाकारा घोषित कर दी जाती हैं। एकाउन्ट सेक्शन में हमारी जो चीर-फाड होती है और जितनी गालिया हमे खानी पडती हैं उसका दर्द किसी से छुपा है क्या। कहा तो हम नकचढी होकर वी आई पी ब्रीफकेश मे रखी जाती हैं और वी आई पी भी अपनी बहन-बेटियो से ज्यादा हमारी देखभाल करते हैं और कहा वे ही काम पूरा होते ही नुगरो के समान हमसे मुह फेर लेते हैं। नाकारा करके एक कोने मे दम तोडने के लिये फेक देते हैं। हमारी जगह कोई दूसरा होता तो इनकी गिरेबान पकडकर इन्हे धूल चटा देता।

और सुनो, हम जब नाकारा घोषित कर दिया जाता है तो चाहे सर्दी, गर्मी, बरसात कोई मौसम हो, हम सडती रहती हैं। दो कौडी का चौकीदार भी हमारी तरफ देखकर हसता है। वह भी मन ही मन सोचता है कि भला यह कूडा भी कोई चौकसी की चीज है! हमे चूर्ण की पुडिया बनाने लायक तक नहीं समझा जाता। पान खाये सैंया हमारो लेकिन हम उसके बीडे बधने लायक भी नहीं। हमे दीमक चाटती रहेगी लेकिन चाट-पकौडी वाले के पास नहीं जा सकतीं। हमारा तो सीधा दाह-सस्कार ही होगा। यही रूल है। सारी रुलिंग्स हम पर ही थोपी जाती हैं।

थोडा सा और सुन लो अन्यथा मेरे दिल की बात दिल में ही रह जायेगी। यह कहते हुए वह आगे बोली—हमारी हस्ती जब मिटने वाली है तो घबराना कैसा! मेरा मसौदा अपने स्वर्णिम भविष्य का रोशन चिराग है। आप कम्प्यूटर युग से डरिये मत। यह बिल्कुल वैसा ही मामला है जैसा फिजिक्स और मेथेमेटिक्स के स्टुडेंट के साथ होता है। इनसे जो डर गया वह मर गया और जो भिड गया वह भीड को चीरता आगे निकल गया।

फाइल ने मसौदे की मोटी-मोटी बाते बताते हुए कहा—कम्प्यूटर में फ्लॉपी का इस्तेमाल होता है। एक फ्लॉपी मे एक सौ फाइले इकट्ठी रह सकती हैं। इससे हमे एक दूसरे से बिछुडने या खो जाने का खतरा नहीं रहेगा। साथ रहने का मजा आयेगा। सारे कुटुम्ब-कबीले एक साथ बिना भेदभाव के रहेगे। ये जो 'सीक्रेट' और 'कॉन्फिडेशियल' फाइलें अपने आपको महारानिया और जन्नत की हूर समझती हुई तिजोरिया के डबल लॉक मे रहती अपने पर इठलाती फिरती हैं, उनका घमण्ड भी चूर हो जायेगा। सब एक ही बैरक मे पडी रहगी। सबसे बडा फायदा यह कि हम सर्दियो मे हीटर और गर्मिया म कूलिंग प्लाट का मजा ले सकेगी। रजी तो हमारे पास ही नहीं फटक सकती। आज हमारे सीने पर चाय, पानी पान की पीक के दाग लगाकर हम जिस तरह अपमानित किया जा रहा है उससे भी मुक्ति मिल जायेगी। अभी अपने जिगर पर जो गोंचू और भादू किस्म के लोग बैठकर पाप-पुण्य रचते हैं, उनसे छुटकारा मिल जायेगा। फ्लॉपी ही अब जीवन है। हमें नई जीवन शैली का स्वागत करना चाहिये। फ्लॉपी का जीवन जादूभरा है। सारा खेल बिजली पर टिका है। ऑपरेटर के हाथ म हमारी जिन्दगी और मौत है। ऑपरेटर ने हमें अगर 'सेव' नहीं किया और बिजली गुल हो गई तो हमारी जिन्दगी का चिराग भी गुल हो गया। ऑपरेटर हमारा सारथी है और हम पार्थ। एक बार हम फ्लॉपी से गायब हो गयीं तो वापस भी बुलायी जा सकती हैं। दुआ करो कि हमें फ्लॉपी मे प्रवेश मिले। यह प्रवेश हमारे लिये इस नरक से मुक्ति दिलायेगा और स्वर्ग में ले जायेगा। फाइल ने यह कहते हुए अपनी वाणी को विश्राम दिया। सभी फाइलों ने करतल ध्वनि से उस फाइल के भाषण का स्वागत किया। शोकसभा में भी जान आ गई। सबके चेहरे खिल उठे।

इतनी देर मे बाहर से चारो अफसर इन फाइलो के पास से गुजरे। उनकी बातो से लगा कि जिन फाइलो को नाकारा और कूडा करार दिया गया था वे पचतत्व मे विलीन हो गईं। यह सुनकर फाइलो के चेहरे लटक गये। इन फाइलो ने अपने से बिछुडी दिवगत फाइलो को दो मिनट का मौन रखकर भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। सभा विसर्जन से पूर्व सबसे सीनियर फाइल ने धन्यवाद देते हुए कहा कि आज हमे अपनी पुरानी साथिनों की जुदाई का गम जरूर है लेकिन हमे फ्लॉपी युग में प्रवेश करने की प्रसन्नता भी है।



अतिथि दानवो भव

भारतीय सस्कृति की सुगध विश्वभर मे फैली हुई है। क्यो न फैले आखिर इसीके कारण अतिथि को देव का सम्मान मिला है। कहा गया है कि 'अतिथि देवो भव । ' दूसरे मुल्क मे अतिथि को देव मानने वाले हमारे जैसे मूरख थोडे ही हैं। पोल की ऐसी खिचडी तो यहीं पकती है कि कोई अतिथि घर आया और हम उसके लिये पलक-पावडे बिछाने लगते हैं। घर मे चूहे थडिया करते फिरे या ता-थइया, लेकिन हम हैं कि उधार लेकर भी अतिथि के लिये मुर्ग-मुसल्लम पेश करेगे। ऐसा हर जतन करेगे कि अतिथि घर से रूठकर न जाये चाहे बीवी रूठकर पीहर चली जाये। वाह री सस्कृति तुझ पर वारि-बलिहारी जाऊ। अतिथि क्या हुआ मानो वह हमारा नकद जवाई हो गया।

भारतीय सस्कृति के चितरे यह भूल गये कि अतिथि मानकर हमने जिन्हे अपरम्पार प्यार और दुलार दिया वे ही हमारी दुकान बढाकर अपनी दुकान जमा बैठे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बधु अतिथि बनकर ही तो आये थे। देखा नहीं, कैसे हमारी आस्तीन के साप बन बैठे। ऐसे-ऐसे गुल खिलाय कि गाधी बाबा को उन्हे निकालने मे हिचकी आ गयी। मेरा अपना अनुभव भी यही कहता है कि अतिथि से तो दूर की राम-राम ही भली। मैं तो इस जीव से हमेशा बिदकता हू। अतिथि की आव-भगत का अर्थ है घर बैठे आफत को दावत देना, नींद बेचकर रतजगा मोल लेना और 'आ बैल मुझे मार' कहावत को चरितार्थ करना। कोई माई का लाल मुझे अतिथि के फायदे गिनवा दे तो मैं उसकी टाग के नीचे से निकल जाऊ और जीवन भर की सारी कमाई उसके नाम करदू। इसके विपरीत मैं अतिथि के कारण आने वाली आफतों को एक-एक करके गिनवा सकता हू।

चलो, मैं अतिथि के कारण आने वाली आफतों से आपका थोडा सा साक्षात्कार करा दू। बद महीने का मतलब समझते हैं आप? नहीं ना। इसे आप 'कम्युनिस्ट वीक' भी कह सकते हैं यानी महीने का आखिरी सप्ताह। नौकरी पेशा लोग इसका मतलब

खूब समझते हैं, विशेषकर वे जिन्हे 'ऊपर' की इन्कम का सहारा नहीं। तो मैं बता रहा था कि बद महीने के आखिरी दिन चल रहे थे। हमारे घर गाठ मे एक धेला नहीं था। आटे का पीपा चीं बोल गया। पडोस मे रहने वाले शर्माजी पर हमे वडा गुमान था। सोचा अभी एक मिनट मे उनसे उधार ले आयगे ताकि घर का उद्धार हो जाये। हमने आव देखा न ताव और शर्माजी का दरवाजा खटखटा दिया। दरवाजा खुला तो कोई अतिथि उनसे माथा मार रहा था। हमारा माथा ठनका।

वही हुआ जिसका खटका था। शर्माजी ने बात भी न सुनी। प्यार से टरकाते हुए कहा—लेखकजी, मेरे बडे भाग्य कि आप पधारे लेकिन आज बाहर से अतिथि आये हुए हैं इसलिये आप बुरा न मानें तो बाद मे मिल लीजिये। शर्माजी के बच्चे पर मुझे बहुत गुस्सा आया लेकिन उससे ज्यादा उसके अतिथि के प्रति भीतर ही भीतर जहर का गुब्बारा भर गया। शर्माजी तो वैसे बडे उदारवादी हैं लेकिन अतिथि के कारण ही इस मछली को पकडने के लिये हम अपना जाल नहीं फेंक सके। उनका अतिथि मुझे सफलता की यात्रा मे एक दीवार सा लगा। उनका सिर फोडने को जी चाहा लेकिन इसलिये विचार छोड दिया कि शर्माजी कहीं मेरे हाथ से हमेशा के लिये न निकल जायें।

मेरा अगला पडाव शारदा शरण राय का द्वार था। कॉलबेल का बटन दबाया। राय साहब की पत्नी ने दरवाजा खोला। दोनों मे नमस्ते का आदान-प्रदान हुआ। मैं कुछ कहता उससे पहले ही वह बोल उठी—साहब तो किसी गेस्ट के साथ बाहर गये हैं और शायद देर रात तक लौटेंगे। भाई साहब आप भीतर आये। चाय तो पीकर जाये। इच्छा हुई कि कह दू चाय नहीं जहर ला दो। यह मेहमान तो मेरी जान ही लेकर रहेगे। ऐसा मूड खराब हुआ कि फिर कहीं और जाने की हमारी हिम्मत ही टूट गयी। घर लौटा तो गृहिणी ने गालिया दे-देकर अपना गला खराब कर लिया। मैं उसे कैसे समझाता कि भाग्यवान, ये गालिया तुम हमे नहीं अतिथियो को दो जो हमारे घर की सुख-शाति म काटा की फसल बो रहे हैं।

एक बानगी और लो। दिल्ली मे मेरा एक दोस्त है चम्पालाल। बचपन का बालगोठिया चम्पू। बचपन से जवानी तक के हर दु ख-सुख का साझीदार। एक साथ कचे और गिल्ली-डडे खेले हैं हमने। मैंने सोचा रिटायरमेंट के अपने चद दिन और हैं तो जो पेशन मिलेगी उससे चम्पालाल के साथ कोई धधा सेट कर लूगा। एक दिन मूड बनाकर उससे मिलने चला गया। दरवाजा खुला तो उसका नौकर बाहर आया। मैंने परिचय दिया तो उसने बैठक मे बिठाया और भीतर चला गया। आप जानना चाहेगे कि भीतर से छनकर मेरे कानो मे क्या आवाज आयी? चम्पू की बीवी कह रही थी—अजी ये कौन सा गेस्ट है जो आपसे बिना अपोइन्टमेंट लिये घर चला आया?

चम्पू बोला—फटीचर है स्साला। मुफ्त की रोटिया तोडने आया होगा, मुझे मुर्गा समझकर फासने आया होगा, लेकिन इसे यह पता नहीं कि में फॉरेन रिटर्न हू जहा अतिथि को देव नहीं दानव समझते हैं। डार्लिंग, तुम कुछ बहाना बनाकर इसे नौ दो ग्यारह करो। आई डाट वाट अनइनवाइटेड गेस्ट। थू, मेरा सारा मूड सुबह-सुबह खराब कर दिया। इससे पहले कि चम्पू की बीवी मुझे घर से बाहर करने के लिये अपनी बत्तीसी खोलती, मैं ही उसका दरवाजा खोलकर बाहर हो गया। मेरे कानो के सारे कीडे झड गये। चम्पू पर पाश्चात्य सस्कृति का रग चढ चुका था। उसने भारतीय सस्कृति की फटी पुरानी पोशाक उतारकर फेक दी थी।

अतिम उदाहरण और सुन लीजिये। नौकरी करते-करते मेरी सारी नसे सड गई हैं। भरा-पूरा गबरु जवान था जब नौकरी मे आया। उस चमकते चेहरे पर आज गृहस्थी के बोझ और बेचैनियो से झुर्रिया पड गई हैं लेकिन प्रमोशन किसी काच मे भी दिखाई नहीं देता। एक दिन बीवी ने उकसाकर भेज दिया कि जाओ ओर अपने बॉस से उनके घर जाकर मिलो। अर्जी दो, आजिजी करो पैर पडो कुछ भी करो लेकिन प्रमोशन का प्रसाद लेकर ही लौटना। हिम्मत जुटाकर बॉस के बगले का फाटक खोला। कुत्ता भोका तो नौकर बाहर आया। हमने कहा—भाई भोलाराम सा'ब को बोलो कि लाचारचद कुछ अरज करने आया है। भोला जैसा गया वैसा ही बैरग लौटती डाक की भाति बाहर आया। बोला—मेम सा'ब ने बोला है कि गेस्ट आये हुए हैं। कोई डिस्टर्ब न करे। सा'ब आफिस आयें तब मिलना।

अब आप बताओ कि मैं क्या करू? इन अतिथियो के आगे कहा जाऊ? हम चोर वह सिपाही, हम शिकार वे शिकारी वाला किस्सा हो गया। हमारी मजिले—मकसूद पर ये अतिथि लट्ठ मारने के लिये पहले से मौजूद हैं। कहने को बहुत कुछ है लेकिन आप बुरा मान जायगे। अतिथियो के किस्से आपने भी सुने होगे। किसी घर म जवा बहू-बेटी हो तो यह उन पर डारे डालने लगते हैं। अतिथि बनकर घर की इज्जत और माल-असबाब पर डाका डालने से ये चूकते नहीं। अब भी अगर आपको अतिथि देव के समान लगे तो भई, आप इन्हें दिन-रात पूजो। कुकुम का टीका लगाकर ठाकुरजी की जगह विठाओ।

जीवन को सुखमय समृद्धिशाली और मगलमय बनाना हो तो मेरा कहा मानो। अतिथि को देव नहीं दानव जानो। अतिथि दानवो भव । मेरा गुरु मत्र आजमाकर देखो, जिन्दगी का मजा आ जायगा। अतिथि दुम दबाकर न भागने लगे तो मुझसे आकर मिलना। मेरी बात अगर रच भर भी झूठ निकले तो मैं जीवन भर के लिये भगवा पहन लूगा। ❑

तरकीब सिह का साहित्य सृजन

नव वर्ष की शुभकामनाए देने वाला का मेरे घर ताता लगा था। डाकिया जिस मुद्रा म मेरे सामने चिट्ठियो का पुलिदा लिये हुए खडा था उसे देखकर मैं समझ गया कि वह बिना बख्शीश लिए कृष्ण मुख नहीं करेगा। मैं आगतुको का हाथ मिलाकर अभिवादन स्वीकार कर रहा था। डाकिया बहुत उतावला दिखा। 'क्या जाऊ सा'ब।' उसके कहने म मुझे तल्खी महसूस हुई क्योकि प्रतिदिन वह ऐसा कहने की बजाय पत्र फककर चले जाया करता। आज उसके अन्दाज से मैं उसकी भावना समझ गया। दहलीज पार कर मैंने उसके हाथ मे मुद्रा राक्षस थमाया तो उसका निचुडा चेहरा खिल उठा। 'धन्यवाद सा'ब।' के सबोधन के साथ वह विदा हुआ। मैं मुडकर भीतर आने को ही था कि तरकीब सिह आते दिखाई पडे।

तरकीब सिह के चेहरे पर हवाइया उडती लगी। यह पहला अवसर था जब वे मुह लटकाए हुए आए। मैंने तो उन्हें हमेशा खिला-खिला चेहरा लिए ही देखा है। इस रूप मे देखकर मुझे अचरज हुआ। आज उनके हाथा मे अपनी रचनाओ की सम्पादकीय स्वीकृतियो के पत्र नहीं थे जिसे वे उछल-उछलकर मुझे दिखाते और अपनी लेखनी का बखान करते। दरअसल तरकीब प्रात के गिने-चुने फीचर लेखको मे से एक हैं। वे प्रतिदिन एक लेख किसी न किसी पत्र-पत्रिका को पोस्ट करके ही स्नान और भोजन करते हैं। वैसे मे ऐसे कवि को भी जानता हू जो एक कविता रोज लिखते हैं और गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स मे नाम दर्ज कराने के लिए तडफ रहे हैं परन्तु तरकीब सिह नाम से ज्यादा दाम को महत्व देते हैं। यही बात है कि चार-पाच हजार रुपये महीने का जुगाड तरकीब सिह के लिए बाए हाथ का खेल है जबकि कवि महोदय फटीचर ही रहते हैं।

तो जनाब मैं तरकीब सिह की उदासी की चर्चा करते-करते उनके व्यक्तित्व पर चला गया। छोडिए उनके व्यक्तित्व का शेष भाग आगे बताऊगा। मैंने उनसे जानना चाहा कि नव वर्ष पर उन्होने अपनी सूरत क्यो बिगाड रखी है? 'फुल मून' की तरह

चमकदार उनका चेहरा ग्रहण ग्रसित क्यो लग रहा है? इस खिलते चेहरे पर लालिमा की जगह कालिमा क्यों है? मेरा इतना पूछना हुआ कि वे फूट पडे। 'अजी सा'ब क्या लालिमा आए, हम तो लुट गए, कगाली म आटा गीला हो गया, धधा ही चौपट करगे ये प्रकाशक।' ये उत्तर देकर वे चुप हो गए। ऐसा लगा कि कहीं उनकी आखो म अश्रु गगा न उतर आये।

'यार, कुछ बताओ भी। क्यो पहेलिया बुझा रहे हो? प्रकाशको पर क्या बरस रहे हो? मैंने इन्हे कुरेदा। प्रकाशको-सम्पादको को साष्टाग प्रणाम करने वाले, प्रशस्ति गान सुनाने वाले और आए दिन पुष्पाहार-पुरस्कार से सम्मानित करने के लिए उतावले दिखने वाले तरकीब सिह कहने लगे- 'यह साल तो हमारी किस्मत पर दो पत्थर और मार गया। दो हिन्दी साप्ताहिक पत्रिकाओ ने तो अपने प्रकाशन स्थगित कर दिए हैं। स्थगित करने का मतलब अतिम 'राम-राम' ही समझो। रेगिस्तान का जहाज ऊट इतना बडा जानवर है कि उसका कोई मुकाबला नहीं, लेकिन उसकी टाग खराब होने के बाद उसको खत्म ही समझो। खुद भी दु ख पाता है और स्वामी को भी दु ख देता है। इससे छुटकारा तब मिलता है जब वह मर जाता है। यही स्थिति हमारी है। पहले जो प्रकाशन बन्द हुए वे आज तक वापस शुरू नहीं हुए तो ये क्या होगे। अपना दो-चार सौ रुपये का जुगाड हो जाता था लेकिन अब तो जुगाली करने से भी गए।

तरकीब सिह नमक के गुणो से लेकर डबलरोटी कचोरी मूगफली से मशरूम तक, केले से अनार के दानो तक फल-सब्जी, पशुधन, वन जिन्दा-मुर्दा सभी चीजो पर यानी लोक साहित्य से लेकर वर्तमान साहित्य तक वे ऐसी-ऐसी रचनाए लिखते हैं कि विषय-विशेषज्ञ और विद्वान भी एक साथ इतना ज्ञान-विज्ञान आत्मसात् नहीं कर सकते। पर्यटन कला चित्रकला, फिल्म, पुरातत्व, युवा जगत बाल जगत, महिला जगत सभी कॉलमो मे वे छाए रहते हैं। हिन्दुस्तान की तमाम पत्र-पत्रिकाओ म इनकी रचनाए धडल्ले से छपती हैं रगीन पारदर्शियों और चित्रो के साथ।

गले मे कैमरा लटकाए वे हर समारोह मे पहुच जाएगे चाहे रविशकर का सितार वादन हो चाहे किसी टटपूजिए नेता का भाषण खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारभ हो या पशु मेले का समापन पर्यटन समारोह हो या गणों का मेला- कहने का अर्थ यह कि तरकीब सिह की उपस्थिति वहा अनिवार्य है जहा थोडी सी भी गुजाइश है। इन्टरव्यू को आलेख मे और इसको उलटने की तरकीब वे खूब जानते हैं। शायद इसी महारथ के कारण उनका नाम तरकीब सिह पडा हो। जिन दिनो समारोह नहीं होते उन दिनों वे किसी पुस्तकालय मे बैठे नोट्स लेते दिखाई देंगे। इनकी राइटिंग माशा अल्लाह! लिखे मूसा पढे खुदा पर वे टकणकर्ता से अपने लेखन की सलवटें दुरुस्त करा लेते हैं। लेख लिखने की उनकी अपनी शैली है। किसी भी विषय पर लेख हो

कोई लेखक हो, कोई भी पत्रिका हो या समाचार पत्र, जो लेख छपा वह उन्हीं का होता है। कैंची से काटा और उस कतरन को अपनी फाइल मे चस्पा किया। समय, काल, परिस्थितिया तो एक–सी नहीं रहतीं। एक ही विषय के तीन–चार आलेख इधर–उधर की पत्रिकाओ में अक्सर छपते हैं। थोडा चिया ने दिया थोडा मियां ने और तरकीब सिह का काम निकल गया। बरसा से इसी तरह उनका काम चल रहा है, लेकिन मजाल है कि किसी ने उन पर रचना चुराने का आरोप लगाया हो। यही तो है तरकीब सिह का कमाल। उत्कृष्ट स्तर का टकण रगीन पारदर्शिया चित्र, सुन्दर लेटर पैड रगीन लिफाफा हो तो फिर रचना देखने और चयन करने वाले सम्पादक को और क्या चाहिये। एक महीने मे 30–31 दिन होते हैं और हर महीने अगर उनकी दस–बारह रचनाए भी स्वीकृत हो जाए तो चादी ही चादी। तरकीब सिह की कोई रचना और ट्रासपेरेन्सी भारी भरकम भुगतान वाली 'हाउस जर्नल' मे लग जाए तो पौ बारह। एक महीने की माथापच्ची एक ही दिन मे निहाल कर देती है। यह तो तरकीब सिह भी जानते हैं कि बडे आदमी की आड मे रचना जल्दी छपती है। वह बडे–बडे प्रतिष्ठित सगीतकारो कलाकारो गायको के साक्षात्कारो को लेखो मे बदल देते है। फिर भला वे क्यू नहीं छपेगी। ऐसी रचनाओ का कोई कॉपीराईट तो है नहीं फिर किसका डर। यही फार्मूला वे बडे–बडे ऐतिहासिक शहरो और देशों के बारे मे लेख लिखने मे अपनाते हैं। तरकीब सिह का व्यक्तित्व बेमिसाल है। उनके बारे मे कहने को तो कई बाते हैं पर मेरी भी तो कुछ मर्यादाए हैं।

हा, तो तरकीब सिह दो पत्र–पत्रिकाओ के स्थगित होने का मर्शिया पढ रहे थे। मैंने उन्हे सात्वना दी कि भाई स्कोप इससे कम नहीं हो जाता है। नई पत्रिकाए निकलेगी तन शुरू हो जाना। वे बडी सवेदना के साथ बोले– सा'ब आप जानते नहीं कि 'बडी मुश्किल से होता है चमन मे दीदावर पैदा' यानी जितनी जमी–जमाई दुकान मे धधा होता है उतना धधा नये मे कैसे सभव हो सकता है। फिर जितनी क्वालिटेटिव चीजे बद होती हैं वैसी नयी चीजे मार्केट मे नहीं आतीं।'

मैंने उन्हे समझाया कि वे जितने चिन्तित हैं वैसी कोई बात नहीं है। एक नई पत्रिका शुरू हुई है। फिल्म पत्रिकाओ की बाढ आ गई है। सत्य कथाओ पर आधारित पचासा नई पत्रिकाए निकलने लगी हैं। महिला पत्रिकाओ का स्कोप भी बढ गया है। अग्रेजी पत्र–पत्रिकाओ मे भी भारी गुज़ाइश है। इनमे तो अपनी रचनाओ का जाल फैलाया जा सकता है।

पहले तो तरकीब सिह ऐसे भर्डके जैसे मैंने बैल को लाल कपडा दिखा दिया हो लेकिन दूसरे ही क्षण वे टाट खुजलाते बोले– 'वाह! आपने आज पते की बात कही। अच्छा किया कि अग्रेजी पत्र–पत्रिकाओ की तरफ आपने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

अग्रेजी पत्र-पत्रिकाआ म छपने का मजा भी कुछ कम नहा है। सोचता हू किसी इगलिश टीचर को अपने यहा ट्रासलेटर के पद पर रख ही लू। यह कहकर वे मेरा मुह ताकने लगे।

तरकीव सिह कहन लगे- 'जहा तक फिल्मी और सत्य कथाओं की बात है, इन दिना मैं यही काम कर रहा हू। ऐसे पच्चीस आलेख टकण के लिये दे रखे हैं।'

यह सुनकर मेरा माथा ठनक गया। अब तरकीब सिह और क्या गुल खिलाएगे, मैं इसी सोच मे डूब गया। मेरे को जब खोए देखा तो तरकीब सिह ने वास्तव म मेरे विचारा पर एक पत्थर मारकर जगाया। वे बोले- 'वैसे मैं आजकल कहानी, कविता, व्यग्य, आलोचना जैसे विषया पर भी गम्भीरता से सोच रहा हू। आपका क्या ख्याल है? क्या मैं अर्नेस्ट हेमिग्वे, फ्रेंज काफ्का, गुलेरीजी, अज्ञेय, शरत, मन्टो, प्रेमचन्द की तरह का लेखन नहीं कर सकता? मैं भी तो सघर्षशील हू? मेरी कविताए भी टैगोर, दिनकर, पत निराला, मुक्तिबोध महादेवी की तरह आने वाले समय में जनप्रिय हो सकती हैं।'

तरकीब सिह के मुख से यह सुनते हुए मेरे मस्तिष्क पर चिन्ता की लकीरें उभर आयीं। हे भगवान! क्या अब ये महान साहित्यकारो की रचनाआ को उलट-पलट करेंगे। मैंने हाथ जोडे और तरकीब सिह के सामने एक दास की भाति खडे होकर गिडगिडाया- 'प्रभु,सब कुछ कीजिए परन्तु साहित्य मे कोई स्कोप मत तलाशिये अन्यथा अमर साहित्यकारो की आत्मा बहुत कष्ट पायेगी।' मेरा कहना उन्हे इतना नागवार गुजरा कि वे चलते बने पर यह कहते-कहते कि अब देखना तरकीब सिह का साहित्य सृजन और फिर बताना कि तरकीब मे क्या कमी है जो आप उसे कमतर आकते हो। ❑

अभी आप इतजार कीजिए

भारत एक विशाल देश है। यह जितना विशाल उतनी ही यहा की समस्याए। यहा आदमी की अपनी कोई न कोई समस्या है बल्कि यू कहना चाहिये कि आदमी यहा खुद एक समस्या है। अब हर आदमी की समस्या तो हल होने से रही, लेकिन साहब आदमी है कि अपनी समस्या लिये कभी इधर और कभी उधर माथा मारता फिरता है। इसके विपरीत सरकार एक एव समस्याओ का निराकरण करने वाले मुट्ठी भर अफसर और कर्मचारी। कहा तक समस्याए निपटाए। बेचारे समस्याओ के मारे। सच पूछो तो वे समस्याओ के बोझ तले ऐसे दबे पडे हैं कि बस पूछो मत। बहानों से जनता को बहलाते हैं अन्यथा उनका दम घुट जाए। बहाने बनाना किसे अच्छा लगता है लेकिन साहब, बेचारे मजबूर हैं। उनकी मजबूरी को यह पब्लिक भला कभी क्या समझेगी।

अब तो बहाने भी पुराने पड चुके हैं। आउटडेटेड हो चुके हैं। कोई बहाना बनाओ कि जनता खाने को दौडती है। चलताऊ बहानो की 'चलत' कम हो गई है। हर चीज की एक उम्र होती है। अब बहाने भी बूढे हो गये हैं। लाठी लेकर भी नहीं चल सकते। पीडित सज्जन भी इतने चालू किस्म के हो गये हैं कि कोई बहाना उनके आगे चलता ही नहीं। खट से टोक देते हैं – अमा, कोई ढग का बहाना तो बनाओ ऐसे कैसे टरका रहे हो।' मुह फट लोग तो छाती के सामने ही धमाल करने लगते हैं। कुल मिलाकर इन पुराने बहानो ने सरकार और सरकारी अधिकारियो-कर्मचारियो की बोलती बद कर रखी है। जनता भी जानती है कि काम तो न होना है और न होगा परन्तु कहने से क्यू चूके। पब्लिक को चलाना अब टेढी खीर हो गई है। यानी पब्लिक है ही कुछ खडूस किस्म की कि न खुद खाती है न किसी को खाने देती है। ऊपर से सिर खाने आ जाती है। वे बेचारे बहाने तलाश करते-करते थक गये हैं।

एक दिन दफ्तर के सारे लोग दु खी हो कर बडे साहब के चेम्बर में आ धमके। साहब वी आई पी विजिट निपटाकर लौटे ही थे।

'साहब, पब्लिक बहुत परेशान करती है। कहती है कि हमारा काम करो। हमने खूब समझाया कि साहब दौरे पर हैं, साहब की तबियत नरम है, मौसम अभी गरम है, फाइल साइन म पडी है।'- बडे बाबू ने साहब को बताया। छोटे साहब ने देखा कि बडे बाबू सारी क्रेडिट अकेले ही ले रहे हैं तो बीच म बात काटते हुए बोले - 'सर, मैंने भी कई बहाने बनाये। मसलन, साहब बाथरूम मे हैं, साहब मीटिंग मे हैं, साहब की भैंस खो गई है, साहब का कुत्ता बीमार है, साहब बहुत अच्छे हैं, काम करना चाहते हैं लेकिन वी आई पी विजिट इतनी होती हैं कि उन्ह चैन ही नहीं मिलता, 108 डिग्री बुखार म भी फाइले घर बैठकर निपटाते हैं। मैंने तो यहा तक कहा कि पुराने साहब फाइले साथ ले गये हैं, उन्ह वापस मगवाया जा रहा है, फाइले तेजी से निपटाने का अभियान चलाने का कार्यक्रम भी 'फाइनल' हो चुका है लेकिन कम्बख्त यह पब्लिक कुछ समझती ही नहीं। रोज दफ्तर का चक्कर लगाने आ जाती है। इस पब्लिक के पास और कोई दूसरा काम नहीं है शायद।'

दरबान कौन सा छोटे बाप का बेटा था जो चुप रहता। वह भी बोला - 'सा'ब, पब्लिक बहुत खराब है, उसका माथा फिर गया है। लडने को आता है। हमने दो-चार का गिरेबान पकडकर बाहर धकेला। बोला कि हम ऊपर तक जायेगा। सा'ब हम को गुस्सा आ गया तो एक-दो की धुलाई भी कर दिया। पर सा'ब औरत जात का क्या करे। बूढा-बूढा औरत जात इधर को चक्कर लगाता है। कोई पेंशन मागता है, कोई जमीन का कब्जा मागता है, कोई झगडा-टटा से छुटकारा मागता है। हम तो इन समस्याओ के खातर सुन-सुन के बेहाल हो गया है, सर। कोई बहाना नहीं सूझता।'

बडे साहब ठहरे एक नम्बर के काइया। ऐसे हार मानने वाले नहीं थे। नई-नई योजनाए और कार्यक्रम बनाने म नम्बर वन। ऊपर तक धाक थी। धेले भर काम उन्होंने कभी किया नहीं। सब को इशारे से शात किया ओर एक गिलास पानी पिया। अब लगे व्याख्यान देने - 'मित्रो समस्याए शाश्वत हैं और हमे भी सलाम ठोकने वालो की दरकार रहती है। यह समस्या इतनी बडी नहीं है जितनी पब्लिक की समस्याए हैं। सबको मैं एक कार्यक्रम देता हू-'मथन।' मथन कार्यक्रम का अर्थ है दिमाग पर जोर दो और हल ढूढो। दफ्तर मे अभी चार घटे कोई काम नहीं किया जाये। टोपीराम को दफ्तर के मेन गेट पर बिठा दो और उसे कहो कि पब्लिक का कोई भी आदमी आये तो उसे टोपी पहनाकर रवाना करो। कहो कि भीतर 'शोक सभा' चल रही है। अगर कोई काम है तो कल आना। इस चार घण्टे में जो भी कर्मचारी या अधिकारी 'आउट डेटेड' बहाने के बदले नायाब बहाने सुझाएगा उसे यह दफ्तर सम्मानित करेगा। प्रशस्ति-पत्र और नकद पुरस्कार दोनों की व्यवस्था होगी। आप लोग अपनी-

दीजिए। उसम बाधा मत डालिए वरना उनकी और उनकी फाइल दोना के पिटने की पूरी-पूरी आशका है। इतना ही कहना काफी है सर, कि 'इतजार कीजिए, वी आई पी विजिट होने दीजिए।'

बडे बाबू ने छोटे साहब की बात का समर्थन किया और बताया कि कर्मचारी वर्ग की भी यही राय है तो सभा मे करतल घ्वनि हुई। बडे साहब इस बात से खुश थे कि उनका 'मथन कार्यक्रम' हिट हो गया। उन्होने छोटे साहब से रुकने को कहा और शेष सभी को अपने अपने घर जाने के लिये छुट्टी दे दी। उन्होने सक्षिप्त भाषण मे बधाई देते हुए उम्मीद जाहिर की कि अब कर्मचारी निराशा का परित्याग कर उत्साह के साथ दफ्तर आयेंगे। जब सभी कर्मचारी चले गये तो बडे साहब ने छोटे साहब को हिदायत दी कि आप उन चार 'बीमार' कर्मचारियो के ट्रासफर आर्डर टाइप करवाकर हस्ताक्षर के लिये घर ले आये। बेचारे 'काम के मारे' पुरस्कार का इतजार कर रहे होगे। 

शभूजी की सालगिरह

शभू दादा आजकल अखवारो और टी वी पर 'आजादी के पचास वर्ष' पर होने वाले जश्न को लेकर उधेडबुन मे हैं। दादा की उम्र भी पन्द्रह अगस्त' 97 को पचास वर्ष हो रही है। दादा चाहते हैं कि उनकी इस सफलता पर भी कोई जश्न हो। हमने दादा को सुझाव दिया कि जब सारा देश जश्न मना रहा है तो वह ख्वामखाह क्यो अलग से खर्चा कर रहे हैं लेकिन हमारी बात उनके गले नहीं उतर रही। दादा ने कहा कि वे भी अपने जीवन की उपलब्धियो पर एक शानदार सेमिनार करना चाहते हैं।

एक दिन सुबह-सुबह अखाडे मे दण्ड पेलने के बाद वे हमारे यहा आ धमके। हम मीठी नींद मे सो रहे थे लेकिन उन्होने दरवाजा खटखटा कर जगा दिया। हमने अपनी मेम साहब को जगाते हुए कहा- 'भागवान देखो दुधिया आ गया है।' हमारी घरवाली ने भी कोई कच्ची गोलिया थोडे ही खेली थीं जो अपने आराम मे खलल डालती। पलटकर कहा- 'दूधिया तो दूध देकर कभी का चुका कोई भूत दिखता है जो इतने सवेरे-सवेरे टपक गया है।' हमने अनुनय विनय कर भागवान को ही दरवाजा खोलने को कहा। दरवाजा खोलते ही सामने शभू दादा मूछो पर बट मारते दिखाई दिये। काले भैंसे जैसा रग और बदन बिल्कुल भूत जैसा ही लगा। शभू दादा ने ही पहल की- अजी साहब सो रहे हैं क्या। उन्हे समझाया करो कि शरीर और मन को स्वस्थ रखना है तो थोडा व्यायाम करे, दौड लगाये दण्ड पेले और सवेरे सूर्य उगने से पहले जागे।' भागवान का मूड ही खराब हो गया। भगवान भजन के समय यह भैंसा सुबह-सुबह कहा से आ गया। न राम-राम न कोई बात करने का सलीका। आते ही मुफ्त की सलाह बाटने लगा। वह पैर पटकते आई और पानी का भरा गिलास हमारे ऊपर उडेलते हुए बोली- 'लो कर लो बात। वो काला भैंसा गैंडा, डाकू टाइप का आदमी आया है। शभू दादा बता रहा है अपना नाम। जरा सभल के जाइयो वरना ये एक हड्डी पसली का शरीर हाथ मे लेकर बैठ रहोगे। सभलकर बात करियो। ऐसे दादा-वादा लोगो से मुह मत लगना। बाहर ही खडे-खडे निपटाओ और चलता

करो।' भागवान का मूड खराब देखते हुए हम चुपचाप उठे, हाथो में पानी लेकर मुह पोता और तौलिए से पोंछा।

शभूदादा भी कोई कम नहीं थे। गवारू जूते पहने ही बैठक मे आ धमके और सोफे पर बैठ गये। साफा जमीन चाट रहा था और चू-चू बोल रहा था। सोफे वाले कोई दो सौ किलो वजन के आदमी का ध्यान रखकर सोफा थोडे ही बनाते हैं। हम सोचने लगे कि यह मुसीबत आज कहा सुबह-सुबह गले आ पडी, फिर भी शालीनता से हमारे मुखमण्डल स बोल निकले- 'आओ शभूदादा, आज तो बडी कृपा की जो हमारा घर पवित्र किया। फरमाइये, क्या सेवा करु?'

दादा ने जैसे पहले ही प्लान बना रखा था सो हमारे सामने रख दिया- गुरु, नाश्ता यहीं लगे। फ्रिज म फल तो रखे ही होगे। दूध भी आ चुका होगा।' हम सकपकाये लेकिन कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई। आगे कोई दफ्तर का मातहत नहीं बल्कि शभूदादा थे। जो कह दिया वही आदेश और आदेश टालने का मतलब सामने वाले इसान का मटियामेट। दादा की धाक दूर- दूर तक। दुकानदार से नेताओ तक उनके आगे रिरियाते हैं। अब क्या हो कुछ भी तो बचाव सभव नहीं था। हमने हुक्म को आगे सरकाया- भागवान, शभूदादा के लिए फल और दूध ले आओ। मेम साहब ने दूर से हीं आखें दिखाई। वह शायद हमारी बेवकूफी पर नाराज थी कि हमने दादा को घर म घुसने ही क्यो दिया। अब उसे कौन समझाये कि ये दादा लोग किसी के कहने से कब रुके हैं।

एक गिलास मे दूध और कुछ अगूर एक प्लेट मे रखकर भागवान ले आयी। दादा देखते ही भडके- गुरु, दादा की अगवानी ऐसे ही करोगे क्या? इतना सा दूध और अगूर तो मेरा बेटा ही उठाकर बाहर फैक देता है। अतिथि धर्म को ऐसे ही निभाते हो क्या। कजूसी करके कोठार भर रहे हो क्या। बच्चो के साथ तो फिर बडी ज्यादती करते होगे आप। एक किलो दूध से कम तो मैं हाथ ही नहीं लगाता और इतने ही फल एक नाश्ते मे लेता हू तब जाकर बाजुओ मे थोडा जोर आता है। खाऊ-पीऊ नहीं तो आपके मोहल्ले की हिफाजत कैसे कर पाऊगा। हफ्ता वसूली क्या छोडी आप लोगो ने हमारी आन से छेडकानी करना शुरू कर दिया है। दादा की बात सुनकर हमारी बोलती बद हो गई और उठकर पूरा भगोना दूध और फ्रिज म रखे सारे फल उठाकर शभू दादा के आगे ला पटके।

शभू दादा ने पहले दूध पीया ओर फिर सारे फलो पर हाथ साफ किया। हमारे दिन भर के दूध का सफाया। अब दूध के लिये बच्चे बिलखें या हम चाय के लिये चिक-चिक करे उससे शभूदादा को क्या। और वह जो फल उदरस्थ कर चुके हैं वे तो हमारे आने वाले मेहमानो के लिये एक सप्ताह भर तक काफी थे।

आज हमे अपनी भूल का अहसास होने लगा। हमने ही एक दिन दादा से बेवजह बात कर ली थी। तब दादा ने हमसे पूछा था कि आजादी की पचासवीं वर्षगाठ का क्या लफडा है। हमारा ही दिमाग फिर गया था कि उस सिरफिरे से सिर खपाते हुए कह आये थे कि कभी घर आ जाना सब समझा देगे। आज उसने हमे समझा दिया कि दादा के घर आने का क्या मतलब होता है।

अब दादा बोले– 'हा, गुरु अब बताओ आजादी के पचास बरस अपुन के भी पूरे हो रहे हैं तो क्या हम भी कोई सेमिनार कर?' वह पगलाया सा बोला– सेमिनार का मतलब समझे नहीं क्या। अजी वही, कुछ भाषण-कुछ चाटन। अपने अखाडे वाले टट फ्री लगवा दगे। माइक आ जायेगा। नेताजी कार की झण्डी लहराते हुए पहुच जायेगे। आप सचालन कर लेना। यह अपुन के बस की बात नहीं। मालाए ले आयेगे। भाषण भी हम दे दगे। देखा नहीं गवली भाई सा'ब भी अब जोरदार भाषण देते हैं। हमारी आजादी के पचास वर्ष का मामला है तो जश्न भी जोरदार होना चाहिए कि नहीं।

हम बोले– सेमिनार तो किसी विषय विशेष को लेकर होता है। आप क्यो और किस विषय पर सेमिनार करेगे?' दादा दहाडे– अरे गुरु तुम भी निरे वो ठहरे। विषय बना दो वही बन जायेगा। 'शभूदादा की आजादी के पचास बरस' यही विषय रख दो। सब पट्ठे अपने आप बोलेगे। हमने उन्हे जीने के सारे दाव-पेच सिखाये हैं। मौत से डरने की बजाय मौत से लडने गुर सिखायगे। पचास साल मे हमने जितनी बूथ केप्चरिंग की, गरीबो मे दारू बाटी, नेताओ की हिफाजत के नाम पर कइया के हाथ, पाव दात तोडे, उन सबका लेखा-जोखा बता देगे। अब हम इसी मौके पर अपनी आजादी की दूसरी पारी की घोषणा कर देगे। अब साले कौन इन नेताओ की गुलामी करे। अपना खून बहा-बहाकर सारा शरीर राणा सागा हो गया है। अब पके योद्धा बन गये हैं। खुद ही मैदान फतह करेगे। देश की सेवा करेगे। जिन लोगो के टेटुए दवाये उनसे क्षमा मागने का समय आ गया है। अब हम चुनाव लडेगे। वोट मागने जायेगे तो हाथ भी जोडेगे। इसमे कौन सा अपराध बोध होगा। बहुत मारा-मारी की लोगा की नाक मे दम किया। इन नेताओ की खातिर ही अन्य नेता अब बोलते हैं कि रात मे मिला करो। दिन मे इन्हे शर्म आती है हमसे मिलने मे। इनके कारोबार इनके काम-धधे सब रात मे ही होते हैं। अब अपुन अपना धधा शुरू करेगे। राजनीति अपुन भी सीख गये हैं। इन्हे देखकर सब हथकण्डे आ गये हैं।'

हम क्या बोलते जब दादा ने तय ही कर लिया हे कि राजनीति मे आयेगे और जनता की सेवा करेगे। हमने कहा– 'दादा, देश को सच्ची सेवा करने वालो की आज सख्त जरूरत है' दादा बोले– 'गुरु अब बेफिक्र हो जाओ। देश की बागडोर अपुन हाथ में ले रहे हैं। कोई चिन्ता की जरूरत नहीं। अपुन जान पर खेलकर देश की सेवा

करगे। अपुन जमीन के कार्यकर्ता हैं। पूरे देश मे अपनी शाखाए हैं। सब समर्पित होकर सेवा म जुट जायेंगे। जिन नेताओ ने हमारा शोषण किया है, हमको धोखा दिया है और हमारी भावनाओ के साथ खेलने का प्रयास किया है, उन सबकी हम हजामत कर दगे। अपुन भी इसी माटी के आदमी हैं। इस माटी के लिये अपनी जान तक कुर्बान कर दग।

दादा का भाव भरा भाषण सुनकर हम गद्‌गद हो गये। हम लगा कि यह सभावनाशील नेता है और इसका भविष्य उज्ज्वल है। दादा उठे और बोले- 'गुरु, अब मै चलता हू। तुम सेमिनार की तैयारी करो। खर्चा-पानी की चिन्ता मत करना। नेताजी का जूता, नेताजी के सिर न मारा तो अपुन का नाम भी शभूदादा नहीं। अच्छा नमस्कार।' हमने भी प्रत्युत्तर मे नमस्कार कर उन्हें विदा किया। ❑

राग मुख्य धारा

हम चित्रहार देखने मे मगन थे कि हमारे पुराने दोस्त शरबती बाबू ने ठक-ठक किया। हमने अपने मूड की मुडी मरोड कर अपना दरवाजा खोला। वे खीँसें निपोरते हुए बोले-क्या हो रहा है जनाब। लगता है कलरफुल प्रोग्राम देख रहे हैं। मन ने तो कहा कि साले के दो जूते लगाकर भगा दू। कोई वक्त ही नहीं देखते, आ जाते हैं जैसे हमारा घर नहीं कोई धर्मशाला हो। इसके बावजूद हमने मन का कहा नहीं माना। मन समोसकर लोक-लाज का लबादा ओढा और कृत्रिम हसी का प्रदर्शन करते हुए कहा- 'नहीं जी आपके आगे तो सारे कलर फीके हैं। आइये-आइये। हम तो आपका ही बरसात की तरह इतजार कर रहे थे। आपसे मिले बिना अपनी रोटी हज्म कहा होती है। आपक दर्शनो से पहाड सा दिन राई बन जाता है, सीना शान से तन जाता है और मन मयूरी सा नृत्य करने लगता है।

शरबती बाबू ने भी कोई कच्ची गोलिया नहीं खेली थीं। एक नम्बर का घाघ। पट्ठा हमारा इशारा समझ गया कि हम व्यग्य से उसकी तारीफो के कसीदे काढ रहे हैं अन्यथा खुशी होती तो इस तरह नहीं कहते। शरबती ने हमारे मन की थाह ले ली थी। हमारी गणित आक ली थी। ऐसे मे उसने बदले मे नहले पर दहला मारा- 'अजी जनाब आप शहर के नामवर बुद्धिजीवी और हम ठहरे बुद्धि-बाजार के दिवालिये सेठ। हमारी बातो से आपको पचरगी कार्यक्रम का क्या खाक मजा आयेगा। हम तो आपके पास इसलिये आते हैं कि सेर से सवा सेर बन जाये। हमारी चवन्नी भी एक रुपये मे चले।

हमने जान लिया कि शरबती हमारी खोपडी निचोडे बिना टस से मस होने वाला नहीं है। इसलिये तो लोग 'मजबूरी का नाम महात्मा गाधी' का शाश्वत मुहावरा इस्तेमाल करते हैं। हमने भी यही कहा आओ बैठो भगवान। मन ने कहा आ भई दीमक और मेरा दिमाग चाट। मैं तुम्हारे लिये चाय-पान की व्यवस्था कराता हू ताकि आपकी वाणी का रथ पी टी उषा की तरह दौड सके।

'यार, एक बात बताओ। यह मुख्य धारा का क्या चकर है! जो आता है वही अपने प्रवचन मे मुख्य धारा का घासा पिला जाता है। गगा-जमुना और सरस्वती की धारा तो हम जानते हैं लेकिन यह मुख्य धारा कहा है, किसकी है और इससे कैसे जुडा जा सकता है? शरबती ने एक यक्ष प्रश्न हमारे सामने खडा कर दिया।

टालू मिक्सचर देने में हम भी किसी मान्यता प्राप्त वैद्य से कम थोडे ही हैं। हमने प्रति प्रश्न किया- 'प्रवचन देने वाले से ही आपने क्यों नहीं पूछा?' शरबती बोला- 'पूछा था हमने, भरी सभा मे सवाल किया था कि मुख्य धारा से कैसे जुड । उनके चमचो ने पीछे से कमीज खींचकर हमें नीचे बैठा दिया। हम बैठ गये और वे अपना काम निपटाकर चले गये। हम उधर लपके भी थे। हमने पीछा किया तब तक तो वे फर्राटे मारते हुए लोप हो गये। हमने उखडती भीड में से एक को पकडकर पूछा कि अगर उनकी समझ म आया हो तो बता दें लेकिन उसने भी हाथो की अगुलिया नचाते हुए हमे रास्ता नापने की सीख दी। हम पूरे रास्ते मुख्य धारा-मुख्य धारा रटते रहे। घर पहुचे तो हमे होश आया कि पुत्र रत्न के पेट दर्द को दूर करने के लिये हम अमृतधारा लेने गये थे और मुख्य धारा का मत्र रट कर आये।

मैंने मुख्य धारा का जो अर्थ जान रखा था उसे शरबती को समझाने लगा-'मुख्य धारा का मतलब है आदिवासियो को जगल से निकालकर शहर म लाना असम के ये उल्फा वाले हैं और उधर ये नागा और पजाब-कश्मीर-मेघालय तथा त्रिपुरा मे आये दिन धमाल करने वाले लोग हैं न, उन्हे शहर की चकाचौंध म लाकर चौकडी-चूक कर देने का नाम मुख्य धारा है, मेरे यार।'

शरबती के माथे मे फिट कम्प्यूटर की बैटरी कुछ कमजोर थी इसलिये वह कुछ कन्फ्यूज था। वह बोला- 'वो तो सब ठीक है। चम्बल के शेर जगल छोडकर मगल मे आये तो भी बेचैन क्यो हैं? उनमे ऐसे अनेक सरदार हैं जिन्हे आज तक सिर छुपाने को एक अदद छत नहीं मिली। उन्ह खुशहाल किसान बनाने के सब्जबाग दिखाये गये थे लेकिन खेत कहीं काच मे भी दिखाई नहीं देते। उनके बच्चे दर-बदर भटक रहे हैं। स्कूलो का भी इतजाम नहीं। कश्मीर की वादियो म गीदड शेर की खाल पहनकर दहाड रहे हैं। रक्त पिपासु बनकर मानव का शिकार करते हैं और अतडियो के तार बनाकर विदेशी ट्रासमीटर से जोड रहे हैं। केशर के खेतो मे रक्त से सिचाई कर रहे हैं। उन्हे मुख्य धारा से जुडने मे क्या जोर आ रहा है? पूर्वोत्तर राज्यो मे भटके हए लोगो को मुख्य धारा से जोडने के जेहाद मे लगे लोग धारा से कटे हुए लोगो के हाथ काट रहे हैं। मुख्य धारा जब भी बोलती है तो बन्दूको, ए के 47 और अन्य आग्नेयास्त्रो की भाषा बोलती है। उसे दूसरी भाषा आती ही नहीं।

हमने समझाया- मेरे भाई मुख्य धारा एक महानदी है। यह एकता मे अनेकता

का सदेश देती है। यह ऐसी महानदी है कि गगा जमुना और सरस्वती ही नही देश की सारी नदिया इसमे आकर मिल जाती हैं। एकता की इस महानदी मे हम जब तक डुबकी नहीं लगा लेते तब तक विश्व मे सिर ऊचा उठाकर चल नही सकते। मजदूर जिस तरह दम लगाकर हईसा हईसा करते हुए भारी से भारी चीज को उठा लेते हैं उसी तरह हमे हईसा हईसा करते हुए मुख्य धारा से जुडना होगा।'

हमने अपना ज्ञान बघारते हुए शरबती को आगे बताया-' मुख्य धारा से जुडने के अनगिनत फायदे हैं। ये जो आदिवासी बाजार से दूर जगलो म धूणी जमाये बैठे हैं उन्हे शहर मे लाने का मकसद यह है कि वे गवारू गीत गाना छोडकर पॉप सगीत सुने, समझे, नाचे और गाये। बाजार की तडक-भडक देखे तो कुछ जीने का सलीका सीखे। क्रीम पाउडर, लिपिस्टिक सौंदर्य साबुन शेम्पू आदि का इस्तेमाल करे। लिज्जत पापड, मेगी, कॉन्टिनेटल फूड का जायका जाने। छुरी-काटे से खाना सीखे। केम्पा, कोका, पेप्सी और विदेशी मदिरा वोदका, शैम्पेन आदि पीकर मदमस्त हो,पुरानी पगरखी उतारकर एक्शन शूज, हवाई चप्पल आदि पहनकर जमीन से ऊपर उठें। क्रिकेट, हॉकी, जिम्नेजियम ऐथलेटिक आदि के बारे मे कुछ जाने ताकि भारत पर लगे पिछडेपन का कलक दूर हो। आखिर कब तक पहाडा पर डेरे जमाये बैठे रहेगे।घास-फूस के झौंपडो मे गुजर-बसर करना खेती के पुराने तौर-तरीके अपनाना नग-धडग बदन, ऊची-ऊची धोती छोटी-छोटी पगडी और महिलाआ द्वारा बच्चो को पीठ पर लादे फिरना हमारी आन और शान के खिलाफ है यार। उधर लोग मगल ग्रह मे पहुच रहे हैं और ये हैं कि अभी भी जगल को ही मगल माने बैठे हैं। अब तो ठेकेदारो को जगल काटने दो, शिकार करने दो कुछ तो ख्याल करो कि जानवरो की खाले विदेशा मे ऊचे दामो पर बेचकर विदेशी मुद्रा कमाना है कि नहीं।'

गौर से सुनो मिस्टर शरबती- 'पहाडो पर ही मगर की तरह पडे रहे तो आज जो आसमान छूने को बेताब हैं, उनका क्या होगा। इसके बारे मे भी तो सोचना पडेगा। पहाड कटेंगे तभी तो गगनचुम्बी अट्टालिकाए खडी हो पायेगी न। आलीशन कोठिया बन रही हैं तो वहा आलीशान फर्नीचर भी चाहिये कि नहीं। आखिर ये कहा से आयेगा। आज जगल मे मगल नहीं दगल की जरूरत है। यह भी कोई बात हुई कि कोई जगल काटे तो आप तीर कमान तान लो। तीरदाजी का ही शौक है तो लिम्बाराम से पूछो कि हमने उसे आधुनिक तीर दिये कि नहीं। दुनिया मे नाम है उसका। आओ मुख्य धारा से जुडो तभी पता चलेगा न कि दुनिया क्या है।

अब अगर रेगिस्तान की धूल फाकने वालो से पजाब और जम्मू-कश्मीर के उग्रवादियो से, मुसलमानो, सिधियो बौद्धो अनुसूचित जातियो और जन जातियो से गरज यह है कि जो भी सामने पड जाये उन्हीं से अगर कोई मुख्य धारा से जुडने

की बात कही जाये तो इसमे बुरा मानने की क्या बात है? इस देश म अगर एक आदमी भी मुख्य धारा से जुडने म पीछे रह गया तो देश का बटाधार ही समझो। देश पिछड जायेगा। अभी हमे दुनिया मे डका बजाना है और देश को फिर से सोने का चिडिया बनाना है। अगर भाषणा से प्रभावित होकर लोग मुख्य धारा से जुडते हैं तो बेहतर है अन्यथा कडवी दवा पिलाकर भी इस काम को जरूर अजाम दिया जायेगा। इसके लिये अब कमर कस ली गई है। अब जो भी मुख्य धारा से नहीं जुडेगा उसकी गर्दन कसी जायगी।'

शरबती हमारी बात सुनते-सुनते सो गया। हमे पता ही नहीं चला कि बदा कब मुख्य धारा की लहर मे बह गया। हमने उसे झिझोडा तो वह दरवाजे की ओर दौडा। हमने उसका कॉलर पकडकर सोफे पर बिठा दिया और पूछा- 'मुख्य धारा से जुडोगे कि नहीं।' सहमा-सहमा बोला- 'जब सब लोग जुडेगे तो वह क्यो पीछ रहे।' इसी बीच हमारी मेम सा'ब ने आवाज लगाई - 'अजी, हाथ पैर जुड गये हैं क्या। देखते नहीं कि मेट्रो चैनल पर दारासिह की कुश्ती होने वाली है। मैं चाय लेकर कब स रसोई मे खडी आवाज लगा रही हू और आपके कान पर जू तक नहीं रेग रही। मुख्य धारा-मुख्य धारा की घिसी पिटी रिकार्ड बजा रहे हो।' हम इधर भागवान की बात सुनकर चाय लेने रसोई म पहुचे और उधर शरबती दुम दबाकर भागा। अभागा कहीं का। पता ही नहीं कि 'राग मुख्य धारा' समझ सका या नहीं। ❑

नौ मन तेल कहा से आये

टेलीविजन पर बड़ी गरमा-गरम बहस चल रही थी। बहस म आम आदमी कहीं नहीं था फिर भी अगर यह कहा जाये कि वह मौजूद था ता गलत नही होगा। जी हा, आम आदमी बहस को देख-सुन रहा था। उसे बहस मे दखल करने का कोई अधिकार नहीं था क्योकि वह अपने सारे अधिकार मत पेटी म अपन जन प्रतिनिधि को हस्तातरित करके सारी जिम्मेदारिया स मुक्त हो चुका था। अब 'वन-वे' ट्रेफिक था। उसकी वाणी बन्द थी। अगर बन्द नहीं थी तो आख बद नहीं थी, कान बद नहीं थे। ऐसे मौके पर वह मूक दर्शक ही होता है और यही लोकतत्र की नियति है कि आम आदमी अपने सारे अधिकारा के बावजूद बाल नहीं सकता। हा, वह हस सकता है। यही हुआ। टेलीविजन की बहस मे सर्वोच्च शिखर पर बैठे सज्जन पुरुष ने जब अपनी वाणी का आगाज किया तो 'पारदर्शिता' प्रवाहित हुई। बेपरवाह और बेहाल आम आदमी हसा।

जब देश के अधिकार सम्पन्न लोग सीरियम हाकर काई बात कह तो आम आदमी हसने लगता है। हकीकत में वह अपने आपके हालात पर ही हसता है। ताज्जुब है कि वह अधिकार के सरोकार को समझने के बावजूद हसता है। भई इसम हसने की क्या बात हुई कि शिखर पुरुष पारदर्शिता के पावन पथ पर अग्रसर होने की बात कह रहे थ कि आप हसन लगे। अरे,पागल हो गये हो क्या? या कि आपने शिखर पुरुष और उनकी बटालियन को पागलखान का सदस्य मान लिया है।

जब आम आदमी हस रहा था और लोग उसे देख रहे थे कि वह अकेला ही जोरो से हस रहा है तो और लोग भी हसे। मैं भी हसा। जब सब हसन लगे तो मैं अकेला क्या रोता? नहीं ना। मैन हसकर ठीक ही किया ना। अब जब सब लोग हसकर थक गये तो अपन-अपने घरो की ओर चल पडे।

मै तो 'एक्च्युअली' यू ही हसा था। मुझे भी औरा की तरह हसन का काई कारण मालूम नहीं था। हसने के पीछ कोई कारगर 'क्लू' भी मुझ अखबार वाला की तरह दिखाई नहीं दिया वरना यह भी एक 'फन्टास्टिक स्टोरी' बनती और अखबार क मुख पृष्ठ पर छपी देखकर पाठक भी हसने का सबब जानकर हसते-हसते लोट-पोट हो जाते। खैर

अपराध नहीं अपवाद का मामला है

जी हा यह अपवाद का मामला है। आपको एतराज। भई किसी को क्या एतराज हो सकता है। लेकिन भाई लोग अपवाद पर ठडी नजर नहीं रखते। हालाकि यह उनकी मुश्किल और पीडाए हैं, इससे अपवाद का स्वास्थ्य थोडे ही बिगड जाता है।

कुछ भी हो अपवाद उपलब्धियो से भरा है। यह कहना चाहिये कि अपवाद अपनी उपलब्धियो के कारण एक अलग पहचान रखता है। हर कोई इसका उल्लेख अवश्य करता है वरना तो शहीदो के नाम लेते-लेते हम खुद आदि-आदि का प्रयोग करते हैं लेकिन अपवाद को तो चटखारे लेकर बखानते हैं, है कि नहीं। हा-हा बिल्कुल।

अपवाद यानी विशिष्टता जिसका बखान हर क्षेत्र मे है। अब हम आजादी की ही बात करे तो पायेगे कि जब पूरे देश मे आजादी की जग म हर छाटा-बडा आदमी जूझ रहा था तो कुछ लोग ऐसे भी थे जो अग्रेजो के तलुए चाट रहे थे, जागीरे बटोर रहे थे पदविया ले रहे थे आई सी एस की डिग्रिया धारण करके देश को हाक रहे थे लेकिन नेताजी सुभापचन्द्र बोस आई सी एस की डिग्री प्राप्त कर लेने के बाद भी उसे ठुकराकर अग्रेजो की ठुकाई का बीडा उठा चुके थे। यह अपवाद ही तो था।

वह तो आजादी के जमाने की बात थी लेकिन आज अपवाद के अपने अनूठे अदाज हैं। आज अपवादो के ठाठ हैं। पाचो अगुलिया घी मे और सिर कढाई मे है। लाट साहब खुश हो जाय तो उनके पी ए साहब अफसरा को मुट्ठिया तानकर डाटते हैं। यूनियन की एकता पानी भरती है और कामरेड भीतरघात करके आपकी आशाओ पर पानी फेर देता है। एक थर्ड क्लास लेवल का आदमी फर्स्ट क्लास में सफर करता है। नॉन मट्रिक शिक्षा विभाग का मत्री बन जाता है। अस्वस्थ व्यक्ति लोगा को स्वास्थ्य की शिक्षा देने लगता है। बहुमत का बोलबाला न हो तो भी देश का बोझ अपने कधे पर खुशी-खुशी उठा लेता हैं और नींद लेते-लेते देश सेवा काल को आगे खिसका ले जाता है।

जीवन मे जिसका कभी खादी से दूर तक का रिश्ता न रहा हो लेकिन अपवाद की मेहरबानी हो जाये तो वह खादी बोर्ड का कर्ता-धर्ता बन जाता है। यही अपवाद

साहित्य में मौजूद है। मौहल्ले के लोग भी जिसे ठीक से न पहचाने और साहित्यकार तो बेचारे पहचानगे ही क्या जब कोई साहित्य रचा ही न हो लेकिन जनात्र, अपवाद ही है कि ऐसे सज्जन सृजको को सृजन की सीख देने लगते हैं।

एक भले आदमी और हुए हैं। उनके भाई ने एक दिन 'डिनर' के दौरान अपना डैना फैलाकर कहा–'भाई, अभी रिटायर होने को जी नहीं चाहता। बच्चा की शादी करनी है, मारुति के लिये माल जुटाना है, ईंट गारे से बने बगले को 'फिनिशिग टच' देना है। रिटायर हो गये तो हमारी जिन्दगी का टायर पक्चर हो जायेगा।' भाई ने भाई की व्यथा को गहराई से महसूस किया और बैठे-बैठे ही अपने भाई को राहत देने का मन बनाया। अगले दिन आदेश जारी हो गया कि अब दो साल तक किसी को रिटायर होने की जरूरत नहीं। प्रमोशन की लाइन मे खडे लोग खूब चिल्लाये लेकिन चीखते-चीखते उनकी चीखने की शक्ति चीं बोल गयी। है न अपवाद का खेल।

धरती से हजारों फीट ऊपर विमान में आग लग जाये और टूटकर उसका मलबा जमीन पर गिर जाये तो भला पैसेजर का कहा पता चलेगा। लेकिन बचने वाले फिर भी बच जाते हैं। इसे हम अपवाद ही कहगे। ऐसे कई अपवाद हमारे जीवन में भी इधर-उधर ज्वलत और जीवत हैं। एक हमारे चाचा हैं चरणदास। आजादी से पहले महाराजा के दरबान थे और आज भी हमारे साहब के दरबान हैं और मजे की बात यह कि उन्हें दस-बारह साल तक अभी सेवा मे रहना है। उनके शरीर का पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा उनका हाल जाने है। जाते-जाते अपने पुत्र रत्न को भी सरकार की सेवा में लगाते जायेगे।

एक ट्रक ड्राइवर है। पहियो पर पूरा देश नाप चुके हैं। एक दम उज्जड लापरवाह और पियक्कड! इसके बावजूद ऐसे-ऐसे ड्रामे लिखते हैं तथा ऐसी कहानिया लिखते हैं कि साहित्यकार भी उनका लोहा मानते हैं। आये दिन जनाब की कहानिया पत्र-पत्रिकाआ मे छपती हैं और ड्रामे विभिन्न मचो पर मचित होते हैं। इनका कोई दफ्तर नहीं। इनका दफ्तर चाय की थडी या फुरसत हो तो किसी वाचनालय का कोना ही काफी है। यू पनवाडियो के साहित्यिक प्रेम के किस्से भी इसी 'केटेगरी' मे रखे जा सकत हैं। कत्था-चूना लगाते हैं तो कूची की जगह कलम भी थाम लेते हैं। साहित्य की ही चर्चा चल रही है तो कुछ धनाढ्य व्यक्ति अपने साहित्यिक प्रेम को दर्शाने के लिये साहित्यकारा को अपने यहा मुनीम रखते हैं जो उनके नाम से पुस्तको पर पुस्तके लिखते हैं और सेठजी को साहित्यकार के रूप म प्रतिष्ठित कराते हैं तथा पुरस्कार भी दिलवा देते हैं। लक्ष्मी पुत्र भी अपवाद की बदोलत सरस्वती पुत्र की साख पर बैठकर बुद्धिजीवियो की जाजम पर आ बैठता है। यह अपवाद उलूक को भी विशिष्टता प्रदान करता है। भले ही आपकी आखो म खटके चाहे आप पैर पटक। यह तो हो रहा है और पता नहीं आगे कब तक होता रहेगा। ❑

अस्थिरता का आनन्द

अस्थिरता के अपने आनन्द हैं। आपको ध्यान होगा कि एक बार बहुत अरसे पहले 'स्काईलेब' वैज्ञानिको के नियन्त्रण से बाहर हो गयी थी। दुनिया भर के वैज्ञानिक परेशान थे कि उसे कैसे नियन्त्रित किया जाये लेकिन जब वे हार गये तो मामला ऊपर वाले 'मालिक' के भरोसे छोड दिया और प्रार्थना करने लगे कि वह रेगिस्तान अथवा समुद्र में जाकर गिरे ताकि भारी जन-धन की हानि टल जाए। अखबार वाला ने स्काईलैब की प्रतिदिन की स्थिति छाप-छापकर खूब शोहरत पाई। सब जानते थे कि जो होना है वह होकर रहेगा लेकिन लोग उस अस्थिरता के दौर मे भी आनन्द से सराबोर थे।

अस्थिरता कहीं भी हो, सरकार मे हो या घर मे, कारखाने मे हो या विश्वविद्यालय मे अथवा युद्ध मे, सभी जगह इसकी अनुभूतियो की एक अलग पहचान और आनन्द है। अब आप देखिये कि किसी ने हमारे चचा की सोयी हुई सरस्वती को जगा दिया तो उन्होने अपना समर्थन का हाथ खींच लिया। सत्ता का पत्ता-पत्ता काप गया लेकिन लोग हैं कि आनन्द विभोर हो गये। अस्थिरता के आनन्द का श्रीगणश तब होता है जब काम ठप्प हो जाता है। जहा अस्थिरता होगी वहा ठोस और नीतिगत फैसलो पर गाज गिर जाती है।

शास्त्रीजी ने नारा दिया था कि 'आराम हराम है।' यह नारा अस्थिरता के दौर मे अभिशाप नहीं रहता बल्कि आराम करने का अधिकार देने के साथ आनन्द की अनुभूति कराता है। हा, अस्थिरता के दौर से गुजरने वाले पक्ष और विपक्ष जरूर मानसिक परेशानी झेलते हैं। लेकिन, इसके इतर दूसरे वर्ग तो मस्त-मस्त हो जाते हैं। कारकून मदमस्त हो जाते हैं। ऐसे समय आप इनसे मिलकर देखिये तो यही जवाब मिलेगा-'अमा छोडो यार! तेल देखो-तिलों की धार देखो।' दूसरा कहेगा-'देखते नहीं अभी सारे फैसलो पर रोक है, नीतिगत निर्णय नहीं लिये जा सकते और आप क्या हमसे अनीति करवाना चाहते हैं।'

अस्थिरता का एक आनन्द यह है कि दफ्तर फिर दफ्तर कहा रहता है बल्कि वह एक जीता-जागता रेस्तरा या कहकशा बन जाता है। आप इन दफ्तरों को ऐसे समय में

'गपशप केन्द्र' के रूप मे बदला हुआ देख सकते हैं। अफसर से लेकर बाबू तक अपनी सुविधा से दफ्तर आते-जात हैं। कोई किसी को रोकता-टोकता नहीं। झक्की किस्म के आदमिया से माथा मारने के लिये भी खूब समय मिल जाता है। उलझने के लिये खूब समय होता है और कुछ अफसर, बाबू तो समय काटने के लिये स्वय पगा मोल ले लेते हैं। फाइल का स्थान ताश के पत्ते ले लेते हैं। पेन की जगह जलती सिगरेट ले लेती है। घरवाली भी खुश रहती है कि उसका मिया ठीक वक्त से घर आ गया।

अस्थिरता के दौर मे किसी भी वाजिब से वाजिब और आसान से आसान काम को भी न करने की छूट मिल जाती है और काम करने की ताकीद करने का आदी अफसर या फरियादी कोई भी किसी क सिर पर चढकर नहीं बालता। 'टेन्शन फ्री' रखने के लिये अस्थिरता एक अचूक दवा का काम करती है। चतुर्थ श्रेणी अर्थात् सहायक भी सा'ब जी बनकर अपनी स्टूल से टस से मस नहीं होता। उसे भी साहब की डाट नहीं खानी पडती। भीतर बैठे साहब चुपचाप सिगरेट पीते या मूगफली छील-छील कर खाते हुए व्यस्त रहते हैं अथवा कम्प्यूटर पर बच्चा की तरह 'वीडियो गेम' खेलते रहते हैं। कुछ स्मार्ट अफसर 'पोलिटिकल गेम' मे हार-जीत का ऐसा विश्लेषण करते हैं कि राजनीतिक पडित उनक ज्ञान और विश्लेषण के आगे पानी भरते नजर आते हैं।

एक साहब हैं जो यही प्रार्थना करते रहे हैं कि यार अस्थिरता बनी रहे। इसी से जीवन सार्थक होता है। अस्थिरता के समय ही थोडी फुरसत मिलती है। भरपूर नींद लेने का अवसर मिल पाता है वरना महीनो गुजर जाते हैं, कभी ठीक स सा भी नहीं पात। इन साहब को हमने बताया कि जा ज्यादा साते हैं बल्कि खुले आम सोते हैं उनकी ही 'कुसी' छिन जाने का खतरा ज्यादा हाता है और वे ही अस्थिरता का कारण बनते हैं। वे यह बात सुनकर भौंचक्के हो गये। उन्हे अपनी धरती खिसकती नजर आयी। वे सभलकर सीट पर बैठ गये और हमीं से पूछने लगे - 'क्यो अब तो ठीक है न! स्मार्ट लगता हू कि नहीं।'

अस्थिरता के दौर मे दौरे भी रुक जाते हैं। किसी को किसी तरह का दौरा नहीं पडता। हा, अस्थिरता से सीधे-सीधे जुडे लोगा के रक्तचाप ऊपर-नीचे होने लगते हैं जबकि शेष लोगो पर इसका कोई फर्क नहीं पडता बल्कि यू कहना चाहिये कि उनकी खराब सेहत दुरुस्त होने लगती है। शेयर मार्केट ढीला पड जाता है तो इससे हम क्या! आम आदमी तो रोजाना ही अस्थिरता झेलता है इसलिये उस पर तो इसका चिर स्थायी प्रभाव बना रहता है। दश को अब अस्थिरता रास आने लगी है। यही कारण है कि यहा 'फुल मैनडेट' किसी को नहीं मिलता। आपको पता होना चाहिये कि बहता पानी ही निर्मल रहता है और अगर वह स्थिर रहा तो छिछला हो जायेगा। प्रकृति भी अस्थिरता की वकालत करती है तो हम इसके प्रतिकूल कैसे जा सकते हैं। कोई टूटता है ता टूटने दीजिये और जुडता है तो जुडने दीजिये। आप अस्थिरता का आनद लीजिय। 

गालियां घी की नालिया

गालिया हमारे सस्कार की अमूल्य थाती है। गालिया गीता म गायी जाती हैं। होली महोत्सव के लिये जब डाडा रोपा जाता है, तब से यह अभियान चल पडता है। गाव-गाव, गली-गली और कहना चाहिये घर-घर गालिया देने का पुराना रिवाज है। कई स्थानों पर तो गालिया गीता में गाने के लिये बाकायदा मच सजाये जाते हैं। गालीबाजा का अपना एक ऊचा किरदार है। गालीबाजो को समाज ऐसे मौको पर सम्मानित भी करता है। उन्हे पगडी बधाई जाती हे और इनाम-इकराम देने की परम्परा है। खासकर जोधाणा मारवाड में तो कई नामवर गालीबाज हैं। अगर वे गालिया न गाये तो महफिल अधूरी या फिर सूनी हो जाती है।

वैसे अगर चलते फिरते जीवन में किसी के कुछ कसर पड जाये तो भी गालिया देने का रिवाज है। मसलन बीवी को आप अपने पीहर जाने अथवा अपने किसी रिश्तेदार के विवाह समारोह में जाने से रोक कर देखिये तो आपके पूरे खानदान वाला के नाम ले-लेकर व गालियो से आपके कान के सारे कीडे झाड देंगी। आप दूर क्यो जाते हैं। अपने पडोसी के बच्चा को डाट कर देखिये या फिर उन्ह अपने घर मे उधम मचाने की फितरत से बाज आने की ताकीद कीजिये। फिर देखिये उनके मा-बाप आप पर बाह चढाकर आपके कुल की काया पर गालिया के कैसे-कैसे छींटे मारते नजर आयगे।

आप बुरा मान भी जाये तो इससे क्या फर्क पडता है। हा इससे गालिया देने की प्रक्रिया लम्बी खिच जाती है। आप दुबारा दिखे कि फिर वही लकीर पिटती जायगी। एक दिन ऐसा आयेगा कि आप ही उन्हे माफ कर दगे या रहम खाकर वे ही आपको माफ कर देग। इससे रिश्तो मे कोई दरार थाडे ही पडती है। यार लोग आपको आये दिन गालिया देते हैं फिर भी आप हीं-हीं करते रहते हैं। भला गाली का भी कोई बुरा मानता है। मर्द छाती के सामने गाली देते हैं और जनाना किस्म के मर्द पीठ पीछे गालिया के तीर छोडते रहते हैं। इससे रिश्ता प्रगाढ बनता है। आप भी कभी अपने दास्त को गाली देते हागे न ! नहीं दी है तो देकर आजमा लो। थाडा चिड जायेगा तो आप यह न कहेगे कि यार हमने तो अपना समझा इसलिये मुह का स्वाद बदला। वरना भई

कौन किसको गाली देता है! बडे किस्मत वाले हो कि गाली खा रहे हो! गाली आखिर गाली है, कोई गोली तो नहीं कि दम निकले जा रहा है! गाली से कोई 'गूमडे' थोडे ही होते हैं। एक कहावत हमे बचपन से याद है। मा कहती थी-'मा की गालिया घी की नालिया।'

अब कहा मा और कहा घी? घी असली था तब गालिया भी दमदार होती थीं और आजकल नकली घी मिलने के कारण गालियो मे भी दम नहीं रहा। यू देखो तो कितने सुधर गये हैं! गालिया देने का मजा ही कुछ और है। आजकल के बच्चे न तो गालिया सुनते हैं और न ही देते हैं। आदान-प्रदान का यह सास्कृतिक कार्यक्रम बडे और सभ्य घरो के साथ मध्य वित्त परिवारो से भी विदा हो रहा है। अब गालिया देने के लिये 'शिकार' बदल गये हैं। बेचारे नेताओ को ही ज्यादा गालियां दी जा रही हैं। 'अपनी बला काजी जी के सिर' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। हम ही तो नेता बनाते हैं, उनकी आवभगत करते हैं, आरती उतारते हैं, फूल-मालाए पहनाते हैं और वे बेचारे अपने काम मे थोडा सा भी कहीं लग जायें और चुनाव जीतने के बाद न मिल तो हम उन्हें गाली देने लगते हैं। यह तो सरासर ज्यादती है उनके साथ। बिजली-पानी की दरे बढे, गेहू-चावल महगा हो, मीट-मछली महंगी हो, केरोसीन, पेट्रोल, डीजल महगा हो या कुछ भी चीज थोडी सी ऊची चढ़ी कि हम उन पर चढ़कर पचम सुर मे गालिया देने लगते हैं।

नेताजी भी जानते हैं कि ये प्यार मे जनता की गालिया खा रहे हैं। ये मानते हैं कि ये सस्कार का एक हिस्सा है। जनता की गालिया उनके लिये घी की नालिया हैं। दूध-दही की नदिया तो अब बहती नहीं जिससे मक्खन बनाकर जनता के मुह पर दे मारें। जनता को 'मारवणिया' बातों में फसने की पुरानी आदत है। जनता की याददास्त भी कमजोर होती है इसलिये नेताजी गालियों का मौसम टालकर जनता से मिलते हैं। जनता भी सोचती है चलो छोडो इन बातों को-'देर आयद दुरस्त आयद' और गालिया दी यह मुफ्त में। नेताजी गालिया खाने के दाम वसूल करने लगते तो अब तक कितनी महगाई और बढ गई होती। हम सतोषी जीव हैं। जनता गालिया देकर सतोष करती है तो नेताजी गालिया खाकर सतोष करते हैं। दानों का पुराना ढर्रा चल रहा है। लोकतत्र के यही मजे हैं। अभिव्यक्ति की छूट के नाम पर इसकी लूट मची है।

कई विशेषज्ञ जब यह कहते हैं कि गालिया देना गन्दी बात है तो हमारे दिमाग
में यह बात फिट नहीं बैठती। गालिया गन्दी [illegible] हमारा घर गदा नहीं हो जाता।
उधर दिल्ली में पवित्र यमुना नदी का पानी [illegible] है। इसमे गालियों का क्या
दोष। गगा मैली हो रही है। इसमें भी गालि[illegible] आता। इसलिये आप
तो पानी पी-पीकर गालिया दो। [illegible] परम्परा समृद्ध होगी
और हम अपने सास्कृतिक परिवेश से [illegible]



वाह विकास कहिए जनाब

आजादी की पचासवीं वर्षगाठ मनाते समय हमे अब तक हुए सर्वांगीण विकास का सिहावलोकन कर लेना चाहिये। यह एक ऐसा स्वर्णिम अवसर है जिसे हम चूक गये तो चूक गये। बाद मे 'एक्सक्यूज मी' कहने का मौका भी नहीं मिलगा। भूल चूक लेन देन की छूट भी इसमे नहीं मिलेगी। हम अपने शानदार अतीत से लेकर जानदार वर्तमान तक की उपलब्धियो को विकास की तराजू मे रखकर तोलना चाहिये और सच एव साफ-साफ बोलना चाहिये। इसी से हमारी साख और धाक दुनिया म बढ़ेगी।

आजादी के पचास वर्षों मे हमने विकास के विविध आयाम स्थापित किये हैं। ऊची-ऊची धुआ उगलती चिमनियों वाले बडे-बडे उद्योगो की स्थापना की है। पर्यावरण सरक्षण के लिये सेमिनारों की रिपोर्ट्स क पहाड खडे किये हैं। औद्योगिक विकास के जरिये हमने गरीबो को आटे से भी बारीक पीस दिया है। इसके पीछे एक ही महान मतव्य रहा कि किसी तरह गरीबी मिट जाये। गरीब को इस लायक ही नहीं छोडा कि वह 'गरीबी का महल' खडा करके सम्पन्नता के द्वार के सामने छाती पर मूग दलता रहे। गरीब को आलीशान बस्तिया से दूर झुग्गी झापडिया मे धकेल दिया गया है ताकि दुनिया हमारी मजाक न उडाये। उसकी जगह गन्दी बस्तियो मे बना दी गई है और हैसियत गन्दे कीडे से ज्यादा नहीं रखी गई है।

आजादी के इन पचास वर्षों मे गरीबी के किटाणुआ को मलेरिया या चेचक की तरह पूरी तरह नष्ट नहीं कर पाने का हमे बेहद अफसोस है। गरीबी आज भी कसर और एड्स की तरह हमारे पीछे पडी हुई है लेकिन इसको जड से उखाड फेकने का रास्ता हमने ढूढ लिया है। उधारीकरण का भूत इस गरीबी को जोक बनकर इसका बचा खुचा रक्त चूस लेगा। इससे गरीबी की नस्ल हमेशा के लिये लुप्त हो जायेगी और देश एक बार फिर सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी बन जायेगा। अभी साइबेरिया से भरतपुर के राष्ट्रीय घना पक्षी विहार मे जिस तरह सारस कोसो दूर से उडकर आते हैं, मारवाड में कुरजा आती हैं उसी तरह सोने का अण्डा देने वाली हमारी मुर्गिया उडकर विदेश जाया करेगी।

विकास की एक अभूतपूर्व मंजिल यह भी है कि हमारे आगे जो व्यक्ति 'क्यू' मे खडा है उसे लात मारकर खाई मे गिरा देना और उसके ऊपर से गुजर कर अपना विकास करना हमने बखूबी सीख लिया है। स्वार्थ सिद्धि अब अचरज की चीज नहीं रही बल्कि कुछ करिश्मा दिखाने की अचूक दवा बन गई है। नैतिकता जैसे दकियानूसी शब्दो को हमने अपने शब्दकोष से बाहर निकाल दिया है। एक सिक्के के कोई जमाने मे दो पहलू होते थे वही आज हैं लेकिन अब इन पर हमने 'सेवा शुल्क देव जयते' और 'कुर्सी देव जयते' अंकित करवा दिया है। पचास वर्षों पुरानी आजादी का यही सत्य है और सत्य को हम कब तक छुपाकर रख सकते हैं।

आजादी के पचास वर्षों म हमने कला और संस्कृति के क्षेत्र मे भी लम्बी छलाग लगाई है। प्रतिष्ठित एव नामवर कलाकारो और साहित्यकारो को धकेल कर एक कोने म खडा कर दिया है। बाजारू कला और साहित्य की माग को देखते हुए इसके सृजको को हमने सम्मान देना प्रारम्भ किया है। भई, जब आज का समाज बाजारू संस्कृति पर मोहित है तो हम इसका ख्याल रखना ही चाहिये न। कोरे आदर्शवाद की पोथिया बाचने की आज किसे फुरसत है। हमने ऐसे चिंतन को चिता पर रख दिया है जो हमे उज्ज्वल अतीत की परछाई दिखाती है। हमे तो अपना वर्तमान उज्ज्वल चाहिये। हम अपने कलाकार यानी के मुकाबले बौने दिखाई पडते हैं। हमारे कलाकार शास्त्रीयता के पीछे लट्ठ लेकर पडे हैं जबकि हमे यान्नी जैसा फडकता सगीत चाहिये। यान्नी का मार्केट है और इधर हम शास्त्रीय सगीत से ऊपर उठने का नाम ही नहीं लेते।

पडित रविशकर या उस्ताद अकबर अली खा का सितार उस्ताद फहीमुद्दीन खा डागर का ध्रुपद उस्ताद जाकिर हुसैन का तबला वादन श्रीमती मालिनी राजुरकर का ख्याल गायन, उस्ताद बिस्मिल्लाह खा का शहनाई वादन पण्डित शिवकुमार शर्मा का सन्तूर वादन पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया का बासुरी वादन आदि पक्की और पुरानी चीजो को कब तक ढोते रहें। हमें तो माइकल जैक्सन और यान्नी चाहिय जिसे सुनना 'स्टेट्स सिम्बल' माना जाय। अपना ही रोना-धोना सुनते रहेगे तो हो लिया विकास!

आजादी के पचास वर्षों म हमने जनसख्या के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व विकास किया है। घर-घर जनसख्या वृद्धि के कारखाने खोल रखे हैं। व्यवस्था इन कारखानों को ठप्प करना चाहती है लकिन हम उसक दात खट्टे कर रहे हैं। इन कारखानों म तजी से उत्पादन बढ रहा है। हम कोई पाडव हैं जो सीमित रह जायें। कौरवों से प्ररणा ली है तो करोडो-अरबो तक तो पहुचग ही। भला व्यवस्था के भी कर्म फूटकर हाथ म आ गय हैं कि यह 'मैन पावर' को बढन से रोक रही है।

कम्प्यूटर युग का मतलब यह तो कदापि नहीं कि आदमी को दरिया में फेंक

दो। आदमी की बहुतायत तो कुल मिलाकर फायदे का ही सौदा है। हम जिस सम्पन्न समाज की सरचना म जुटे हैं उसमे आदमी हमेशा फायदेमद सिस रहेगा। जितने ज्यादा आदमी हागे उतना ही सम्पन्न समाज को सुख मिलेगा। ज्यादा सेवक, कुली मजदूर, रिक्शा चालक, कण्डक्टर, ड्राइवर, वोटर, चमचे, दलाल आदि हागे। भिखारियों की भीड जितनी बडी होगी दानवीरा को दान-पुण्य करने म उतना ही मजा आयेगा।

आजादी मे विकास का सिहावलोकन करते समय हम और भी अनेक अछूते पहलुओं पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। विकास का कोई पहलू अछूता रह गया तो हम आधे-अधूरे और अधकचरे कहलायेगे। हमे अपना विकास पश्चिमी देशो से तौलना चाहिये अन्यथा हम अब भी 'पिछडे पूरब वाले' कहलायेगे। यह हमारी तौहीन होगी जो हमे कतई बर्दास्त नहीं।

मजा तो तब आयेगा जब आजादी के पचास वर्षों को दुनिया भर के लोग विकास का पर्याय कहे। लोग वाकई कहे-'विकास हो तो भारत जैसा।' यहा तक कि तबला उस्ताद जाकिर हुसैन भी 'वाह ताज।' का पुराना और सडियल मुहावरा बदलकर कहने लगें-'वाह विकास', 'वाह विकास।' ❑

खूटी ताण प्रजाति के पुरुष

कहते हैं ईश्वर ने इस जगत मे जितने प्राणियो का उत्पादन किया उनमे मनुष्य सर्वोत्तम उत्पाद है। यह अलग बात है कि पुरुषो की कई प्रजातिया हैं। उदाहरण के तौर पर बताना चाहूगा कि कर्मवीर, धर्मवीर, दानवीर और महावीर आदि प्रमुख प्रजातिया हैं। जब यह मान लिया गया कि प्राणियों म मनुष्य सर्वोत्तम है तो इसमे मीनमेख की कोई गुजाइश नहीं रह जाती। ऐसा मानने के पीछे बुद्धिबल का महत्वपूर्ण योगदान है। बुद्धिबल के आगे बाहुबल ओर धनबल दोना ही दण्ड पेलते हैं। हमारे चार्ल्स शोभराज इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। बुद्धिबल के बूते ही वे करामाती बाबा सिद्ध हुए। बुद्धि बल का ही खेल था कि साई शोभराज को भी अन्दर की हवा खानी पडी।

हम भी अजीब आदमी हैं कि मनुष्य प्रजाति की बात करते-करते चार्ल्स शोभराज को याद करने लगे। खैर, कोई बात नहीं। अब यहीं से आगे बढते हैं। आप हमे अगर छिद्रान्वेपी न समझे तो कहना चाहगे कि वीरो म वीर महावीर नहीं बल्कि 'खूटी ताण' प्रजाति के व्यक्ति होते हैं। इनकी जिन्दगी का अपना 'फलसफा' यानी दर्शन होता है। यह प्रजाति दर्शनो से दूर और दूरदर्शन के निकट रहती है। आपका भी इनसे वास्ता पडा होगा क्योकि इस प्रजाति के जीव लगभग हर जगह अलग-अलग नामा, वेशभूपाओ और भापाए बोलने वालो के रूप म यत्र-तत्र-सर्वत्र मौजूद रहते हैं। खूटी ताण प्रजाति खरपतवार की तरह विस्तार पा रही है। दरअसल वे ऐसे लोग हैं जिन्हाने साबरमती के सत के तीन प्रतीक बन्दरो के गुणो को अपने जीवन म पूरी तरह आत्मसात् कर रखा है। सक्षिप्त मे यदि इसकी व्याख्या की जाए तो उसका लब्बो-लुबाब यह होगा कि ये न तो कुछ देखते हैं न कुछ सुनते और न कुछ कहते हैं। बापू के बन्दरों में एक बुराई थी कि वे न तो बुरा देखते थे न बुरा सुनते या कहते थे।

हमारे इन 'खूटी ताण' आदर्श पुरुषों मे यह गुण है कि वे कुछ भी देखने सुनने या कहने की बुराई से कोसों दूर हैं। बस सोये रहते हैं खूटी तानकर। एक दम बुत बने रहते हैं ताकि आप भक्ति भाव से इनकी पूजा-अर्चना कर सक। पूजा-अर्चना से जब भगवान तक प्रसन्न हो जाते हैं तो ये बेचारे तो मात्र इसान हैं। क्यों न खुश हों!

सच तो यह है कि 'खूटी ताण' प्रजाति के पुरुष पूजा से ही प्रसन्न होते हैं, वरना इनके पास करने-धरने को वक्त ही कहा है? बस, चिंतन-मनन म ही इनका जीवन बीत-रीत रहा है। ये दूरदर्शन के सारे कार्यक्रम निर्विघ्न देखते हैं।

हम अगर न्याय की भाषा इस्तेमाल कर तो इन्ह महापुरुषो की सज्ञा दे सकते हैं। इन्हे दुनियादारी से कोई सरोकार नहीं। ये तो बस अपनी ही दुनिया मे जीते हैं। इनके अपने सलोने सपने हैं और अपने ही जीने के अदाज हैं। ये अपने कार्यस्थल पर निर्लिप्त भाव से काम करते हैं। आप पानी-बिजली का बिल जमा कराने जाये या राशन कार्ड बनवाने, बैंक से रकम निकलवाने जाय या जमा करवाने, बस का टिकट ले रहे हो या रेल का, सभी जगह इस प्रजाति के लोगो से आपका साक्षात्कार होगा। इन्हे आप अपने हाल मे मस्त पायगे। अगर ये चाय पीने चले गये है तो आप सोचकर चलिये कि वे अपने हिसाब से ही लौटकर अपनी सीट पर आयेगे। आप उच्चाधिकारियो से इनकी शिकायत करके खुश हा ल लेकिन आपको गमगीन ही होना पडेगा क्याकि वे अपनी कार्यशैली से जीते हैं। अफसर भी इनसे कोई पगा मोल नहीं लेते। बेहतर होगा कि आप इनकी शैली के अनुरूप अपने आप को ढाल ले अन्यथा आपकी जिन्दगी ढल जायेगी।

एक हैं श्री लालजी। ये हैड साहब हैं। इनसे काम निकलवाने में बडे साहब को भी पसीना छूट जाता है। श्री लालजी को काम सौंप कर भूल जाइये क्योंकि वे भी भूल जाते हैं। बडे साहब उनके वार्षिक गोपनीय प्रतिवेदनो मे प्रतिकूल टिप्पणिया दर्ज करने का प्रयोग कर चुके हैं, लेकिन श्री लालजी की कार्यशैली को नहीं बदल पाये। बडे साहब ही बदल गये बल्कि यू कहना चाहिये कि बदलते-बदलते ही रिटायर हो गये। नये साहब आये तो श्री लालजी का सर्विस रिकार्ड देखकर उनक मुरीद ही हो गये।

अब नद बाबू को लो। वे दफ्तर आते वक्त अपनी कलम भूल सकते हैं लेकिन पॉकेट ट्राजिस्टर लाना कभी नहीं भूलते। इन्हे कुल दो ही तो शौक हैं। एक ऑल इण्डिया रेडियो की उर्दू सर्विस से प्रसारित होने वाले पुराने नग्मे सुनना और दूसरा क्रिकेट मैच की कमेट्री। दुनिया इधर से उधर हो जाए या सूर्य देवता पूरब की बजाय पश्चिम से उदय हो जाए लेकिन नद बाबू इन दो कार्यक्रमो को बिना नागा सुनते हैं। ट्राजिस्टर के सैल दफ्तर का स्टोर कीपर हर हफ्ते इन्ह बिना नागा इश्यू कर देता है। इससे आपको क्या लेना-देना! इन दो कार्यक्रमो मे आप खलल डालने की हिम्मत करेंगे तो वे आपकी खाल खींच देगे। आपको अगर अपनी फाइल और खाल प्यारी है तो आप कभी उन्हे डिस्टर्ब न करे। खूटी तानकर उन्हे ट्राजिस्टर पर पुराने गीत या क्रिकेट कमेट्री सुनने दीजिये। इसी मे आपकी और आपकी फाइल की गनीमत है वरना आप गहरे पानी पैठ जायेगे।

अपने रमेश गिलानी जी को तो आप खूब अच्छी तरह जानते होगे। लव मैरिज के मरीज हैं बेचारे। इनके दफ्तर और घर के फोन का उपयोग प्यार की बातो के लिये ही होता है। हर वक्त फोन 'बिजी' रहता है। प्रात ग्यारह बजे से पहले दफ्तर नहीं आते और शाम चार बजे बाद रुकते नहीं। इन पाच घण्टों म दो घण्टे लच के और शेष रह तीन घण्टा म 'खूटी ताण' कर आधे-आध घण्टे की छह किश्तों म अर्द्धांगिनी से प्यारी-प्यारी बाते करने मे समय बीत जाता है। भाई, जब उम्र ही प्यार की हो तो फिर आप दाल-भात म मूसलचद बनकर कजर ही कहलायेगे ना! कहा तो उधर कोयल सी मधुर आवाज और कहा इधर आपकी कौए जैसी काव-काव! भाड मे जाये आपका काम! इस दुनिया मे प्यार का इजहार करन से बढकर दूसरा काम ही क्या है जनाब!

रतिराम सिह से आप अवश्य ही परिचित होगे! घुडसवारी, बिलियर्ड और मुजरा, बस यही तीन शौक हैं उनके। आजकल मुजरा तो रहा नहीं, सो जब स सवाक फिल्में बनीं तब से आज तक जिन फिल्मो मे भी मुजरा गीत रिकार्ड हुआ उन सबकी ऑडियो कैसेट इन जनाब के पास मौजूद हैं। घर से रवाना होने से पूर्व पाबदी क साथ य कैसेट्स ब्रीफकेश मे रखकर दफ्तर लाते हैं वे। अब कोई मीटिंग हो या कोई कॉन्फ्रेस, रतिरामसिह को क्या लेना-देना। वे तो साफ कहते हैं-'हम उन नौकरशाहा म से नहीं जिन्हे कला सगीत या साहित्य का सऊर नहीं।' यही कारण है कि रतिरामसिह से मिलना लोगा के लिये टेढी खीर है। आप रोते-झींकते रह तो यह आपकी मुसीबत है। अगर मौसम मुजरा सुनने का न हो तो वे घुडसवारी करते हैं या बिलियर्ड खेलते हैं। आपको कोई एतराज तो नहीं!

ऐसे कई 'खूटी ताण' महापुरुष आपको और भी मिल जायेंगे। नाम गिनाने से कोई फायदा नहीं। कुछ चेहरे तो आप भी पहचानते होगे। ❑

मै भी दावेदार हू

कभी-कभी मेरे दिल में भी प्रधानमत्री बनने का ख्याल आता है। मन मे एक हूस चिहुक उठती है। मन हिलोरे लेने लगता है। किसी पर निकम्मा होने और किसी पर साम्प्रदायिक होने का दाग लगता है लेकिन मैं तो इन शब्दो के अर्थ ही नहीं जानता। यार दोस्तो की मण्डली को मुझ से बडी आशाए हैं। मैंने आज तक कभी किसी भी काम से फेवीकॉल नहीं खरीदा और यकीन मानिये कुर्सी से चिपकने की अपनी आदत न तो अभी है न ही भविष्य मे पडेगी। दोस्त कहते हैं कि 'यार, तुम कभी सीट पर नहीं मिलते।' सच है कि हम सेवा मे विश्वास करते हैं तो फील्ड म रहते हैं। कुर्सी से चिपक कर कोई भला किसी की क्या सेवा करेगा? प्रधानमत्री जनता-जनार्दन की सेवा करने का एक सशक्त माध्यम है। प्रधानमत्री क सामने सेवा का एक बडा कैनवास होता है। हमने भी सोचा कि चलो चास मिले तो 'चूको मत चौहान।'

अपुन ने भी महामहिम राष्ट्रपति को अपनी एक दरख्वास्त भेजी है जिसका मजमून कुछ यू है -

परम आदरणीय, महामहिम राष्ट्रपतिजी! नमस्कार। आप दुनिया के सबसे बडे लोकतांत्रिक राष्ट्र के राष्ट्रपति हैं। अपने बाल्यकाल से जीवन के इस पडाव तक आपने राष्ट्र की विभिन्न पदा पर रहकर सेवा की है। आपने और आपके परिवार ने देश सेवा के लिये बहुत कुछ त्याग किया है। आप पर आज तक कोई दाग नहीं लगा, यह परम सौभाग्य की बात है। इसके विपरीत आपके देखते-देखते देश 'दागीना लोगा के दलदल' में फस गया। आपको गहरी पीडा से गुजरना पड रहा है और ऐसी ही पीडा मेरे हृदय मे है। आज समय आ गया है जब इस पीडा का कटक काट दें। प्रधानमत्री को आज 'ब्लैक-केट' के बेल्ट मे बधकर चलना पडता है। वह सुख की नींद सो नहीं सकता और दिन में भी तारे देखने को विवश होना पडता है। निष्काम सेवा करते-करते भी उसे निकम्मा कहकर 'आउट ऑफ डेट' कर दिया जाता है। देश सेवा के ऊचे-ऊचे पुल खडे करने वाले राजनीतिक अभियता हमारे प्रधानमत्री को चलते-

चलते ही भ्रष्ट, निकम्मा और साम्प्रदायिक करार दे देते हैं और जनता जनार्दन को पूछते तक नहीं। राजनैतिक मनमानी के इस दौर से मुक्ति पा लेने का अब समय आ गया है।

महामहिम राष्ट्रपति जी, आप पर गुरतर दायित्व आ गया है। आपको अपने विवेक से देश सेवा के नाम पर मच रही धाधली को धूल चटाने के लिये विचार करना है। अत आग्रह है कि मुझ जैसे जनता-जनार्दन के जीवत प्रतिनिधि को एक अवसर देने का दुरूह निर्णय लेने पर विचार किया जाए। जनहित मे विचार किया गया तो मुझे प्रधानमत्री मनोनीत करने म आपको काई बाधा नहीं आयेगी। पूरा देश इसका स्वागत करेगा। मै तो खैर करूगा ही।

मुझे प्रधानमत्री मनानीत करने का कोई एक ही फायदा नही है। अनेक फायदे हैं। ये जो बाडेबदी होती है और राजनीति मार्केट बन जाता है और ऊची-नीची बोलिया लगती ह, उनसे छुटकारा मिल जायेगा। ये जो सावन के अधे हा रहे हैं और हरी-हरी घास चर रहे हैं, उससे धरती बजर हो रही है। अधेरे का छाटना है। तो बस एक बार आप 'बोल्ड डिसीजन' लकर देखिये। भानुमती का कुनबा थाडी देर कुलबुला कर रह जायेगा।

महामहिम! आप एक बार अवसर तो देकर देखिये कि हम क्या कर सकते हैं। ये जो लोगा की बडी-बडी ताद पनप रही है उनकी चर्बी न छट जाय तो मुझे कहना। जिनके पैर जमीन पर नही पडते और शरीर जिनका आसमान म उडता है न उन सबको जमीन से जोड दूगा। ये जो वातानुकूलित कोठियो म रह-रहकर गर्मी से दूर भागने की उनकी प्रवृत्ति है, उन्ह किसान के पास भेजकर जेठ को दुपहरी म जमीन यानी धरती माता की सेवा करना न सिखा दू तो मेरा भी नाम नहीं। इन्ह आम आदमी की तरह डी टी सी की बस म सफर करना सिखा दूगा। राशन की लाइन म लगने की इनकी जो आदत छूट गयी है न, उसे वापस डालना पडेगा। ये जो सोफे पर पसर-पसर कर बडी-बडी बात करने की आदत पड गयी है न, उसे भी बदल दूगा। इन्ह 'टू रूम सेट' के मकान म रहने की आदत डलवा दूगा। झोंपड-पट्टी का नाम ले-लेकर ये जो गले फाडते हैं न, जरा देख तो सही कि वहा का वास्तविक जीवन क्या है? अगर इन झुग्गी-झापडिया मे इनके स्थायी शिविर न लगवा दू तो मेरा भी नाम नहीं। इनकी लाइफ स्टाइल को पब्लिक लाइफ से जोड दूगा। बडे दूर-दूर घूम रह हैं पब्लिक से अभी ये। फर्स्ट क्लास और एक्जीक्यूटिव क्लास का नाम लेना न भुला दू ता आप कहना मुझ। सेवा के बहाने ये सुरक्षा का जो बदोबस्त अपन लिय करत हैं, सब भूल जायग। सच ता यह है कि ये देश की जनता के लिये खतरा बन गय हैं। अब इस खतरे का खात्मा करना ही समीचीन होगा।

क्या आप सूली पर चढेगे

हर पिता की बस एक ही मनोकाक्षा होती है कि उसकी बेटी के हाथ खुशी-खुशी पीले हो जाये। वह ससुराल मे सुख-चैन से रहे। पति का घर या ससुराल उसके लिये स्वर्ग बन जाये और नरक की हवा उसे छूने भी नहीं पाये। यही स्थिति एक रचनाकार की होती है। रचनाकार हान क नाते में भी अपनी रचना को जब अपने ससुराल के लिये लिफाफे रूपी डोले म रवाना करता हू ता यही आकाक्षा लिये होता हूँ कि वह अपने समाचार पत्र या पत्रिका रूपी ससुराल मे जाकर उसके कलेजे की कोर बन जाये। पत्र-पनिका के पाठक परिवार उसकी खूबसूरती पर रस्क करे।

यहा मैं आपको बताना प्रासगिक समझता हू कि मैं अपनी हर रचना से बहुत प्यार करता हू। जैसा कि हर पिता के साथ होता है वह कभी पीडा भोगता है तो कभी खुशी-खुशी अपनी रचना को जन्म देता है। प्रकृति ने हर रचनाकार के लिये यही नियति निर्धारित की है। ऐसे जन्मदाता जो लापरवाह होते हैं उन्हे इसका अहसास नहीं हो पाता। मैं बाकायदा अपनी रचना को बडे प्यार और जतन से पालता हू। उसे ऊपर से नीचे तक सजाता हू। शब्दो के आभूपणो से विभूपित करता हू। यह अलग बात है कि मैं यह सब अपने सामर्थ्य के अनुरूप ही कर पाता हूँ। हर आदमी की अपनी-अपनी क्षमता होती है भाई।

लोग तो एक अदद पुत्री के जन्म पर शोक मनाने लगते हैं। हाय तौबा करने लगते हैं। सास अपनी बहू पर तानो की सहस्र वर्षा करने लगती है। पति भी रूठकर पत्नी से मुह फेर लेता है। इधर आप हमे और हमारे जिगर को देखो। कई-कई रचनाओ को जन्म देकर भी हम कभी दु खी नहीं हुए। भई रोने और दु खी होने का क्या फायदा? रचना अपना भाग्य अपने साथ लेकर आती है। अपना फर्ज तो यह है कि उसे ठीक से पाल-पोसकर बडा करो, अच्छे यस्त्र-आभूषण पहनाओ और जब यौवन की दहलीज पर कदम रखे तो खुशी-खुशी विदा कर दो।

एक कन्या की नियति की तरह ही मेरी रचना की नियति भी निश्चित है। कई बार खूब सजा-सवार कर भेजी गई, वधु वेश मे पहुची रचना को सपादक रूपी वर

बिना देखे ही उसका गला घोटकर 'डस्टबिन' की नींद सुला देते हैं तो कभी कोई उसको 'वापसी लिफाफे' के डोले में बिठाकर लौटा देते हैं। ऐसी स्थिति म भी हम निराश-हताश नहीं हाते बल्कि उसका दुबारा मेकअप करते हैं, वेणी को वापस सवारते हैं, पुराने वस्त्र उतार नये वस्त्र और आभूषण पहनाकर दूसरे आकाक्षी के पास भिजवा देते हैं। इसके साथ ही ईश्वर से मगल कामना करते हैं कि इस बार वह नहीं लौटे और पति परमेश्वर को अपनी छम-छम से बाहुपाश मे कस ले। आमतौर पर मेरी रचनाआ की यह खूबी रही है कि वे वर रूपी सपादक को अपने वशीकरण मत्र मे बाधकर पत्र-पत्रिका रूपी परिवार की शोभा बन जाती है। यह अपने मुह मिया मिट्ठू नहीं वरन् हकीकत बयान कर रहा हू। कई-कइ रचनाए तो स्थायी महत्व की बनकर औरो के लिये आदर्श उपस्थित कर देती हैं तो कई ऐसी होती हैं जो अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी से जूझती-जूझती मुक्ति पथ पा लेती हैं।

विचारो में आकठ डूबा मैं कभी-कभी सोचता हू कि निराला, पत, गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर महादेवी, मटो, प्रेमचद की तरह की रचनाओ को ही जन्म दू ताकि कालजयी बनें। इसमें मुझे बस एक ही बाधा नजर आती है। आजकल के वर भी माफ करना, वैसी सोच के धनी नहीं हैं। उन्ह तो ऐसी नगर वधुए चाहिये जो फिल्मी नायिकाओ की तरह मटक-मटक कर नाचे, नयन-सुख देकर घायल कर दे और अपने होठो पर लिपस्टिक लिथडकर सामने वाले का लूट ले। इस सोच के 'डवलप' होने भला सादगी भरी सुन्दरता की कौन कद्र करे। लोगो का सोच ही सठिया गया है बल्कि यू कहना चाहिये कि उन पर सेठियाई सोच ही वर पर हावी है। यदा-कदा ऐसा भी महसूस होता है कि वर बेचारा भी क्या करे। उसे भी अपने ऊपर बैठे आकाओ का ख्याल रखना पडता है।

प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया दोनो परिवारा में घमासान मचा है। प्रिंट मीडिया परिवार तो आज भी सजीदा है। वहा अभी लोक-लाज बची हुई है। गरिमा की सघनता है। विचारा का मान-सम्मान है। पर्दा-बेपर्दा का फर्क भी महसूस किया जाता है। सस्कारो का ख्याल रखा जाता है, लेकिन इलेक्ट्रोनिक मीडिया तो पाप की ही गठरी ढो रहा है। रचना को नगा करके भी कहता है कि अभी इसमें आधुनिकता नहीं आई। बुरे-भले मे फर्क करने का शऊर ही कहा रह गया है अब।

इधर यार लागों न रचनाए पैदा करने की फैक्ट्रिया खोल दी हैं। शर्म तो फुर्र हो गयी है। अरे भाई सोचो कि परिवार नियोजन पर दुनिया भर मे रिसर्च चल रही है। बढती फौज के कारण एक छोटा सा घर चलाना मुश्किल हो रहा है तो आप अपनी रचनाओं का जगल खडा करके क्यो जगल को दगल बनाने पर उतारू हो। धैर्य से अपनी रचनाओं को जन्म दो, उन्हें अपने अनुभवा की गाढी कमाई से अर्जित शिल्प

और शब्द सामर्थ्य से अलकृत करो। यह क्या बात हुई कि खुद ही फूहड होकर अपनी रचनाआ का फूहडता के दलदल मे धकेल रहे हो। एक रचना से दूसरी रचना के जन्म के बीच कुछ तो अतर रखो।

इतिहास और समय आपकी रचनाओ को ऐसे ही दर्ज करता रहा तो आने वाली पीढिया आपकी खता माफ नहीं करेगी। आप पर थू-थू करेगी- आपकी कब्र पर, समाधि पर। ऐसा इतिहास और साहित्य रचो कि आपकी रचना अमर होकर आपको अमर करे। 'अमर बकरे' की तरह इधर-उधर मुह मारते फिरे तो आपकी मुक्ति मुश्किल है। मैं नहीं कहता कि अपनी रचना को आजीवन कुआरी रखो लेकिन उसे इतना गुणवान करो कि वह चाहे तो भी कुआरी न रह सके और स्वयवर रचा जाए तो सही गले मे वरमाला डाल सके। गुणवान वधु को गुणी और वीर वर अपने आप ले जायेगा। अपनी पगडी किसी के आगे रखकर उसे वरण करने की भीख आपको नहीं मागनी पडेगी। अभी तो भईया यही हा रहा है कि 'रचना ले लो रचना ले लो' की पुकार चारा तरफ गूज रही है। रचना की प्रदर्शनी लगा-लगाकर लोग घूम रहे हैं और शर्मसार भी नहीं हो रहे। रचना क्या हुई मानो कोई जिस हो गई। अगर अपनी रचनाओ का वर के साथ ससम्मान विदा करन की ताप नहीं है तो उन्ह रचने से पहले आत्महत्या ही कर ला वरना एक दिन यह समाज मिलकर आपकी हत्या कर देगा। यह समाज आपको भरे चौराहे सूली पर लटका देगा। और इतिहास मे नाम भी होगा।



पत्र-युद्ध के साक्षी

भारतीय सस्कृति मे शिक्षा की उच्च और महान परम्पराए रही ह। मानने वाले तो शकुनी मामा के चिरस्मरणीय विवेक को भी ज्ञान और शिक्षा का अमृत कलश मानते हैं। कई पारगत ज्ञान पिपासुओ न इससे आगे की खाज की थी और तभी से पत्र-लेखन की परम्परा शुरू हुई। इस परम्परा ने प्रेम का बीजारापण करने म महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तो प्रेम को खडित करने की जबरदस्त अनुभूति भी कराई है।

इतिहास साक्षी है कि महापुरुपो के पत्र-व्यवहार सम्बन्धी दस्तावज आज भी हमारे लिये प्रेरणा स्रोत हैं। ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जायेगे जो पत्रा को सजोकर रखते हैं। इसके फायदे भी बहुत हैं। कई पत्र पुरा महत्व के बन जाते हैं ता दा आने से दो करोड डालर के हो जाते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, अब्राहम लिकन जॉर्ज वाशिगटन, दोस्तोवस्की, प्रेमचद, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर सुभापचन्द्र बोस चाऊ-एन-लाई, पण्डित जवाहरलाल नेहरू के पत्र आज आर्काइव्ज वेल्यू के कारण करोडा डालर के हैं। ये अलग बात है कि इनके पत्र युद्ध-शैली के उदात्त उदाहरण नहीं बन सके। केवल नेताजी सुभाप चन्द्र बोस के एकाध पत्र इस श्रेणी म रखे जा सकते हैं लेकिन आजकल तो 'हड्रेड परसेट' पत्र इस शैली मे लिखे जाने की परम्परा बन गई है।

इस शैली को ईजाद करने के पीछे बाकायदा एक रणनीति रही है। हम शारीरिक हिसा के विरोधी रहे हैं। हम गाधीजी के अहिसा सिद्वात के उपासक हैं। हिसा फिर भी मानव मस्तिष्क मे बनी रहती है क्याकि यह प्रकृति प्रदत्त है। इसको प्रस्फुटित न भी करो तो यह अपने तरीके से उद्घाटित हो जाती है। इस पर किसी का वश नहीं। मनुष्य चूकि समस्त प्राणियों म सर्वश्रष्ठ और बुद्धि प्रधान जीव माना गया है इसलिये विवेकशील होने का खिताब उसे हासिल है। इस खिताब से विभूपित हाने क कारण वह खत-किताबत के जरिये हिसा को शालीनता से प्रकट करके अपनी कुठा और मानसिक कुरूपता को प्रकट करता है। इस कुठा को अगर भीतर से न निकाला जाये तो मनुष्य के पागल होने और अपने ही कपडे फाड लेने का खतरा है।

आजादी के बाद हमारे विचारो ने नया मोड लिया है। हम दलों म बट गये और इन दलो के दल-दल म कई बदिश हो गयीं। खुले आम अपने ही दल म किसी पर कीचड उछालने की छूट नहीं रही। जाजम पर भी मर्यादा रखना जरूरी हो गया है। कहने को तो कहा जाता है कि कोई शिकवा-शिकायत हो तो एक जाजम पर बैठो और उसका समाधान करो लेकिन वहा साहस के अभाव मे सास पर काबू रखना पडता है। गाया यह आयोजन 'मर्यादा महोत्सव' का शिकार हो जाता है। ऐसी सूरत म पढा-लिखा व्यक्ति अपने शिकार पर वार करने के लिये पत्र को बाज बनाकर अपने शिकार पर टूट पडता है। पत्र पाकर शिकार घायल हो जाता है और उपचार तलाश करने लगता है। शिकारी कोई सोची-समझी युद्ध शैली ही अपनाकर शिकार पर वार करता है। आजकल का शिकारी कोई वैसा नहीं कि शिकार किया और चुपचाप उठाया खाया-पीया और सो लिया। वह समय क साथ प्रचार का भूखा भी हो गया। शिकार करे तो वह अपनी साहसिकता का गुणगान भी सुनना चाहता है, इसलिये मीडिया को मित्र बनाकर वाहवाही लूटने से नहीं चूकता। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि शिकारी अपने शिकार पर कोई बल्लम न भी फके लेकिन मीडिया के जरिये उसका सुनियोजित प्रचार कर शिकार का भयभीत कर देता है। यह भी पत्र शैली का आधुनिक नियम है। इससे शिकार छटपटाकर स्वय हथियार डाल शिकारी के सामने 'आ गया हू, मुझे खा' की मुद्रा मे खडा हो जाता है। कई चालाक शिकारी अपने शिकार की ताकत तौलने के लिये भी इस शैली का इस्तेमाल करते हैं। आपने अगर 'सी-हॉक्स' की कुछ कडिया देखी हों तो आपको समझने मे देर न लगेगी। फिरौती वसूलने वालक भाई लोगो की तो शैली ही यही है। उधर मछुवार मछली पकडने और काय डालने से पहले आटे की गोलिया बनाकर डालते हैं। पढे लिखे शिकारी पत्र लिखते हैं। समुन्दर की मछलिया तो अनपढ होती हैं न इसलिए उन्हे पत्र लिखने से क्या फायदा। आटे की गोलिया डालकर उन्हे फासना पडता है।

राजनीति म पत्र-लेखन बाकायदा एक छापामार युद्ध की भूमिका अदा करने लगा है। आप देखेगे कि किसी भी विचारधारा के लोग हो सब जगह पत्र-युद्ध चल रहा है। भगवान जाने इनकी कोई आर्काइव्ज वेल्यू है कि नहीं लेकिन मौजूदा मूल्यो की पहचान तो इससे हो ही जाती है। अब आपको क्या बताये कि बेचारे राजनीति के सेनापति इस शैली के कारण सबसे ज्यादा कष्ट भोगत हैं। व अनुशासन से बधे हैंऔर अपनी फौज को अनुशासन मे बाधकर रखने के लिये प्रतिबद्ध हैं। पत्र-लेखन अनुशासनहीनता की श्रेणी मे तो कदापि नहीं आता। यह शिष्टाचार का हिस्सा है भले ही लिखने वाला भ्रष्टाचार का बच्चा या जच्चा हो। पत्र-युद्ध के दौरान दोनो पक्ष भीतर ही भीतर कुढते हैंऔर दुआ करते हैं कि ऐ खुदा शाति स्थापना के लिये उन हाथो

को कोढ हो जाये जो हम सता रहे हैं। ऊपर वाला सुने न सुने, उसकी मर्जी। तब तक तो पत्र-युद्ध चलना ही है। मैदाने-जग म साक्षी बनकर आप भी खडे रहिये। धूप-छाव, अधड-तूफान, चलती-उठती दुकान की परवाह मत कीजिये। हमारे साहित्यकार बधु भी पत्र-युद्ध शैली से अपरिचित नहीं हैं। साहित्यिक पत्रिकाआ पत्र-युद्ध चलाया जा रहा है ताकि पत्रिका जीवत बनी रहे और लोग तेस मे आकर एक-दूसरे की 'वो' करे । आधुनिकता के इस अनूठे रग से भला साहित्यकार अछूता कैसे रह सकता है। आखिर वह भी तो समाज के 'चेतना शिविर' का नेता है।



शातता, नेताजी निद्रालीन आहे

नेताजी अपने बगले मे जेठ की जान लेवा दुपहरी से छुटकारा पाने के लिए वातानुकूलित कक्ष मे नरम-नरम गद्दे पर आराम फरमा रहे थे कि उन्होने अपने आसपास हो-हल्ला सुना। नेताजी भडभडा कर उठ बैठे। वे देखते ही रह गये और भीड कमरे का किवाड तोड कर भीतर घुस आयी। नेताजी का जी मिचलाने लगा। भीड की धक्कम-पल स उनका पलग चरमराने लगा।

'अरे भई क्या यह हमला बोल दिया किवाड तोड दिया और गर्मी का गुब्बारा फोड दिया?' नेता मतलबीराम ने एक साथ अपने गुस्से का इजहार किया। वे आगे बोल ही नहीं पाये थे कि कमरे मे भीड इतनी बढ गयी कि एयर कडीशनर की ठडक पहुचाने की क्षमता चीं बाल गई। नेताजी का दम घुटने लगा। कमरा गैस चबर बन गया।

'भाई लोगो। कुछ बोलो तो सही कि आखिर माजरा क्या है?' नेताजी लगभग चीखते हुए बोले। अब एक साथ कई आवाजो ने उन्हे ध्वनि प्रदूषण से ग्रस्त और ध्वस्त कर दिया। उन्हें जा स्वर सुनाई दिय व न तो लता मगेशकर के गाये मीठे बोल थे न किशोर कुमार या मन्ना डे के प्रयोगधर्मी नग्मे। बस इतना ही साफ-साफ सुनाई दिया कि काई बाध टूट गया है। नेताजी ने जन बल के इस अप्रत्याशित हमले के आगे अपना आपा खोना उचित न समझा। उन्होने समझदारी और टूटती हिम्मत को बटोरते हुए 'टालू मिक्सचर' देने की नीयत से कहा, 'बाध टूट गया है तो टूटने दो फिलहाल हमें सोने दो। ठेकेदार अपना साला है उससे वापस बनवा देंगे। शायद बाध का पानी सड गया होगा। सडे पानी को बहने दो निर्मल हो जायेगा।'

'अरे ओए रे नेता ज्यादा चपड-चपड ना कर। बहुत बहक गया है क्या। हम इधर पानी वाले बाध की बात करने को नहीं आय। वह बाध तो साला तेरे इधर आते-आते ही टूट गया था। जनता के भाग्य की तरह फूट कर बह गया था। हम तो यह कहने आये हैं कि अब हमारे धीरज का बाध भी टूट गया है।' भीड मे से उभरा स्वर

नेताजी को खूब अखरा। पर नेताजी ने बडी नरमाई से कहा, 'आप लोगो का दर्द मैं समझता हू। बाध टूट जाने पर बहुत नुकसान हो जाता है। इसका मुआवजा तो मिलना ही चाहिए। लेकिन, कोई बात नहीं, आप घबराए नहीं, मैं अभी राहत मत्री को फोन मिला कर धमका देता हू। बाध मे जितने लोग मरे हैं या घायल हुए हैं उन सबको मुआवजा दिलाने की मेरी गारटी है। आप लोगो ने आग की तरह झुलसा देने वाली गर्मी मे ख्वामखाह यहा आने का कष्ट उठाया।'

नेता जी को जनता का इस तरह दौड-दौड कर आना अच्छा नहीं लगा। दौडने से भूख ज्यादा लगती है। उन्होने पास ही हाथ बाधे खडे अपने पी ए को हुक्म दिया 'जाओ, इन सबके लिए ब्रेड पीस और पकोडे का इतजाम करो।' पी ए ने जमादार को आखो से समझाया। इस इशारे से वह ऐसे खिसका जैसे कोई चट्टान भूकप का झटका खा कर खिसक जाती है।

इस बार जनता चिल्लाई, 'गाव को कोई शाप लग गया है। कभी सूखा तो कभी बाढ का प्रकोप बना ही रहता है। पीने के पानी का अकाल तो परमानेट है। रोजगार का कोई साधन नहीं है। अस्पताल है तो डॉक्टर और दवाइया नहीं। स्कूल मे बच्चे हैं, परतु शिक्षक नहीं। पेड सूख गये हैं, जिसकी लकडी बच्चो के खेलने का गिल्ली-डडा बन गयी है। आखिर इन सबका क्या होगा?'

यह सुन कर पहली बार नेताजी की भृकुटी तनी। वे भाषणो के शिखर पर खडे होकर बोलने लगे, 'देखो तुम लोग कान खोलकर सुन लो। मैं जादूगर सरकार या उनका कोई पाटवी शिष्य नहीं हू कि 'वाटर ऑफ इडिया' का कलश भर-भर कर सबको पिलाता रहू। आपके लिए इजीनियर नहर को खींच कर ला रहे हैं। गावो मे पेडो से क्या फायदा? शहरो मे अनगिनत गगनचुबी इमारतो मे फर्नीचर की जरूरतो को पूरा करने के लिए हमने सारे पेड कटवाये। मजदूर को मजदूरी मिली और उसका पेट भरा तो आपका पेट क्या गुडगुडाने लगा। मजदूर तो सारे गाव के ही हैं ना। पशुओ को चारा खिला-खिलाकर आपने कमजोर कर दिया है। इन्हे गेहू-बाजरा खिलाओ ताकि हौलेड के जानवरो की तरह दूध देने लगें। वैसे अब जानवर रखने की जरूरत भी क्या है जब बाजार मे दूध पाउडर के पैक बद डिब्बे आसानी से मिल रहे हैं। जानवर पालना फिजूल है। इनसे गाव मे गदगी फैलती है। बीमारिया पैदा होती हैं। आप कहते हो कि अस्पतालों में डॉक्टर और दवाइया नहीं हैं लेकिन सरकारी अस्पतालो मे जाने की क्या जरूरत है जब गली-गली मुहल्ले-मुहल्ले मे प्राइवेट अस्पताल खुल गये हैं। बेचारे मरीजो का वे भी तो ख्याल रखते हैं।

स्कूलो मे अध्यापक नहीं है तो छुट्टी पर गये होगे। छुट्टी पर जाना उनका मौलिक अधिकार है। मौलिक अधिकारो का हनन करना कानूनी अपराध है। जहा

तक बच्चा के गुल्ली-डडा खेलने का सवाल है, यह उनकी उम्र का तकाजा है। उन्हे खेलन-कूदन दो। पढ-लिख कर भी वे हमे कितना निहाल कर दग। राजगार दफ्तरा मे आजकल बेराजगार लोगो का नाम लिखने तक के लिए न कागज है न फुरसत। अच्छा तो यही होगा कि आप उन्ह अभी से शहरों मे भिजवा द। जूता-पॉलिश कर लेगे, अखबार बेच लेगे या कचरा बीन लेगे। काम करने में कोई शर्म नहीं है। बेकार घूमने से तो पाकिटमारी का प्रशिक्षण लेना ही अच्छा है। अब तो इसकी भी कई गेंग बन गई हैं। हुनर की कोई कमी नहीं है।'

नेताजी के सूखते गले को सहारा देने के लिए नेताजी के सेवक ने उन्हे पानी का गिलास थमा दिया। गला तर होते ही नेताजी फिर फर-फर बोलने लगे, 'आप लोगो के पास भी अगर कोई काम न हो तो शहर आ जाओ। झुग्गी-झौंपडियो के लिए यहा कोई जमीन की कमी थोडे ही है। इनमे भी लोग बडे ठाठ-बाट से रहते हैं।

भाषण से नेता मतलबीराम का गला साफ हो गया। सदाशय जनता 'सत्य वचन' सुनकर भाव विभोर हो गयी। नेताजी को नमन करते हुए गाव की ओर लौटने लगी। देखते ही देखते एयरकडीशनर की ठडक फिर लौट आयी। नेताजी को नींद की झपकी आने लगी। नेताजी ने जब आखे मूद लीं तो पी ए ने कमर क बाहर एक तख्ती लटका दी, 'शातता, नेता जी निद्रालीन आहे।' ❑

अभिनव कम्पनी

सुपर बाजार से गुजरते हुए हमने देखा कि शॉप न 420 पर एक भव्य समारोह चल रहा है। राजनेता, पत्रकार और गणमान्य नागरिक वहा हाथो मे प्लेट थामे माल उडा रह हैं। पास मे ही कई तरह की नमकीन, तले हुए काजू, भुनी हुई मूगफली, बादाम, चिलगोजे, अखरोट और ऐसे-ऐसे सूखे मेवे कि हमे उनके नाम भी नहीं मालूम। हम जैसे मध्य वित्त परिवार के नामाकूल लोगो को जब ये चीजें कभी देखने का भी नसीब नहीं तो नाम कैसे पता हो। गेहू, बाजरा या मक्का की रोटी और पतली दाल के अलावा हम जैसे लोग और जान भी क्या सकते हैं। हा, तो वहा इन सूखे मेवो के साथ ही देश-विदेश में निर्मित पॉपुलर वाइन्स के कई ब्रॉंड भी मौजूद थे। ऐसा लगा कि समारोह शुरू हुए कुछ क्षण ही हुए थे। हमारे मुह से भी लार टपकने लगी। एक तो निमन्त्रण ही नहीं दूजा अपनी फटीचर हालत देखकर मन मे यह भय रहा कि वहा हम जैसे अयाचित को कोई भी घुडकी देकर भगा सकता था। चोर के पाव कच्चे होते ही हैं और हम चोरी-छुपे इस माहौल का मजा लेने की स्थिति मे नहीं थे, सो दूर खडे हो गये।

कोई घण्टे भर तक चले इस चकाचक और रगारग कार्यक्रम का हम दूर खडे मुआयना करते रहे। समारोह के आयोजको मे से एक ने हमे इशारा करके पास बुलाया। हम भीतर तक काप गये कि अब शामत आई। कहीं यह हम ढोल समझकर पीटने तो नहीं बुला रहा! हुआ इसका उल्टा। उसने प्यार से बात की। बोला—आइये, आइये। आप भी शरीक होइये। वह कहने लगा- हमने एक कम्पनी खोली है। पढे-लिखे तो हैं ही आप, शायद लोक सेवा से फुरसत पाकर घर लौट रहे हैं, उसने कहा। हमारी नजर दुकान के साइन बोर्ड को घूरने लगी जिस पर लिखा था—पॉपुलर गवर्नमट कस्ट्रक्शन कम्पनी।

उस सज्जन ने अपना नाम बताया—दलालचद दद्दा। हा यही नाम था उसका, जो कम्पनी का दो टक का पार्टनर था। कम्पनी म एक ही तरह की गणवेश धारण किये कोई चालीसेक लोग थे जो सभी एक दूसरे के पार्टनर लगते थे। सभी ने हमसे

बारी-बारी हाथ मिलाया। हम तो इसी से गद्‌गद् थे कि कहा तो हम ढोल बनने का सोच रहे थे और कहा यह पोल मिली कि खाओ-पीओ मस्त रहो के इस आनदोत्सव मे अपने जैसे निठल्लो के भी कद्रदान मिले।

खा-पी लेने के बाद जब लोग खिसकने लगे तो माइक पर ऐलान हुआ—'प्रिय मित्रो, कृपया अपनी-अपनी सीट पर विराजन का कष्ट कर। कम्पनी क मेनेजिग डायरेक्टर फोकटमल फितूरिया कम्पनी के उद्देश्यो के बारे मे अपने अमूल्य विचारो से आपको अवगत करायेगे। इस उद्‌घोषणा के बाद सभी उपस्थित सज्जन अपनी-अपनी सीटो पर धस गये।

मैनेजिग डायरेक्टर फोकटमल ने अपना उद्‌बोधन प्रारम्भ किया—साथियो! आपने नई कम्पनी के उद्‌घाटन अवसर पर पधार कर हमारी जो इज्जत अफजाई की है, उसके लिये कम्पनी के सभी भागीदार बल्लिया उछल रहे हैंऔर यह आस बधी है कि कम्पनी का काम चल निकलेगा। हमारे प्रमुख उद्देश्य बताना समीचीन होगा ताकि जरूरत पडने पर आप सीधे हम से सम्पर्क कर सके। सरकार बनाते समय एम पी या एम एल ए, अथवा नगर निगम या नगरपालिका मे किसी पार्टी को बहुमत न मिले तो निराश न हो। हम जोड-तोड का ठेका देकर आप खूटी तान सो जाइये। सूटकेस मे लेकर दुकाई-पिजाई तक मे माहिर हमारे लोगों की सेवाए मौजूद हैं। चलती फिरती सरकार का गिराने और नई सरकार बनाने तक का ठेका देकर आप सुख की नींद सोइये। शपथ-ग्रहण तक हम आपका साथ देगे। हमारी कम्पनी अभी इस क्षेत्र मे नई है इसलिय सरकार बनाने और चलती सरकार को धरम धक्का देकर गिराने की फीस मे 10 प्रतिशत की रियायत का प्रावधान किया गया है। अनुमानित राशि का 80 प्रतिशत अग्रिम लिया जायेगा। हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेवारत कम्पनियो म से एक प्रमुख कम्पनी से शीघ्र ही सम्बद्ध होने जा रहे हैं। कम्पनी की समस्त सेवाए पच सितारा सुविधाआ से परिपूर्ण होंगी। जो व्यक्ति पहली बार हमारी सेवाए लग उन्हे 50 प्रतिशत तक रियायत दी जायेगी। यह सुविधा सीमित समय के लिये है। हमारे पास जिस दिन एक दर्जन प्रकरण विचाराधीन हो जायेगे उस दिन से यह सुविधा समाप्त कर दी जायेगी।

फितूरिया ने आगे कहा—प्रातीय सरकार के मामला म राज्य स्तर पर जिसे कम से कम पाच विधायकों का समर्थन प्राप्त हो वे ही सम्पर्क करे। इसी प्रकार केन्द्र सरकार के मामले म लोकसभा के 50 सासदा के समर्थन वाले उत्साही सासद ही सम्पर्क करें। शेष समर्थन का जिम्मा हम पर छोड द। हम सरकार बनवा देगे। दल-बदल कराने के मामले में हमारी रणनीति का काई मुकाबला नहीं। हम झाड-झाड और खण्ड-खण्ड नहीं बल्कि डाल-डाल और पात-पात जैसी पुख्ता रणनीति अपनायेंगे कि गुप्तचर भी लेन-देन के पर्चे ढूढते रह जायेंगे।

लोकप्रिय सरकार बनाना हमारा प्रमुख आदर्श है। किसी सरकार को गिराने या नई सरकार वनाने के लिए हमारी कम्पनी के विशेषज्ञ अपनी जान लगा देगे। कोई उत्साही व्यक्ति जो मुख्यमत्री या प्रधानमत्री अथवा नम्बर टू का नेता बनने के इच्छुक हों तो वह हमसे डिनर पार्टी पर वार्ता कर सकते हैं। कन्सलटेशन फीस मात्र 10 हजार रुपये रखी गयी है जो बडे नोटो या विदेशी मुद्रा डालर अथवा पौंड के रूप मे नकद ली जायेगी। चैक या ड्राफ्ट स्वीकार्य नहीं होगे। हमारे दूरभाष यत्र चौबीसा घण्टे काम करते हैं। इनके नम्बर 420420 और 363636 हैं। हमने पॉलिटिक्स सिखाने के लिये त्रिस्तरीय प्रशिक्षण शिविर भी प्रारम्भ करने का निर्णय लिया हे। आप चाहे ता ब्रेकफास्ट पॉलिटिक्स, लच पॉलिटिक्स और डिनर पॉलिटिक्स शिविर मे सुविधानुसार नियमित प्रशिक्षण ले सकते हैं। फीस प्रार्थी के अब तक के अनुभव और राजनीतिक किटाणुओ के मूल्याकन के आधार पर निर्धारित की जायेगी।

कम्पनी ने बहुत सोच समझकर यह निर्णय भी लिया है कि जिस व्यक्ति मे राजनीति म आने के गुण तो विद्यमान हैं किन्तु धनाभाव के कारण वह आगे नहीं बढ पा रहा है और उसका बडे नेताओ के बीच सिक्का उधार चलता है तो उसका 'आई क्यू टेस्ट' लेकर उसको आगे बढाने के लिए धन भी लोन पर उपलब्ध कराया जा सकता है। ऐसे प्रार्थी से बॉण्ड भरवाया जायेगा कि जब भी वह सभासद विधायक, सासद या मत्री पद पर आसीन होगा उसे कम्पनी की शर्तों के अनुसार ट्रासफर या पोस्टिग कराने, कोटा, परमिट या लाइसेस दिलाने अथवा उपयोगी कार्य बिना ना-नुकर के करने होगे। कम्पनी इस बात के लिए वचनबद्ध रहेगी कि उस नेता को यथा सभव इस कारण बदनाम नहीं होने देगी। कम्पनी मीडिया पर भी अपनी पकड मजबूत रखेगी ताकि काई एसा-वैसा काम प्रकाश म ही नहीं आये। हल्दी की गाठ लकर पसारी बनने जैसे और जनहित याचिका दायर कराने की धौंस देने मे माहिर लोगो को भी कम्पनी अपने वश म रखने का यथा सभव प्रयास करेगी ताकि वे बेमतलब का बखेडा खडा नहीं करे। कम्पनी की और भी कई आकर्षक योजनाए हैं। कम्पनी ने बाकायदा एक प्रासपेक्टस छपवा रखा है जिसे एक हजार रुपये की नकद राशि देकर क्रय किया जा सकता है। इसको वही व्यक्ति क्रय कर सकता है जो किसी न किसी राजनैतिक दल का प्राथमिक सदस्य है।

फितूरिया का उद्‌बोधन समाप्त हुआ तो वहा उपस्थित लोगो ने तालिया वजाकर कम्पनी को बधाई दी। अकेले हम ही ऐसे थे जो न राजनीतिज्ञ थे न पत्रकार लेकिन खादी का कुर्ता-पाजामा पहना हुआ होने के कारण कम्पनी के भागीदार ने नेता मानकर वहा का लुत्फ उठाने का सम्मान दे दिया था। हम तो बस एक अदद वोटर और फटीचर इसान थे।



दिल के अरमा आसुओ मे बह गये

जैसा कर्म करोगे वैसा फल देगा भगवान। यह कहावत हमारे गले कभी नहीं उतरी। इसका कारण भी साफ है कि हमे भगवान पर तो पूरा भरोसा है लेकिन कर्म पर नही। कर्म थोडा कन्फ्यूजन क्रिएट करता है। हो सकता है जिसे हम अच्छा जानकर करें वह बुरा कर्म हो और जिसे बुरा माने वही अच्छा हो। इसलिय न तो कम करा न किसी झझट मे पडो। हमारा तो इसमे यकीन है कि भाग्य के भरोसे पडे रहो भगवान भली करेगा। इससे कर्म के भले-बुरे परिणाम के उल्टा-पुल्टा होने का कोई खतरा नहीं।

कर्म की बजाय भाग्य पर भरोसा करने के पीछे भी हमारे पास ठोस कारण है। आपकी ज्ञानवृद्धि के लिये बता देते हैं कि भुजग कहीं कमाने नहीं जाता। चूहा और चींटी कभी भूखे नहीं सोते। हर जीव भगवान की माया है। हमारी काया पर भी उसी का साया है।

हमारे जैसे अनेक लोग इस ससार मे भगवान के भरोसे बैठे हैं। हम भले ही रोटी-पानी के लिये मेहनत-मजदूरी करे। लेकिन भाई लोग तो लगरखाने मे ही अपना जीवन गुजार देते हैं। दुनिया क रग-ढग देखकर हमारी इच्छा भी ठाठें मारती है। बात सिर्फ रोटी की ही होती तो हम भी लगरखाने में अपना लगर डाल देते लेकिन इसान हाने के नाते हमारे भी कई अरमान हैं। इन अरमानो का गला तो नहीं घाट सकते। हमारे अरमानों की एक लम्बी सूची है। इसमें कार है, बगला है, नौकर-चाकर हैं, पाच सितारा होटल है, चौपाटी है, गोवा की सैर है, कश्मीर की वादिया हैं, स्नो-स्केटिंग है, हवाई जहाज का सफर आदि सभी कुछ है।

अपने अरमान पूरे करने के लिये अगर कर्म करने लगे तो फिर भगवान की क्या भूमिका है। इसलिये भाग्य के भरोसे बैठना ही हमें अच्छा लगता है। आजकल बाजार उन्मुक्त है। सरकार से लेकर निजी क्षेत्र तक खुला खेल फर्रुखाबादी है। लॉटरी, शयर डिबेंचर और न जाने क्या-क्या। दूसरी चीजा का हमें ज्ञान नहीं लेकिन लॉटरी के बारे में इतना अवश्य कह सकते हैं कि रुपये-दो रुपये या ज्यादा ही जोर मारो तो दस रुपये

तक के टिकट मे लाखो के वारे न्यारे हो जाते हैं। भगवान और भाग्य मे भरोसा करने वालो के लिये यह एक 'गोल्डन चास' है। इस चास को हथियाने के लिये हम भी धार पर लग गये। मालिक का नाम लेकर लॉटरी का एक टिकट हमने खरीद लिया। भगवान भली करे। टिकट हाथ मे लेकर हमने अपने अरमानो की सूची को मन ही मन दोहराया। अरमानो की सूची मे आइटम नम्बर वन कार थी। लॉटरी के प्रथम पुरस्कार म भी कार थी। टिकट देखकर हमारा मन मयूर की तरह नाचने लगा। टिकट को तह करके हमने अपने बटुए मे रख लिया।

हमने अपनी बेगम को बताया कि लॉटरी का टिकट तो ले लिया है लेकिन कुछ टोटका करो। हम और 'वो' रात-दिन लॉटरी का प्रथम पुरस्कार खुलने के लिये आराधना म लीन हो गये। अब तो सपने भी कार मे सैर करने के आने लगे। देश का लगभग हर पर्यटन स्थल आखों मे उतरने लगा। सपनो के इस ससार मे हम कभी कार विक्रेता के शो-रूम मे विभिन्न रगो और डिजाइनो की कारो को देखने, पसन्द करने, रिजेक्ट करने लगे तो, कभी चलती कार मे सेल्यूलर से बात करने, गुलाम अली या मेहदी हसन की गजल तो कभी बेगम अख्तर की ठुमरी का कैसेट लगाने या 'यारा ओ यारा' सुनन अथवा चौपाटी पर नारियल पानी पीने लगते। लॉटरी का टिकट क्या लिया, बस यू समझो कि हमारी दुनिया ही बदल गई। साचने का ढग बदल गया, चलने-फिरने का अदाज बदल गया, कपडे पहनने का तौर-तरीका बदल गया, रगो की च्वाइस चंज हो गयी। सपनो के इस सुनहरे ससार म हम ही हम थे। दुनिया बहुत छोटी दिखाई देने लगी। हमने टिकट का नम्बर अपनी रात-दिन काम आन वाली छोटी डायरी मे नोट कर लिया ताकि बार-बार टिकट निकालने की जहमत न करनी पडे। टिकट बटुए में सुरक्षित ही था।

आखिर वह दिन आ ही गया जिस दिन लॉटरी टिकट का परिणाम घोषित होना था। हमने दुगने भक्ति भाव से मालिक की आराधना की। लॉटरी के टिकट को बटुए की कैद से आजाद कर उसकी लोबान-बत्ती करने की मशा हुई तो देखते क्या हैं कि जनाब, हमारा बटुआ ही गायब है। हमारे होश गुम हो गये। हा वह डायरी जरूर मौजूद थी जिमें लॉटरी टिकट के नम्बर दर्ज थे। अखबार मगवाया और अपने नोट किए नम्बर को मिलाया।

आख अखबार पर उस समय टिकी की टिकी रह गई जब प्रथम पुरस्कार के टिकट का नम्बर हमारे टिकट के नम्बर से हूबहू मिल रहा था। हमे अपनी आखो पर यकीन नहीं हो रहा था। दिमाग मे यह नम्बर ऐसा फिट बैठा कि अब तो सारे नम्बर एक जैसे लगने लगे। आखे जवाब देने लगीं तो हमने बेगम को बुलाया। हमने उनसे कहा - 'बेगम, जरा देखो तो, अपनी लॉटरी का टिकट नम्बर छपा या मुझे ही भ्रम

हो गया है।' बेगम उतावली हो रही थी। कभी वह टिकट का नम्बर देखती तो कभी अखबार मे छपा नम्बर पढती। वह अचानक जोर से उछली मानो बिच्छू ने डक मार दिया हो। हमने पूछा – 'बेगम, कुछ बोलो भी तो।' वह उछलती-कूदती ही बोली – 'अजी कमाल हो गया, अपना भाग्य का सितारा बुलन्द हो गया। कहती न थी कि अपना भाग्य गजराज जैसा भारी भरकम है। अपनी कार आज ही ले आओ ताकि मैं भी मौहल्ले वालो की छाती पर मूग दल सकू।'

हमने नीली छतरी वाले का शुक्रिया अदा किया। उसने कार का मालिक बनाने का अरमान पूरा करने के लिये आखिर हमारा खाता खोल ही दिया। कार चलाना हमे आता नहीं था इसलिये लॉटरी से जीती हुई कार लाने के लिये हमने बाबू भाई मिस्त्री से सम्पर्क किया। उन्हे लेकर हम लॉटरी के दफ्तर पहुचे। हमने सीना तानकर वह डायरी आगे कर दी जिसमे टिकट का नम्बर का नोट किया हुआ था। उसने पहले हमे ऊपर से नीचे तक देखा और टिकट प्रस्तुत करने को कहा। हमने भी कह दिया कि टिकट दफ्तर म रखा है उसकी आप चिता न करे। आदमी भला था इसलिये उसने कोई लगडी नहीं लगाई और अपनी रिजल्ट शीट से हमारे टिकट का नम्बर मिलान किया। मिलान के बाद उसने कहा – 'कॉंग्रेच्युलेशन।' हमने रौब से बताया – जी, हमे नफासत अली 'खुशदिल' कहते हैं। पुरातत्व विभाग मे हम हैड क्लर्क हैं जी। आपके लॉटरी विभाग ने तो हमारी तकदीर ही बदल दी है। एक्सपर्ट ड्राइवर को साथ लेकर आये हैं जी। कार की शक्ल तो दिखा दो जी है कहा हमारे सपनों की रानी।

लॉटरी ऑफीसर के पास बैठे लोगो मे से एक सज्जन बोले- 'हा तो खुशदिल जी, हमारी बधाई भी ले लीजिये।' हमने सोचा कि इसमें बुरा क्या है। कोई बधाई ही दे रहा है बद्दुआ तो नहीं। हमन यू ही कह दिया- 'बधाई सर आखा पर लेकिन आपको पहचाना नहीं।' वे सज्जन कहने लगे- 'आज से ही जान जायेगे। आपसे नया-नया रिश्ता जोड रहे हैं। भगवान ने चाहा तो यह रिश्ता आगे भी बना रहेगा। वैसे हम आयकर विभाग से हैं और आज यहा इसीलिये आये थे कि प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने वाले भाग्यशाली विजेता को बधाई भी दे दे और लखपति बन जाने का शगुन भी वसूल कर लें। आप रकम तो लाये ही होगे। हम तो सिर्फ टैक्स रूपी सगुन चुका दीजिये और शौक से अपनी कार ले जाइये।

सिर मुण्डवाते ही ओले पडे। यह कहावत शायद ऐसे ही अवसरा के लिय गढी गई है। हे मालिक! यह कैसी परीक्षा ले रहा है तू। इधर बटुआ ही गायब है। यह बटुआ जरूर कल दफ्तर में रह गया है। हमने ऊपर वाले से प्रार्थना की कि वह खोए हुए बटुए को मिला दे और हमारी तकदीर सवार दे। हमने नेताओं की तरह आयकर अधिकारी को आश्वासन दिया कि टैक्स की रकम और टिकट लेकर जल्दी ही लौटेंगे।

इस बीच बाबू भाई मिस्त्री का दिमाग फिर गया- 'अमा यार, पढे-लिखे हो, बडे बाबू हो, गोरमिट सर्वेन्ट हो टिकट और रोकडा तो लाये होते मुह लटकाते आ गये, मेरा टैम और खराब किया। मजूरी से गया वो अलग।' मिस्त्री भी ऐसा मुहफट निकला कि अफसरो के बीच मे हमारी इज्जत की किरकिरी करदी। गनीमत यह समझो कि इस उज्जड ने कुछ अबे-तबे नहीं बोला। अब ऐसे समय खून के घूट पीने के अलावा क्या चारा बचता है।

हमने सोचा कि पहले तो बटुआ खोजा जाए टैक्स चुकाने के लिये रुपया ता यार दोस्तों से मिल ही जाएगा। यह विचार करते हुए हम कधे पर झोला लटकाए दफ्तर के लिये निकल पडे। दफ्तर पहुचकर हमने बटुआ तलाशी अभियान चला दिया। हमारे इस अभियान को देखकर दफ्तर के सारे साथी इकट्ठा हो गये। दोस्त कहने लगे- 'भाईजान। ऐसी किस चीज की तलाश हो रही है कि सारा सेक्शन ही उथल-पुथल कर दिया। यार, तुम्हारी जाच ने तो सी बी आई के छापे को भी पीछे छोड दिया।' बटुआ न पाकर हम परशान थे और यारो को चुहुल सूझ रही थी। हम जब इत्मीनान हो गया कि हमारे टेबल, अलमारी और कागज-पत्रों मे कहीं बटुआ नहीं है तो हमारा माथा भारी हो गया जैसे सौ मन का पत्थर उस पर रख दिया गया हो। अब हमारे पास इसके अलावा कोई चारा न था कि साथियो से तहकीकात की जाए। हमने उ के सामने अपना रोना रोया- 'यारो, हमारा बटुआ कल कहीं खो गया है जिसम एक लॉटरी का टिकट था। उसी लॉटरी टिकट के नम्बर पर प्रथम पुरस्कार निकला है। आप लोगा मे से किसी को मिला हो नो बता दीजिये और मजाक मत कीजिये प्लीज। मैं पेटभर मिठाई खिलाऊगा। सबको दावत दूगा।'

यारो ने फिर चुहुल की- 'अमा यार, टिकट बेगम को सभलवा देते तो क्या वह प्रथम पुरस्कार की कार अपने पीहर भिजवा देती जो आपने टिकट बटुए म खोसे रखा था। किसी पॉकिटमार की नजर लग गई होगी। किसी पर शक हो तो थाने म रपट लिखा दो। हमको अन्दर करवा दो।

हम गिडगिडाए- 'यारो ऐसी बात नहीं है। ढूढने में थोडी मदद करो न मैं बहुत दु खी हू। इस तरह मेरा दिल क्यो जलाते हो। मुझे जो भी बटुआ ढूढकर देगा मैं उसके पैरो पड जाऊगा। दण्ड पेल लूगा, कहोगे ता मुर्गा बन जाऊगा।' हमारा रिरियाना फिर भी कोई काम नहीं आया। दिन भर हम बटुए की याद म तडफ गये लकिन बटुआ नहीं मिला। साथिया को भी वास्तव म हमारे भाग्यशाली बटुए के दुर्भाग्यशाली होने का रज था। उन्होन बकायदा शोकसभा करके सवेदना व्यक्त की। दफ्तर का वक्त खत्म हुआ तो हम उदास सा चेहरा लिये घर लौटे। हमने बेगम से कहा- 'दफ्तर म बटुआ नहीं मिला तुम जरा घर पर तलाश करो। शायद यहीं-कहीं रह गया हो।' यह कहते

ही बेगम अपने मुह से आग बरसाने लगी– 'तुमने हम पर विश्वास ही कब किया। अरे खाली तिजोरी मे तुम्हारा यह टिकट पडा रहता तो क्या तिजोरी खा जाती उसे। लेकिन तुम सीने से चिपकाए घूमते–फिरते थे। कभी अपनी एक औलाद को भी इस तरह सीने से लगाकर नहीं रखा लेकिन यह टिकट तुम्हारा ईमान और तुम्हारा खुदा बन गया था। अब बताओ मैं उसे कहा तलाश करू। पूरा घर सुबह से शाम तक मैं इस टिकट का ढूढने में पहले ही औंधा कर चुकी हू। यह पडा घर, अब तुम ही ढूढ लो।'

मन मारकर हमने भी घर का कोना–कोना छान मारा लेकिन न बटुआ मिला न टिकट ही कहीं दिखाई दिया। दिल बैचेन था। अपने भाग्य पर हमे रोना आ गया। अपनी छाती पीटने और तन पर ढके कपडे फाडने को मन किया। सोचा कि सथारा ले ले। इसी उधेडबुन मे हम पलग पर बिना कुछ खाए ही लेट गये। पता नहीं कब आख लगी।

देखते क्या हैं कि घोर निराशा के बीच बोर होकर हमने हथियार डाल दिये और बेगम से कह रहे हैं– 'अब तुम ही कुछ करो।' बेगम बिफर गई– 'मर्द होकर औरतो के आगे हथियार डालते हो। मेरी दुआओं से तो यह दिन नसीब हुआ और तुम इतना भी जुगाड नहीं कर सकते तो चुल्लू भर ।' हमे गुस्सा आ गया– 'देखो बेगम ये चुल्लू भर पानी की बात न करो।' वह गुर्राई– 'तो फिर कुछ करो, हाथ पर हाथ धरे बैठने से क्या होगा? मैं तो सारे मुहल्ले मे कार का ढिढोरा पीट चुकी हू। अपना वो स्टेटस सिम्बल बढेगा तब कितने लोग जल–भुन जायेगे, इसकी कल्पना करके तो देखो। दिल गार्डन–गार्डन न हो जायेगा।' बेगम ने लगभग हमे हडका और भडका दिया। इससे दिमाग का कम्प्यूटर तेजी से चलने लगा।

अचानक एक आइडिया दिमाग म कौंधा। 'सुनो बगम, बुरा न मानना, अपना यह मकान गिरवी रख देत हैं। स्टेटस सिम्बल होगा तो लोग मुह मागा कर्जा दे देगे। मकान का क्या उसे फुरसत मे छुडवा लेगे।' बेगम का मूड ठीक था। आइडिया उसे जच गया और तुरन्त हा कर दी। कहने लगी– 'तुम अभी सेठ सतोमल से बात करो। मेरी सहेलिया कहती हैं कि ये कगले क्या कार लाएगे। मिया तो साइकिल का पक्चर निकलवाने के लिये उधार मागता फिरता है। तुम इनका मुह बद करो। कगाली मे आटा गीला होता है तो होने दो। उधार की कौन सी मा मरती है। मर–तुडकर कर्ज चुका ही देगे।'

बेगम को अनुकूल देखकर हमने गर्म लोहे पर जमकर चोट की– 'बेगम तुम ठीक कहती हो। घर का पट्टा निकालो। पहले तो आयकर वालो का मुह बद करके आता हू और फिर तुम इन मोहल्ले वालो का मुह बद कर अपनी दबी हुई हसरत पूरी करो।' सतामल ने कागज उलट–पलट कर देखे और तिजोरी मे रखने के बाद एक

स्टाम्प पेपर पर हमारे हस्ताक्षर की चिड़िया बिठाई। नोटो की गड्डी हाथ मे थमाई और हमे उधार की गाडी पर बिठा दिया।

हमने नोटो का बडल काख म दबाया और आयकर चुकाया। कार की चाबी हाथ मे आने के बाद हम इतने पुलकित थे कि जैसे कारू का खजाना मिल गया हो। दुनिया की सारी खुशिया जैसे हमारी झोली में सिमट आई। हम सोचने लगे कि अब अगर पैदल चले तो पाव गन्दे हो जायेंगे। कार जब हमारे गरीबखाने के बारह आकर खडी हुई तो बेगम ने कार को फूलों से ऐसे सजाया गाया वह कार नहीं दुल्हन हो और गृह प्रवेश के लिये दहलीज पर खडी हो। मोहल्ले भर म मिठाई बाटी गई। कार क्या आई जैसे बहार आ गई। बधाई देने वालो का ताता लग गया। हमसे टेढे-मेढे चलने वाले भी तार की तरह सीधे हो गये और हमे 'सरकार-सरकार' कहकर सम्मान देने लगे। चतुर्दिक हमारी कार की धूम मच गई। हम और हमारी कार दोनों ही चर्चा क कन्द्र बन गये।

हमारे दफ्तर की मिस कुलकर्णी डिनर की फरमाइश कर रही थी तो रूपेश बाबू लव की डिमाड कर रहे थे। रामदीन बख्शीश मे सफारी सूट माग रहा था। बडे बाबू ने मुह में लड्डू ठूसते हुए मशविरा दिया- 'मिया, अब तो दो टके की नौकरी छोडो। कार है तो सरकार वालो की तरह रहो। दुनिया देखो और ऐश करो। हमे भी शिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग और ऊटी की सैर कराओ यार।'

हम मन ही मन कुढने लगे। गाव अभी बसा नहीं और कगले आ गये मागने। मुफ्त की सलाह दने वालों की जबान कैंची की तरह चल रही थी। माया रतनानी ने एक और सलाह दी- 'भाई साहब, महगाई आसमान छू रही है। पेट्रोल क दाम और बढेंगे। बेहतर होगा कि कार को अपने दफ्तर या किसी बडी कपनी म काट्रेक्ट पर चढा दो। खर्चा निकल जायेगा। जब जरूरत हो मटीनेस का बहाना बनाकर मगवा लिया करो।'

राजन्द्र पिलै को यह बात कुछ जची नहीं। उन्हाने कहा- 'अरे भाई अपुन के यार ठहरे खानदानी रईस और कारू का खजाना है सो अलग। छुपे रुस्तम हैं हमारे मिया। यह तो शौक से नौकरी करते हैं वरना हम जैसे कई गोधो को नौकरी दे सकते हैं।' पिलै की बात पूरी भी नहीं हुई कि बडे साहब का ड्राइवर बोला- 'साहब जी, मैं तो दफ्तर से उकता गया हू। दिन को चैन न रात को आराम। आप कहे तो मैं वालटरी रिटायरमेट ले लू। ड्राइवर, खलासी चौकीदार सब कुछ बनकर आपकी सेवा करूगा।' इधर हम थे कि अपनी असलियत पर पर्दा डाले कानों में बिना रुई डाले ही सब कुछ सुन रहे थे। मित्रा की बाते सुनकर खोपडी गरम होने लगी थी। मित्र थे कि बातो की बन्दूक चला कर हमे धडाधड घायल कर रहे थे। कहते हैं न

कि गारे और रोने भी न दे। कम्बख्तों को कहा से हम खानदानी रईस नजर आये और कहा उन्हें हमारे पास छुपा कारु का खजाना दिख गया ये ही जानें।

सपनों का सूरज दिन भर की चाकरी पूरी करके विदा ले चुका था। काली अंधियारी रात घिर आई। इसके साथ ही हमारी चिन्ता बढी कि कार की कैसे हिफाजत की जाए। बेगम को ही एक तरकीब सूझी। इसके मुताबिक छुटकू को कार मे सुला दिया गया। छुटकू को सुलाकर हम सब भी सो गये। रात कोई तीन बजे पुलिस वाले ने कार को घेर लिया। छुटकू को भीतर सोते देख उसे जगा कर हडकाया 'बच्चू, चोरी करने घुसा है क्या इस कार मे? एक जोरदार घुडकी दी- 'चल चाट्टे, बाहर निकल।' छुटकू सहम गया था लेकिन हिम्मत बटोर कर उसने जवाब दिया था- 'यह हमारी कार है। पापा को आज ही लॉटरी मे मिली है।'

हैड कान्स्टेबल हमसे मुखातिब था- 'ये कार आपकी है?' हमने 'हा' कहा। 'ये छोकरा कहा से आया?' उन्होंने दूसरा सवाल दागा। हमने उन्हें सतुष्ट करने की मुद्रा में कहा- 'महरबान, यह मेरा बेटा है।' वर्दीधारी थोडा काइया था। वह कहने लगा- 'लगता तो नहीं कि यह आपका बेटा है। हम तो चाइल्ड लेबर दिखता है। इसके फटीचर कपडो से तो यह किसी कार मालिक का लडका नहीं हो सकता। आप जानते नहीं बच्चो का इस तरह तग करना गैर कानूनी है और इस जुर्म में आप अन्दर हो सकते हैं।' हमने फिर समझाया- 'हुजूर, यह हमारा बेटा है छुटकू, कोई चाइल्ड लेबर नहीं है। इसे हमने कार की हिफाजत के लिये यहा सुलाया था।' खडकसिह अडा रहा- 'हम कुछ नहीं जानते। आप सुबह सबूत लेकर थाने आना कि यह आपका बेटा है। तब तक यह बच्चा हमारी हिफाजत मे रहेगा।' यह कहकर वे छुटकू को साथ लिए चल दिये।

इधर छुटकू की मा का रो-रोकर बुरा हाल था तो उधर इस हो-हल्ले के कारण कई पडोसी जागकर बिना किसी पटकथा के खेले गये नाटक का नजारा देख रहे थे। पुलिस की मौजूदगी मे तो किसी की जुबान नहीं खुली लेकिन ज्योहि जीप ने गली पार की त्याहि जगदीश उर्फ जग्गू कबाडी की जुबान कैंची की तरह चलने लगी। वह जग्गू की मुद्रा मे आ गया और कहने लगा- 'ओ मिस्टर यह क्या धमाल मचा रखा है। नई कार की धौंस मे सारे मोहल्ले की नींद हराम करके रख दी है। सुबह इस टडीरे को यहा से हटा लेना अन्यथा हमसे बुरा कोई न होगा।' जग्गू के पेट मे जो गुडगुडाहट हो रही थी उसका राज हम भली-भाति जानते थे। पक्का जुआरी और लॉटरीबाज टिकट खरीद-खरीदकर भुक्खड हो गया लेकिन कभी एक रुपये का भी इनाम नहीं खुला। हमारे यहा कार क्या आई उधर इसके सीने पर साप लोटने लगे।

सवेरे-सवेरे इधर लोग पूजा-पाठ नमाज-अरदास मे जुटे थे और उधर हम छुटकू

के स्कूल का प्रमाण पत्र ढूढने मे उलझे हुए थे। कुछ ही देर मे प्रमाण-पत्र मिल गया तो हमारी आखो मे चमक आ गई जैसे किसी इच्छाधारी सर्प की मणि मिल गई हो। हमने बेगम को सात्वना दी कि अब चिता मत करो। अभी थाने जाकर छुटकू को चुटकी बजाते हुए लेकर आते हैं। थाने मे श्मशान सा सन्नाटा था। सतरी दीवार से अपना शरीर टिकाये ऊघ रहा था। बाहर एक चारपाई पर थानेदारजी नाइट ड्यूटी बजाकर खर्राटे भर रहे थे। हमने सतरी से कहा- 'भाई साहब, जरा थानेदारजी को जगा दीजिये ताकि हम अपने छुटकू को घर ले जाये।' सतरी ने पुट्ठे पर हाथ न रखने देने की शायद सौगन्ध खा रखी थी। वह बोला- 'हटो यहा से, देख नहीं रहे कि सब सो रहे हैं। यह थाना है कि खाला जी का घर जो चौबीसो घण्टे तुम जैसे आलतू-फालतू लोगो की हाजिरी मे खडा रहे।' हम महसूस हुआ कि सतरी से सत जैसी उम्मीद करके हमने ही गलती की थी। हम अपनी मुडी को धरती की सीध मे झुकाकर वहीं एक तरफ शराफत से खडे हो गये। कुछ देर बाद थानेदारजी ने जम्हाई ली और उठकर भीतर चले गये। हम अपराधी की भाति हाथ जोडे खडे थे लेकिन थानेदारजी ने आख उठाकर भी हमे नहीं देखा। इस बीच रात पाली वाले हैड साहब आकर धम्म से कुर्सी पर बैठे। हम फरियाद लेकर उनके सम्मुख जा पहुचे और छुटकू का प्रमाण-पत्र दिखलाया। हमने यकीन दिलवाने की भरसक कोशिश की कि छुटकू हमारा बेटा है। हमने अपना आइडेटिटी कौर्ड भी उनके सामने रख दिया ताकि वे पूरी तसल्ली कर ल।

हैड साहब ने सूक्ष्म मुआयना करने के बाद अपना पुलिसिया तेवर दिखाया- 'यह तो सब ठीक है जनाब, लेकिन इसका बर्थ सर्टिफिकेट कहा हैं?' यह सुनकर हमारे पैरो क नीचे से धरती खिसक गई। हमने तर्क दिया- 'स्कूल सर्टिफिकेट और मेरा आइडेटिटी कार्ड सबूत के लिये काफी है। बर्थ सर्टिफिकेट अभी तक म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन से लिया नहीं है।'

'अच्छा हमे ही सिखा रहे हो। बर्थ सर्टिफिकेट लाइये वरना जाइये कुछ नहीं होगा।' हैड साहब ने टका सा जवाब दे दिया। इतने म थानदारजी प्रकट हुए तो हम रिरियाए। लेकिन वे भी कहने लगे- 'कानून भी कोई चीज है कि नहीं। हम यहा कानून और आपकी सेवा के लिये बैठे हैं या आपकी बाते सुनने। आप खाना पूर्ति कर दीजिये, हम बच्चे को छोड देगे। हमने कोई अनाथ आश्रम थोडे ही खोल रखा है जो बच्चा यहा मुफ्त की रोटिया तोडता रहेगा या हमें कोई बच्चा गोद लेना है जा आप इतनी बात कह रहे हैं। जाइये हमारा और अपना वक्त बर्बाद मत कीजिये। अभी हमें कई देवताओ को पूजा करनी है।'

थानेदार का जवाब सुनकर हम बेरग ही घर की ओर लौट पडे। रास्त में सोचने लगे कि दो जोडी जूते कॉर्पोरेशन से प्रमाण-पत्र लेने म घिस दिय। एक जोडी यदि

और घिस लेते तो आज काम आसान हो जाता। चौबेजी बनकर थाने गये थे दुब्वेजी बनकर लौट रहे हैं। अक्ल के ताले की चाबी जैसे कहीं कुए मे गिर गई थी। घर पहुचे तो बेगम ने कसकर ताना मारा- 'आ गये न मुह लटकाकर, कार वाले बनते हो। अरे तुम्हारी जगह कोई दूसरा कार वाला होता तो ये पुलिसिए तलुए चाटते। एक आप हैं, एक दम निखट्टू। काम के न काज के दुश्मन अनाज के। मौहल्ले के चार मोतबिर लोगो म भी थानेदार तुम्हारी गिनती नहीं करता और तुम तुर्रम खा बने घूमते हो। अब खडे-खडे मुह क्या ताक रह हा। जाओ शमाजी कल्लन मिया, मालती वमा और श्याम चतुर्वेदी को लेकर वापस माथा मारो। तुम से होगा या मैं जाऊ इन लोगो को लेने।'

बेगम की दमदार फटकार सुनकर हम मोतबिर लोगो को साथ ले फिर थाने पहुच गये। थानेदार जी ने हम छोड कर सबसे हाथ मिलाया। इन बे-कार वालो के सामने यह कार वाला नाकारा साबित हो रहा था। शर्माजी ने थानेदार से कहा- 'हम जानते हैं सर, छुटकू इन्हीं का लडका है। हम सब यही अर्ज लेकर आपके दरबार मे हाजिर हुए हैं।'। थानेदारजी ने प्रत्युत्तर मे कहा- 'हम भी जानते हैं यह बात लेकिन बातो से कागज का पेटा नहीं भरता शर्मा जी।' शर्माजी ने कहा- 'सर, हम आपकी बात भी समझते हैं लेकिन आप कुछ करिये ना। भाई साहब बहुत भले आदमी हैं।' थानेदारजी ने कहा- 'आपको यह अकेले ही भले आदमी दिखते हैं। हम भले नहीं हैं क्या। आप लोग आये हैं तो कुछ करना ही पडेगा। छुटकू को अभी छोड देते हैं। आप इन साहब को थाने के कायदे-कानून तो जरा ठीक से समझा दीजिये। हम भी मजबूर हैं। आजकल माहौल थोडा गर्म है। हमे भी गर्म होना पडता है। आप तो जानते ही हैं। ह-हे-ह।'

थानेदारजी ने छुटकू को अपने पास बुलाया, पुचकारा और प्यार से सिर पर हाथ फेरा। भीतर से गरम दूध का गिलास और बिस्कुट का एक पैकेट मगवाकर उसे दिया। हम थानेदारजी की सवेदनशीलता देखकर दग रह गये। कुछ भी कहिये है तो आखिर इसान ही। कितना प्यार किया छुटकू को। हमे उसकी मा का प्यार भी इसके आगे फीका लगने लगा। छुटकू को घर ले आये। शमाजी घर तक साथ आये और प्यार मे हमे एक बात परोस दी-'भाई जान, थानेदारजी को नरम तो हमने कर दिया लेकिन उनकी मुट्ठी आप गरम कर दीजिए। रात-दिन मौहल्ले की सेवा करते हैं। अपना भी कुछ फर्ज बनता है कि नहीं। आगे भी कोई ऊच-नीच होगी तो दौडकर काम करेगे।' हम शर्मा जी की बात ठीक से समझ गये।

अब हम अपनी कार से चौपाटी की सैर इडिया गेट कश्मीर और शिमला की वादिया जयपुर के हवामहल और आगरा के ताज महल की सैर पर थे।

'अजी, आज उठोगे कि नहीं देखो सूरज कहा से कहा निकल आया है। आपने

रात का खाना भी नहीं खाया। पागलो की तरह बडबडा रहे थे। कभी सतोमल तो, कभी कार-कार चिल्ला रहे थे। कभी दफ्तर वालो से बतिया रहे थे और कभी थानेदार के सामने रिरिया रहे थे। लगता है जनाब सपनो म आसमान की ओर उड रहे थे।' बेगम ने झिझोडकर उठाया तो हमारे सामने हमेशा की तरह काटता हुआ वही घर था। डाटती-दहाडती बेगम थी। नहीं था तो बटुआ और लॉटरी का टिकट नहीं था। आखो मे आसुओ का समदर था। होठो पर बार-बार बस यही एक गीत था- 'दिल के अरमा आसुओ मे बह गये।' ❑